हिन्दी यू. एस. ए. की त्रैमासिक ई पत्रिका

कर्मभूमि

वर्ष 3, अंक 9, मई 2010

नवम् हिन्दी महोत्सव विशेषांक

LET US MAKE YOUR MOST MEMORABLE EVENT *Sparkle*

Welcome to Holiday Inn Hotel

a 184 room *full service* hotel.
You will find comfort and modern luxury at one of the most convenient locations in Edison
Contemporary hospitality and Edison excitement are waiting for you
For your meeting requirements we have conference space available comprised of 8 rooms of various capacities totaling over 17,000 sq. ft. of flexible meeting space which can accommodate anything from Baby Showers, Weddings, Corporate Events, to Concerts
Complimentary High-Speed Internet
Business Center & Fitness Center open 24 hours
On-Site Ayurvedic Spa
Harold's New York Deli Restaurant serving
Breakfast, Lunch and Dinner
Polo Lounge open evenings
Complimentary Parking for all size vehicles

Holiday Inn HOTELS · RESORTS

Holiday Inn Hotel & Conference Center

3050 Woodbridge Ave
Edison NJ
732-661-1000
www.holiday-inn.com/hiedisonnj

इस अंक में

कर्मभूमि

५ >> हिन्दी यू.एस.ए। की कहानी - देवेन्द्र सिंह
६ >> आपका स्वागत है - भूपेन्द्र मौर्य
७ >> महोत्सव के कवियों का परिचय
९ >> हिन्दी भवन
११ >> एक ही सिक्के के दो पहलू - भाषा और संस्कृति - रचिता सिंह
१३ >> कविता पाठ २०१० - अर्चना कुमार
१६ >> आपके सवाल और हिन्दी यू.एस.ए. के जवाब
१८ >> हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति- दिलीप द्विवेदी
२१ >> हनुमान चालीसा भावार्थ - अर्चना कुमार
२३ >> माणक काबरा जी स्वयंसेवक सेवाओं हेतु सम्मानित
२४ >> हिन्दी वयस्क कक्षा की छात्रा के संस्मरण - राज मित्तल
२६ >> दिग्विजय म्यूर: एक समर्थ कार्यकर्ता एवं एक कुशल कलाकार
२९ >> पाठशालाओं के अनुभव -एक परिचर्चा - रचिता सिंह
३३ >> मॉन्टगोमरी हिन्दी पाठशाला
३५ >> हिन्दी पाठशालाओं का आंकलन
३६ >> कविता प्रतियोगिता २०१० के सेमीफाईनल विजेताओं के चित्र
३८ >> पाठशालाओं की शिक्षिकाओं, शिक्षकों और कार्यकर्ताओं के चित्र
४२ >> कोलाज :एक अनूठी प्रतिभा
४३ >> कनेक्टिकट की हिन्दी पाठशाला का प्रथम वर्ष – प्रथम प्रयास
४५ >> मेरे अनुभव - नूतन लाल
४७ >> मैं हिन्दी बोल रही हूँ - स्मृति जोशी
४८ >> कविता: चरैवेति, चरैवेति - ब्रज राज किशोर
४९ >> कैसे सिखाएँ हिन्दी - माधवी मिश्र
५० >> पार्थ परिहार से बातचीत
५३ >> कविता: क्यों? - श्री सूर्य दत्त दुबे
५४ >> कविता: हिन्दी बोलो - मोनिका मिर्ग
५४ >> कविता: अमृतधारा - धनंजय निचकवड़े
५५ >> कविता: बड़ा ही महत्व है - ज्योति गुप्ता
५६ >> कविता: थोड़ी सी अंग्रेजी पढ़ ली, गुब्बारे से फूल गए - श्यामल मजूमदार
५७ >> कविता: राही - अनामिका सिंह
५८ >> हिन्दी भाषा - आदित्य काबरा
५९ >> हिन्दी ज्ञान की आवश्यकता - आदित्य कुमार
६० >> दीदी की सीख- प्राची परिहार
६१ >> कहानी - अम्माँ सबकी प्यारी अम्माँ - प्राची परिहार
६२ >> मेरी अब तक की हिन्दी की यात्रा - संजना मेहता
६३ >> रामायण की पहेलियाँ - रचिता सिंह
६४ >> कविता: रावण -दहन -- दीपक अग्रवाल
६५ >> कहानी: जीत की मिठास – श्वेता सीकरी
६७ >> जब देखने जाएँ किसी बीमार व्यक्ति को - राज मित्तल
६९ >> रेकी - ऊर्जा चिकित्सा – मीना राठी
७० >> थाई रसेदार सब्जी - मंजू मौर्य
७१ >> ध्यान की ऊष्मा - डॉ.मृदुल कीर्ति
७४ >> हिन्दी पाठशालाओं की सूची

संरक्षक — देवेन्द्र सिंह
सम्पादक — भूपेन्द्र मौर्य
सम्पादन सहयोग — अर्चना कुमार
राज मित्तल
माणक काबरा
मुख्य पृष्ठ — बाबा मौर्य
संयोजन सहयोग — मंजू मौर्य

आपकी प्रतिक्रियायें और सुझाव हमें अवश्य भेजें

हमें विपत्र इस पते पर लिखें

karmbhoomi@HindiUSA .org

या डाक निम्न पते पर भेजें :

HindiUSA

३ Quay Circle

Sewell NJ

के प्रमुख उद्देश्य

हिन्दी यू.एस.ए. पिछले आठ वर्षों से निम्न उद्देश्यों की पूर्ति में संलग्न है।

१. हिन्दी यू.एस.ए. का मुख्य उद्देश्य अमेरिका के स्कूलों में हिन्दी को एक ऐच्छिक भाषा के रूप में स्थापित करना है।

२. अमेरिका के स्कूलों में पढ़ने के लिए प्रशिक्षित शिक्षिकों को तैयार करना।

३. अमेरिका में जन्मी प्रवासी पीढ़ी को हिन्दी का बुनियादी ज्ञान देना। इसके लिए हिन्दी यू.एस.ए. निम्न कार्य कर रहा है:

- अमेरिका तथा कैनेडा के विभिन्न राज्यों में हिन्दी पाठशालाओं की स्थापना करना। विभिन्न स्तरों का पाठ्यक्रम तैयार करना।
- शिक्षकों को स्तरों के अनुसार प्रशिक्षित करना।
- हिन्दी पुस्तकों का प्रकाशन तथा चयन करना जो कि विदेशी बच्चों के लिए उपयोगी हो सकें।
- प्रतिवर्ष मौखिक तथा लिखित परीक्षा का आयोजन करना।
- प्रोत्साहन के लिए बच्चों को पदक प्रदान करना।

४. हिन्दी के प्रति जन मानस की जागरुकता को बढ़ाना तथा आने वाली पीढ़ी के हृदय में हिन्दी के प्रति प्रेम जागृत करना – इसके लिए हिन्दी यू.एस.ए.:

- प्रतिवर्ष हिन्दी महोत्सव का आयोजन करता है, जिसमें १५०० से अधिक बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं तथा नृत्यों में भाग लेते हैं।
- भारत से कवियों को आमंत्रित कर हिन्दी साहित्य को मनोरंजन, शिक्षा, और हिन्दी प्रेम से जोड़ना। हिन्दी महोत्सव द्वारा विभिन्न प्रांत के लोगों को आपस में जोड़ना।
- पुस्तकों की प्रदर्शनी द्वारा हिन्दी साहित्य तथा लेखन का प्रचार करना। हिन्दी सीखने व अभ्यास करने की सामग्री उपलब्ध कराना।
- प्रतिवर्ष प्रवासी कवियों को प्रोत्साहन एवं सम्मान देने हेतु " स्थानीय कवि सम्मेलन" को हिन्दी दिवस के रूप में मनाना।

५. भारतीय बाजारों में दुकानों के नामों को हिन्दी में लिखवा कर भारतीयों में हीन भावना को निकाल कर अपनी भाषा के प्रति गर्व का रोपण करना।

६. भाषा के प्रति जागरूकता, लेखन के प्रति सक्रियता, काव्य के प्रति रचनात्मकता को जीवित रखने तथा हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थियों को लेखन के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हिन्दी यू.एस.ए. ने ई-पत्रिका "कर्मभूमि" का शुभारंभ किया है।

इन उद्देश्यों की पूर्ति आपके सहयोग के बिना असंभव है।

देवेन्द्र जी हिन्दी यू.एस.ए. की नींव के पत्थर हैं। इनकी दूर दृष्टि, कर्मठता और सूझबूझ के बिना अमेरिका में हिन्दी की दशा शायद बुरी होती। पिछले कुछ वर्षों के बीच संगठन में जो उतार चढ़ाव हमने देखे हैं उससे एक बात साफ है कि ज्यादातर लोगों को वह क्षितिज अभी भी धुँधला दिखाई देता है जिसकी स्पष्ट छवि देवेन्द्र जी के मस्तिष्क में है। आइए हम सब इस युग परिवर्तक से प्रेरणा लें और इस कार्य में जुड़ जाएँ।

हिन्दी यू.एस.ए. की कहानी

लगभग १० वर्ष पूर्व कुछ दूरदर्शी समाजसेवियों ने हिन्दी भाषा को न्यू जर्सी तथा अन्य क्षेत्रों में प्रसारित एवं प्रचारित करने का विचार किया। इन कार्यकर्ताओं को लगा कि हिन्दी के उत्थान से भारतीय संस्कृति को युवा पीढ़ी में स्थानांतरित करने में सहायता मिलेगी। परंतु यह कार्य एक मटके की तलहटी में बचे हुए चंद घूँट पानी को ऊपर लाने जैसा कठिन था। इन कार्यकर्ताओं ने धैर्य और संयम से काम लेते हुए एक चतुर कौए की तरह छोटे-छोटे कंकड़ लाकर मटके में डालना प्रारंभ कर दिया। वर्तमान काल के हिन्दी यू.एस.ए. की प्रतिष्ठा और विकास उन कार्यकर्ताओं की मेहनत का परिणाम है, जो यह जानते हैं कि आम के वृक्षों में फल आने में समय लगता है।

आज की नई पीढ़ी को यह अनुभव और ज्ञान सिखाने की सख्त आवश्यकता है, क्योंकि यह पीढ़ी तो यह चाहेगी कि झट से एक पत्थर से मटके को फोड़ कर पानी निकाल ले। परंतु उसे यह नहीं मालूम कि ऐसा करने से मटका भी टूट जाएगा, और पानी भी बह जाएगा।

हिन्दी यू.एस.ए. एक आध्यात्मिक संस्था है, जो स्वार्थहीन सेवा कार्य को मंदिर में बैठ कर पूजा या भजन करने से भी अधिक महत्वपूर्ण कार्य मानती है। इस संस्था के कार्यकर्ता हिन्दी के कार्यों को यथाशक्ति और समर्पित भाव से पूरा करने का प्रयास करते हैं। अपनी मेहनत के अंतिम परिणाम की अनावश्यक चिंता न करते हुए केवल अपने कर्तव्य को अच्छी तरह से निभाने की चेष्टा करते हैं। जिस तरह से एक चिड़िया ने जंगल में लगी हुई आग को अपनी चोंच से पानी ला-ला कर बुझाने का सकारात्मक प्रयास किया था, उसी प्रकार हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ता अपनी संस्कृति को बचाने में अपना योगदान दे रहे हैं। जब अमेरिका में हिन्दी के उत्थान का इतिहास लिखा जाएगा, तब हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ताओं की भूमिका का उल्लेख सुनहरे अक्षरों में होगा।

हमारे पूर्वजों ने चरित्र निर्माण, धैर्य, निष्ठा, एवं सच्चाई की सीख हमें अपने व्यक्तिगत उदाहरणों से दी है। पन्ना धाय का अपने बेटे का बलिदान और माँ कुंती का अपने बच्चों को अभावों में भी पालने के उदाहरण और किसी संस्कृति में नहीं मिलेंगे। जहाँ नैतिकता और निष्काम कार्य करने की चाहत में दृढ़ता रहेगी, भगवान उसी व्यक्ति या संस्था के साथ रहेंगे।

मैं समाज के सभी लोगों से अनुरोध करता हूँ कि वे हिन्दी के प्रचार-प्रसार में हमारे साथ जुड़ कर अपनी संस्कृति को समृद्ध करने में अपना योगदान दें। किसी भी संस्था के मूल्यों या उसकी उपयोगिता का निर्धारण उस संस्था के सिद्धांत करते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि हिन्दी यू.एस.ए. के आदर्श एवं कार्यप्रणाली एक आध्यात्मिक एवं न्यायोचित व्यवस्था पर आधारित हैं, जिसका दर्पण ३० से अधिक पाठशालाएँ, ३,००० से अधिक विद्यार्थी, और २५० से भी ज्यादा सक्षम कार्यकर्ता और शिक्षक-शिक्षिकाएँ हैं।

भूपेन्द्र मौर्य जी फ्रैन्कलिन हिन्दी पाठशाला के संचालक होने के साथ-साथ कर्मभूमि पत्रिका के संपादक भी हैं। सुलझे हुए विचारों वाले और धैर्यवान होने के कारण भूपेन्द्र जी ने अपनी पहचान एक स्थिर कार्यकर्ता के रूप में स्थापित की है। फ्रैन्कलिन हाई स्कूल में हिन्दी को एक ऐच्छिक भाषा के रूप में स्थान दिलवाने में भूपेन्द्र जी का विशेष योगदान रहा है।

नवम् महोत्सव विशेषांक में आपका स्वागत है

कर्मभूमि का यह महोत्सव विशेषांक आपके हाथों में रखते हुए बहुत आनंद हो रहा है। हमारी यात्रा का एक और पड़ाव आया है। इसी के बारे में देवेन्द्र जी का लेख "हिन्दी यू.एस.ए. की कहानी" विस्तार से बताता है। हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाएँ अब बढ़ती जा रही हैं। हमारे केन्द्रिय स्वयंसेवकों को सब को एक जगह बुलाकर कोई कार्यक्रम करना टेढ़ी खीर हो रही है। इसका उदाहरण आप अर्चना जी के कविता प्रतियोगिता २०१० के विवरण में देखेंगे। इस बार हमें पाठशाला स्तर पर प्रतियोगिताएँ करानी पड़ीं। अगले वर्षों में शायद क्षेत्रिय प्रतियोगिताएँ करानी पड़ें। इस वर्ष के सेमी फाईनल के विजेताओं के चित्र पत्रिका के बीच में लगे हैं। हमारी पाठशालाओं की शिक्षिकाओं, शिक्षकों और स्वयंसेवकों के चित्र भी बीच में लगे हैं।

रचिता जी और दिलीप द्विवेदी जी के "भाषा और संस्कृति" सम्बन्धित लेख बहुत ही गूढ़ विषय के बारे में बात करते हैं। मेरे अनुभव के अनुसार जो लोग कानवेन्ट या दूसरे धार्मिक विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त करते हैं, उन्हें भारतीय संस्कृति से लगाव कम हो जाता है। यह बदलाव इतने धीरे-धीरे आता है कि विद्यार्थी और अभिभावक इसकी अनुभूति भी नहीं कर पाते हैं। इस विषय पर यह बात भी जरूरी है कि अभिभावक गण भी अपने धर्म को अच्छी तरह से समझें। आँख मूँदकर "हम तो ऐसा ही करते आये हैं" कहने से हम अपनी आने वाली पीढ़ी को केवल विद्रोही ही बना रहे हैं।

हमारी कई पाठशालाओं के उच्च कक्षाओं के विद्यार्थी और स्नातक अब हिन्दी कविताएँ और लेख लिखने लग गए हैं। उनकी रचनाएँ किशोर जगत में पढ़ें। इनमें से बहुत से अब सह-शिक्षक के रूप में पढ़ाने भी लगे हैं, जो भविष्य के लिए एक बहुत ही शुभ लक्षण है। इसी भविष्य को और दृढ़ बनाने के लिए हिन्दी यू.एस.ए. ने हिन्दी भवन बनाने का भी बीड़ा उठाया है। इसमें आप सब का तन, मन और धन से सहयोग चाहिए।

हमारे एक कार्यकर्ता दिग्विजय म्यूर जी अस्वस्थ चल रहे हैं, लेकिन उनका हिन्दी यू.एस.ए. के प्रति उत्साह कम नहीं हुआ है। उनके विचार पढ़ें आगे के पन्नों पर।

इसके अलावा मन को छू जाने वाली कविताएँ, कहानियाँ और व्यंजन विधि भी इस अंक में हैं। आशा है यह अंक सचमुच एक स्मारिका बन जायेगा।

महोत्सव के कवियों का परिचय

कवि बलवीर सिंह 'करुण ': उत्तर प्रदेश के भागपत नगर में जन्में मान्यवर श्री बलवीर सिंह करुण मुख्य रूप से राष्ट्रवादी काव्य तथा साहित्य रचना से जुड़े हुए हैं। आप पिछले ५ दशकों से हिन्दी साहित्य की सेवा में संलग्न हैं।

आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं: मैं द्रोणाचार्य बोलता हूँ, समरवीर गोकुल, विजय केतु, बिगुल, बुलाए रक्त शहीद का, प्रहरी मेरे देश के,देश की माटी दे आवाज, गीत गंध बावरी आदि। आपके प्रसिद्ध उपन्यास हैं - ययाति, पाँडव सखा श्रीकृष्ण, द्रोणाचार्य, तथा भीष्म पितामह।

आपकी रचनाओं पर अनेक शोधकार्य हुए हैं। आपको अनेक राष्ट्रीय तथा विभिन्न राज्यों के उच्चतम सम्मानों से सम्मानित किया गया है। आपके प्रमुख पुरस्कार एवं सम्मान हैं - अवंति बाई सम्मान, मीरा पुरुस्कार, विशिष्ठ साहित्यकार सम्मान, पंडित भवानी प्रसाद मिश्रा पुरुस्कार, त्रिवेणी साहित्य पुरुस्कार, महाकवि निराला श्री सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान, तथा राष्ट्र प्रचेता डॉ. ब्रिजेंद्र अवस्थी पुरुस्कार।

आप आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में भाग लेने के लिए अमेरिका आए थे। वर्तमान समय में आप अलवर, राजस्थान के निवासी हैं।

श्री जगबीर राठी : जगबीर राठी एक प्रतिभाशाली कवि हैं, जो कि हिन्दी और हरियाणवी दोनों में हास्य-व्यंग्य की कविताएँ करते हैं। ये अपने लोक संगीत के लिए भी प्रसिद्ध हैं, और लाफ्टर चैलेंज नामक कार्यक्रम में भी भाग ले चुके हैं। ये व्यावसायिक रूप से लगभग आठ वर्षों से कवि मंचों पर हैं, और हास्य-व्यंग्य के जाने-माने हस्ताक्षर हैं। जगबीर जी रोहतक के महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में युवा कल्याण कार्यक्रम के निदेशक हैं| इनके २५ से ज्यादा कॉमिडी एलबम हरियाणवी भाषा में उपलब्ध हैं| इनके धारावाहिक और फीचर फिल्म दूरदर्शन पर प्रसारित हो चुके हैं| इनमें प्रमुख हैं, “फिफ्टी फिफ्टी, इक्क बेगम बादशाह, पनघट, खानदानी सरपंच और शिवरंजनी| इनकी कविताओं की पुस्तकें जैसे चुप चाप चिड़ी, बिदाई का गीत, माता का चूल्हा आदि बहुत चाव से पढ़ी जाती हैं| इनके उपन्यास 'युद्धवीर' को हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा श्रेष्ठतम रचनात्मक साहित्य का पुरस्कार मिल चुका है|

जगबीर जी की अमेरिका की यह पहली यात्रा है|

महोत्सव के कवियों का परिचय

डॉ कुमार विश्वास : काव्य के नव रसों के राजा 'श्रृंगार रस' के कवि डॉ कुमार विश्वास अपनी गीतात्मक शैली के कारण श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने के लिए प्रसिद्ध हैं।

कुमार विश्वास ने कविता की प्रस्तुति के नये आयाम स्थापित किए हैं। आपकी शैली में अनवरत आकर्षण, अद्भुत प्रस्तुति, साहित्यिक ज्ञान के भंडार और श्रृंगार रस की मनमोहक कोमलता की दर्शक और श्रोता प्रति पल अनूभूति करते हैं।

आपका जन्म एक संपन्न और उच्च शिक्षित परिवार में गाजियाबाद के समीप पिखुआ नामक स्थान में हुआ था। आप चारों भाइयों में सबसे छोटे थे, तथा आपको बहुत बचपन से ही काव्य, गीत, तथा साहित्य में रुचि थी। अनेक आलोचकों ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए इनके बारे में कहा है कि इनके काव्य में विचार और भावों के वेग की अभिव्यक्ति तथा साहित्यिक शब्दों के चयन को देख कर यह कहना कठिन है कि ये विज्ञान के विद्यार्थी हैं, और इन्होंने विधिवत् साहित्य का अध्ययन नहीं किया है।

आप एक मंझे हुए मंचीय कवि हैं, तथा भारत के अतिरिक्त अरब देशों, इंग्लैंड, सिंगापुर, हॉन्ग-कॉन्ग, और नेपाल आदि देशों में अनेक कार्यक्रम दे चुके हैं। आपकी प्रसिद्ध पुस्तक, "कोई दीवाना कहता है", ने गीतों की पुस्तकों की बिक्री में नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। हम आपकी व्याख्या संक्षेप में करते हुए कह सकते हैं कि "आप आधुनिक कविता का तरोताजा चेहरा हैं। अमेरिका में इनकी यह पहली यात्रा है।

हिन्दी भवन

समाज के आदरणीय नागरिक गण,

जैसा कि आप जानते हैं, हिन्दी यू.एस.ए. संस्था करीब १० वर्ष पहले कुछ व्यक्तियों द्वारा स्थापित की गई थी, जिन्होंने हिन्दी को न्यू जर्सी और उसके भी आगे बढ़ाने की संभावनाएँ देखीं। इन व्यक्तियों की इच्छा थी कि अमेरिका में हिन्दी संरक्षित रहे, ताकि हमारी भावी पीढ़ियाँ हमारी संस्कृति के साथ निकट संपर्क में रहें, और उनको बौद्धिक लाभ भी मिले, जो हमारी भाषा दिलाती है। आज, समर्पित स्वयंसेवक और आप जैसे अभिभावकों की मदद से हिन्दी यू.एस.ए. एक जीवंत, विख्यात, और संयुक्त राज्य अमेरिका में हिन्दी का सबसे बड़ा संगठन बन गया है।

हिन्दी को अब न्यू जर्सी में एक स्थायी निवास की जरूरत है। इसके बिना, हमारी अभी तक की उन्नति लंबे समय तक स्थायी नहीं रह सकती। हमें याद है कि जब हम पहली बार इस देश में आए तो अपार्टमेंट और किराये के मकान में रहे। हमें अपने स्वयं के घर की प्रतीक्षा थी, और उसे पाने के लिए हमने कड़ी मेहनत की। इसी तरह, हिन्दी को एक स्थायी रूप देने के लिए हमें न्यू जर्सी में हिन्दी भवन की आवश्यकता है। एक बार हम अपनी युवा पीढ़ी को एक स्थायी संरचना और अपनी उपलब्धियाँ विरासत में छोड़ दें तो हम निश्चिंत हो सकते हैं कि हमारे इस दुनिया को छोड़ कर जाने के बाद भी हिन्दी संरक्षित रहेगी।

भारतीय समुदाय आम तौर पर दीर्घकालिक लक्ष्यों और परियोजनाओं के बारे में नहीं सोचता है। हमने कई मंदिरों का निर्माण किया, लेकिन हमारे बच्चों के लिए ज्यादा शैक्षिक और सांस्कृतिक केन्द्र उपलब्ध नहीं हैं। हिन्दी भवन, इस देश में हमारी भाषा और संस्कृति के संरक्षण की जरूरत को देखते हुए इस दिशा में एक कदम होगा। लेकिन, हिन्दी भवन का निर्माण आप सब के समर्थन और सहायता के बिना अकल्पनीय है। हिन्दी भवन परियोजना में लगभग २-३ मिलियन डॉलर खर्च होंगे। यह धन हमारे मजबूत और अच्छी तरह से स्थापित समुदाय से एकत्र किया जा सकता है, अगर हम हिन्दी भवन के निर्माण की आवश्यकता के बारे में आश्वस्त हैं, और पूरे दिल से इस व्यावहारिक विचार को एक सुखद वास्तविकता में बदलने के कार्य में जुट जाएँ।

हिन्दी भवन वास्तव में हमारे पूरे समुदाय के लिए होगा। उसमें एक बड़ा कक्ष होगा जिसमें सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है। उसमें एक पुस्तकालय, कक्षाएँ, बैठक एवं सम्मेलन कक्ष, और समुदाय के सदस्यों के उपयोग के लिए अन्य सुविधाएँ भी होंगी। हमारा समुदाय हिन्दी भवन में हमारे युवाओं के लिए भारतीय संगीत, नृत्य और कला की कक्षाओं का आयोजन कर सकेगा। वयस्क समुदाय और हमारे वरिष्ठ नागरिक भी हिन्दी भवन को अपने स्वयं के उपयोग के

हिन्दी भवन

लिए उपयोगी पाएँगे। लेकिन, सबसे अच्छी बात तो यह है कि भारत के बाहर यह पहला हिन्दी भवन होगा, और इस देश में यह हिन्दी के एक प्रकाश स्तम्भ के रूप में काम करेगा।

हिन्दी यू.एस.ए. को आपका पूरा समर्थन मिलना चाहिए। हिन्दी यू.एस.ए. के स्वयंसेवक और शिक्षिकाएँ आपके बच्चों और समुदाय के लिए आवश्यक सेवा प्रदान करते हैं, जिसके लिए वे कोई मौद्रिक लाभ प्राप्त नहीं करते। यह हमारी भाषा और संस्कृति के लिए प्यार है, जिसके लिए हम सभी एक सर्वनिष्ठ उद्देश्य के लिए एकजुट हुए हैं। हिन्दी भवन एक योग्य परियोजना है, जिसके निर्माण में सभी अभिभावकों तथा दूरदर्शी समुदाय को सहयोगी बनना चाहिए। यह निश्चित रूप से हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए अत्यधिक उपयोगी स्थान होगा।

हमने हिन्दी भवन के लिए एक अलग कमेटी तथा दान-खाता बना गया है। हिन्दी भवन के लिए दिए गए दान पर कर-छूट के साथ-साथ अन्य पारितोषिक भी दिए जाएँगे, जिससे आपकी आने वाली पीढ़ियाँ आपके द्वारा किये गए महान कार्य को अनुभव कर सकेंगी।

आपकी पाठशाला के समन्वयक (coordinator) एक बैठक में आपके साथ हिन्दी भवन पर चर्चा का आयोजन करेंगे। आप एक बार दान कर सकते हैं, या फिर मासिक, त्रैमासिक, या वार्षिक दान के लिए प्रतिज्ञा कर सकते हैं। कृपया धन जुटाने के लिए अपने विचारों को अपने समन्वयक के पास लाएँ। कृपया पूरी तरह से इस परियोजना में शामिल हों, और इस इतिहास बनाने वाले कार्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनें। चलिए, हम यह कार्य साथ मिलकर करते हैं ।

प्रार्थी
हिन्दी भवन स्वयंसेवक कमेटी
myhindibhavan@hindiusa.org

रचिता सिंह जी हिन्दी यू.एस.ए. की जन्मदात्री हैं। इन्हीं की प्रेरणा से ही आज इतने बच्चे अमेरिका में रहकर हिन्दी सीख पा रहे हैं। आप ने पाठ्यक्रम की ज्यादातर पुस्तकें स्वयं लिखी है। आप ने व्यक्तिगत फायदा न देखकर हिन्दी की सेवा की है। एक तरह से आपके परिवार का सारा जीवन हिन्दीमय है। आपकी सारी छुट्टियाँ और यात्राएँ भी हिन्दी के लिए होती हैं।

एक ही सिक्के के दो पहलू - भाषा और संस्कृति

भाषा और संस्कृति का चोली दामन का साथ है। किसी भी देश की संस्कृति अर्थात् वातावरण, रीति-रिवाज, तीज-त्योहार, आचार-विचार, अभिवादन आदि को उस देश की भाषा के बिना जीवित नहीं रखा जा सकता। उस देश में जो भी धर्म प्रधान हो, पर उस धर्म पर भी भाषा का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। बिना भाषा के उस धर्म का पालन करना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि किसी देश की संस्कृति और धर्म को नष्ट करना है तो उसकी भाषा को सबसे पहले नष्ट करना होगा। किसी भी देश की भाषा और संस्कृति को नष्ट करने के लिए आवश्यक है कि उस देश के नगरिकों के मन और मस्तिष्क को हीन भावना से ग्रसित कर देना। और यह हीन भावना क्या है? जब हम जो होते हैं वह बताने में शर्म का अनुभव करने लगते हैं, या जिसे करके हमें प्रसन्नता मिलती है वह न करके, हम वह करने का प्रयास करने लगते हैं, जो दूसरों को अच्छा लगे। या हम कह सकते हैं कि जब हम बनावटी जीवन को जीने लगते हैं, अंदर से रोने और बाहर से हँसने लगते हैं, तो यही हीन भावना की निशानी है।

यदि हम आज के भारत की ओर देखते हैं तो पूरा देश मानो हीन भावना से ग्रसित है। हम में से कितने लोग हैं जो स्वयं को गर्व से भारतीय कहते हैं? गर्व से स्वयं को हिंदू मानना या बोलना तो दूर-दूर तक हमारी सोच में ही नहीं है।

हम अपनी इस हीन भावना के लिए कभी ब्रिटिश सरकार, कभी मुगल साम्राज्य, कभी मिशनरी पाठशालाओं और कभी अपने माता-पिता और लालन-पालन को दोषी मानते हैं। ऐसा भी केवल वही लोग करते हैं जो ये स्वीकार करते हैं कि वे हीन भावना से पीड़ित हैं। सबसे बड़े दुख और आश्चर्य की बात तो यह है कि हममें से अधिकांश लोग अपनी संस्कृति भूल कर दूसरे की संस्कृति में इतने घुल-मिल गए हैं कि -- वे क्या थे? उनके पूर्वज कैसे थे? उनकी भाषा क्या थी? उनका धर्म क्या था?-- ये सब उनके लिए दकियानूसी बातों के अतिरिक्त और कुछ नहीं। उनकी हीन भावना ही उनकी जीवन शैली बन गई है। उन्हें ये पता ही नहीं कि वे हीन भावना से ग्रसित हो गुमनामी की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

एक प्रसिद्ध लेखक के शब्दों में, "कोई भी जाति तब नष्ट होती है जब वह अपने गौरव को भूलकर अपनी रक्षा करने में असमर्थ रहती है। " खरबों की आबादी वाले देश में कुछ सौ लोग ही होंगे जो स्वाभिमान के साथ जी रहे हैं, और ये वे लोग हैं जो देश का गौरवपूर्ण सत्य इतिहास जानते हैं: चंद साहित्यकार, स्वतंत्रता सेनानी तथा इतिहासकार जो अनेकानेक कठिनाइयाँ झेलकर देश को आधुनिकता के गर्त में जाने से बचाने में लगे हैं।

यदि हम स्वतंत्र भारत पर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि अंग्रेजों के समय भारत का इतना पतन नहीं हुआ जितना अंग्रेजों के जाने के बाद। शायद आज भी हमारे हीन मनों में

एक ही सिक्के के दो पहलू - भाषा और संस्कृति

यह भाव कुंडली मारे बैठा है कि अंग्रेज हमसे बेहतर थे, तभी उनने हम पर शासन् किया। उन्हें अंग्रेजी आती थी, और वे हमें अंग्रेजी में गाली देकर गुलाम बनाते थे। अत: हम भी ऐसा करें तो अपना रौब दूसरों पर डाल सकते हैं। और इस हीन सोच ने हमारी सर्वसम्पन्न, मृदु, प्रभावशाली, गौरवशाली भाषा को केवल एक तुच्छ, हीन और दुर्बल भाषा बनाकर छोड़ दिया है। आज भारत में अंग्रेजी बोलने, लिखने और पढ़ने वाले को ही सम्मान मिलता है। संस्कृत, हिन्दी आदि के ज्ञाता केवल उन्हीं के जैसे गिने-चुने लोगों का सम्मान पाते हैं।

देश में अंग्रेजी ने पाँव पसारे तो भारतीय संस्कृति नष्ट होने लगी। त्योहारों का उत्साह घटने लगा, भारतीय परिधान, विदेशी परिधानों में बदलने लगे, भारतीय भोजन विदेशी भोजन में बदलने लगा, समाज में बड़े बूढ़ों की वही स्थिति हो गई जो आज विदेशों में है। पहले सुना था कि विदेशों में पड़ोसी, पड़ोसी को नहीं जानता, कोई किसी के सुख-दु:ख में साथी नहीं होता, पर अब ये मेरे भारत में भी होता है।

राम और सीता जिस संस्कृति का आधार थे, उस संस्कृति के स्त्री और पुरुषों के चरित्र इस सीमा तक गिर गए हैं कि कभी -कभी तो विदेश की संस्कृति उनके आगे उच्च प्रतीत होती है। हमने यह सब खोया क्योंकि हमने अपनी भाषा हिन्दी का आदर नहीं किया। हिन्दी हमारी माँ है। जिस तरह असमय माँ को खोने से एक परिवार बिखर जाता है, उसी प्रकार हिन्दी माँ को खोने से हम सब बिखर गए, सारा देश टूट गया। भाषा गई तो- धर्म गया- धर्म गया तो- नैतिकता खो गई- नैतिकता खोई तो- समाज रुग्ण हो गया। समाज रुग्ण हुआ तो आधुनिकता के जीवाणु और अराजकता के विषाणुओं ने हमारी संस्कृति पर अपना राज्य जमा लिया। कुछ लोग इसे वैश्वीकरण भी कहते हैं। पर मैं आपसे पूछती हूँ कि क्या अपनी भाषा और संस्कृति के साथ हम वैश्वीकरण में सम्मिलित नहीं हो सकते? क्या चीन और जापान जैसे पड़ोसियों से हम कुछ भी नहीं सीख सकते? आइए सारी हीनता को निकाल फेंकिए। हिन्दी बोलिए, बच्चों को सिखाइए, अपनी संस्कृति पर गर्व कीजिए तथा अपने धर्म को जानिए। अपनी तुलना भारत में रहने वालों से न करके अपने पूर्वजों से कीजिए।

LONGSTREET

GENUINE SCHOOL UNIFORMS

SILVER GOOSE ACCESSORIES

NOTORIUS BIG

PHAT FARM BABY PHAT

MAKAVELLI FUBU

HELLO KITTY SNOZU

BROOKLYN EXPRESS US POLO

5 Paddock St.
Avenel, NJ 07001
Phone: 732 855 1400

अर्चना कुमार जी हिन्दी यू.एस.ए. में पिछले ५ वर्षों से स्वयंसेविका हैं। अर्चना जी हिन्दी के विकास के हर कार्य में पारंगत हैं। आपने ३ वर्षों तक एडिसन विद्यालय में अध्यापन किया, अब वुडब्रिज पाठशाला की संचालिका हैं। आपके अनुभव शिक्षक और शिक्षिका प्रशिक्षण में बहुत उपयोगी रहे हैं। इस पत्रिका के सम्पादन में भी आपका योगदान है।

कविता पाठ २०१०

हिन्दी आज सबसे बड़े व पुराने लोकतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा है, और विश्व में द्वितीय स्थान पर बोली जाने वाली भाषाओं में अपना स्थान बनाए हुए है। परंतु बहुत ही खेद का विषय है कि हम भारतीय ही अपनी राष्ट्र भाषा बोलने में हिचकिचाते हैं। भारत में अंग्रेजी में बात करना आधुनिकता और शिक्षित होने का प्रतीक माना जाता है व हिन्दी में बात करना पिछड़ेपन का।

अमेरिका में भी आज से कुछ समय पहले तक भारतीय परिवार घर में हिन्दी बोलने को हीन समझते थे व अंग्रेजी बोलना उच्च स्तरीय समझा जाता था। परंतु समय ने धीरे-धीरे करवट ली। प्रवासी भारतीयों में अपनी मातृभाषा के प्रति जागृति उत्पन्न हुई। क्या हम मातृ-भाषा, मातृ-संस्कृति व मातृ-संस्कारों से अलग रह कर गर्व से जी सकते हैं?

हिन्दी यू.एस.ए. ने भारतीयों की सुप्त चेतना को जागृत करने में जैसे संजीवनी का कार्य किया तथा लगभग २५०० बच्चों को अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में हिन्दी पढ़ाते हुए भारतीय परिवारों को गर्व व आत्मविश्वास से हिन्दी बोलने के लिए प्रेरित किया। आज हिन्दी न्यूजर्सी के ३ विद्यालयों (हाई स्कूलों); एडिसन, पिस्कैटवे व फ्रैन्कलिन में पाठ्यक्रम का एक भाग बन गई है।

हिन्दी यू.एस.ए. सदैव ही भारतीय परिवारों तथा बच्चों को आत्मविश्वास व आत्मसम्मान से हिन्दी को बोलचाल की भाषा बनाने के लिए प्रेरित करता रहा है व इसी प्रयास का एक अभिन्न अंग है, "कविता पाठ प्रतियोगिता"।

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस वर्ष लगभग ४०० बच्चों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। पिछले वर्ष प्रतियोगियों की कुल संख्या लगभग २७० थी। इस वर्ष यह संख्या लगभग डेढ गुना अधिक थी। सभी प्रतियोगी हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं में पढ़ने वाले बच्चे ही होते हैं।

आयोजन : १३ फरवरी को फ्रैन्कलिन शहर के माध्यमिक विद्यालय (मिडल स्कूल) में यह प्रतियोगिता आयोजित हुई। इस प्रतियोगिता में विभिन्न ७ स्तरों के बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम का आरम्भ सुबह १०:४५ पर किया गया। सर्वप्रथम दीप प्रज्ज्वलन के बाद सुश्री रिया पटेल द्वारा गाई श्री गणेश स्तुति व सरस्वती वंदना से कार्यक्रम को प्रारम्भ किया गया। रिया पटेल हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशाला में पढ़ने वाली नौवीं कक्षा की छात्रा हैं।

विभिन्न चरण : यह सेमीफाईनल चरण था। इससे पूर्व हिन्दी यू.एस.ए. की सभी पाठशालाओं ने अपनी - अपनी पाठशालाओं के स्तर पर स्थानीय कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया। कुल सोलह पाठशालाओं के लगभग १,५०० बच्चों ने इसमें पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। इस चक्र के विजेता बच्चे अंतर्शालीय कविता पाठ प्रतियोगिता (सेमीफाईनल) में भाग लेते हैं व उसके विजेता अंतिम चरण के लिए हिन्दी महोत्सव के दूसरे दिन आयोजित की जाने वाली कविता पाठ प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान के लिए अपनी – अपनी कविता सुनाने के लिए मैदान में उतरते हैं।

कविता पाठ २०१०

विभिन्न स्तर:

कनिष्ठा-१ : सबसे छोटा स्तर। इस स्तर में कुल ३७ बच्चों ने भाग लिया। कनिष्ठ स्तर के बच्चों ने प्रथम बार सेमीफाईनल चक्र में भाग लिया। इस स्तर के बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। कहीं चाँद सितारों की कविता तो कहीं फल, सब्जियों की। कवितानुसार पहने तरह – तरह के विशेष परिधानों में बच्चे बहुत ही सुन्दर लग रहे थे। कनिष्ठ– २ : यह अगला स्तर है। इस स्तर में ६५ बच्चों ने भाग लिया। कविता गाने का समय १ मिनट रखा गया था। इस स्तर के बच्चों की आयु ६-७ वर्ष रहती है। कवितानुसार परिधान व परॉब लिए बच्चों ने बहुत सुन्दरता व परिपक्वता से अपनी-अपनी कविता प्रस्तुत की।

प्रथमा – १ : प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी इस समूह के प्रतियोगियों को २ वर्गों में बाँटा गया। एक वर्ग ९ वर्षों से छोटे बच्चों का तथा दूसरा ९ वर्षों से बड़े बच्चों का। दोनों वर्गों में कुल १२६ बच्चों ने भाग लिया।

प्रथमा – २ : इस स्तर के ८६ बच्चों को २ वर्गों में विभाजित किया गया। ७-९ वर्ष की आयु तथा ९ वर्ष से बड़े बच्चों का समूह। प्रथमा -१ व २ के बच्चों के लिए कविता बोलने का समय १.५ मिनट रखा गया। ।

मध्यमा – १ , २ तथा उच्च स्तर : इन स्तरों में कुल ८७ प्रतियोगियों ने भाग लिया। २ मिनट के निर्धारित समय में बच्चों को अपनी कविता सुनानी थी। कविता आरम्भ करने से पहले सभी प्रतियोगियों को कविता का नाम व कवि का नाम बताने के लिए कहा गया था।

विशिष्ठ – १ / २ के बच्चों के लिए निर्देश था कि उन्हें सीधे हिन्दी महोत्सव में ही अपनी कविता सुनाने की कला का प्रदर्शन करना होगा।

निर्णय : प्रत्येक समूह से १० – १० बच्चों का चयन किया गया। कनिष्ठा -१/२ के लिए निर्णायक दल एक ही था। प्रथमा -१ व प्रथमा -२ के लिए अलग-अलग दल व मध्यमा - १/२ व उच्च स्तर के लिए निर्णायक दल एक ही था। प्रत्येक निर्णायक दल में ४-४ सदस्य थे। निर्णायक दल के सभी सदस्यों को बाहर से आमंत्रित किया गया था। निर्णायकों को कविता प्रतियोगिता के नियम पहले से ही विपत्र द्वारा भेज दिए गए थे व प्रत्येक समूह के आरम्भ में भी नियमों को एक बार दोहराया जा रहा था। निर्णायकों ने जितनी रुचिपूर्वक कविताएँ सुनीं उतनी ही सावधानी व जिम्मेदारी से निर्णय किया। सभी अभिभावक निर्णय से पूर्णत: संतुष्ट थे।

निर्णय करने के लिए प्रतियोगियों का मूल्यांकन विभिन्न ४ वर्गों के आधार पर किया गया, जैसे — आत्मविश्वास, उच्चारण, स्मरण, अभिव्यक्ति/शैली। बच्चों ने बहुत ही निपुणता से सभी वर्गों को ध्यान में रखते हुए कविताएँ सुनाईं। कहीं मैथिली शरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, जयशंकर प्रसाद जी तो कहीं निराला जी की कविताएँ। बच्चों के प्रदर्शन में कहीं कोई कमी नहीं थी।

नियम : बच्चों को पहले से ही कह दिया गया था कि वे किसी भी प्रकार की चालीसा, गीत या भजन न गाएँ। कविता पाठ में केवल कविता ही रहे। लगभग सभी बच्चों की कविताएँ उनकी प्रतिभा जैसे वीर, हास्य, उच्चारण इत्यादि को ध्यान में रखकर चुनी गई थीं। यह देख कर बहुत प्रसन्नता हुई कि बच्चों ने कविता का चुनाव अभिभावकों तथा शिक्षक, शिक्षिकाओं के सहयोग से बहुत ही बुद्दिमता पूर्वक किया था।

कार्यक्रम की सफलता : हिन्दी यू.एस.ए. द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में हिन्दी महोत्सव के बाद यह दूसरा भव्य कार्यक्रम है जो केवल बच्चों के लिए ही आयोजित किया जाता है। इस कार्यक्रम की सफलता का श्रेय हिन्दी यू.एस.ए. के सभी कर्मठ कार्यकर्ताओं को जाता है। कार्यकर्ताओं का सबसे पहला समूह सुबह ९:३० बजे पहुँचा तथा बाकि सभी कार्यकर्ता अपना – अपना कार्य भार सम्भालने हेतु कार्यक्रम स्थल पर निर्धारित समय पर ही पहुँच गये थे। सभी के कार्य भार को बहुत ही

कविता पाठ २०१०

सुघड़ता से विभिन्न समय सारणी में बाँटा गया था ताकि सभी कार्यकर्ता बारी-बारी आडिटोरियम में बैठ कर बच्चों द्वारा प्रदर्शित कविता पाठ का रसास्वादन कर सकें। सभी कार्यकर्ता अंत तक रात्रि ८ बजे तक स्थल पर रुके रहे। मंच पर बच्चों का नाम पुकारने के लिए विभिन्न स्तरों व समूहों के लिए विभिन्न शिक्षिकाओं तथा शिक्षिकों ने पदभार सम्भाला व बहुत की आत्मविश्वास से अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह किया।

अभिभावकों के सहयोग के बिना यह विशाल कार्य सम्भव ही नहीं हो सकता था। सभी अभिभावक बच्चों को लेकर पहले से दिए गए निर्धारित समय पर स्थल पर पहुँच गए। बच्चों व शिक्षकों के परिश्रम के साथ-साथ अभिभावकों का परिश्रम भी सराहनीय रहा।

इस कार्यक्रम के दौरान प्रात: १० बजे से रात्रि ७ बजे तक विभिन्न कार्यकर्ताओं की सहायता से पाठ्यक्रम की पुस्तकें, शिक्षण सामग्री, कहानियों की पुस्तकों तथा सी.डी. और डी.वी.डी. आदि का प्रदर्शन तथा बिक्री की गई। अभिभावकों ने पुस्तकें खरीदने में पूर्ण उत्साह दिखाया। अभिभावकों ने न केवल बच्चों के लिए अपितु स्वयं के लिए और उपहार देने के उद्देश्य से वयस्कों की पठन सामग्री भी बहुतायत से खरीदी। हमें यह याद रखना चाहिए कि जिस भाषा का साहित्य जितना ज्यादा बिकता है, वह भाषा उतनी ही तेजी से सफलता के सोपान चढ़ती है।

उद्देश्य : इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य नई पीढ़ी में आत्मविश्वास से हिन्दी बोलने के लिए प्रेरित करना है। नेतृत्त्व का गुण तो अपने आप ही ऐसी प्रतियोगिता में भाग लेने से आ ही जाता है। बच्चों को और अधिक हिन्दी सीखने के लिए प्रेरित करना भी इसका उद्देश्य है, प्रत्येक वर्ष हर पिछले वर्ष से अधिक बच्चों का प्रतियोगिता में भाग लेना इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। बच्चों का उत्साह देखने से लग रहा था कि हिन्दी यू.एस.ए. का उद्देश्य तेजी से पूर्णता की ओर अग्रसर है।

नेत्तृत्व व स्वयंसेवी कार्यकर्ता होने की भावना तो हिन्दी यू.एस.ए. जैसी निःस्वार्थी संस्था से जुड़ कर जैसे बच्चों में कूट-कूट कर आ गई है। इसका प्रमाण हमें इस प्रतियोगिता में प्रत्यक्ष दिखाई दिया, जब हमने हिन्दी यू.एस.ए. की ही पाठशाला से उत्तीर्ण विशिष्ठा -२ के बच्चों को कार्यकर्ताओं के रूप में कार्यभार सौंपा। ये बच्चे प्रतियोगिता से पहले हुई मासिक सभा में भी उपस्थित हुए ताकि अपने-अपने उतरदायित्व की जानकारी प्राप्त कर सकें, व कैसे काम किया जाए यह भी समझ सकें। हिन्दी यू.एस.ए. का भावी पीढ़ी को अपनी मातृभाषा से प्रेम व लगाव करने का उद्देश्य जैसे पूर्ण होता दिखाई दे रहा है।

भारतिय युवा वर्ग सामने आए व अपनी मातृभाषा, मातृसंस्कृति व मातृसंस्कारों को धरोहर के रूप में संजोए रखें व सारथी बनकर आने वाली पीढ़ी में इनका संचार करे, इसी उद्देश्य के साथ हिन्दी यू.एस.ए. निरंतर कर्मठता से कार्यरत है।

उत्साह वर्धन : सभी बच्चों को कहा गया कि चाहे वे जीते हैं या नहीं परंतु वे विजेता तो हैं ही क्योंकि उन्होंने बहुत ही साहस व उत्साह से अपनी कविता लगभग ८०० श्रोताओं के सामने सुनाई, वे हतोत्साहित न हों तथा अगले वर्ष और अधिक तैयारी करें। सभी प्रतियोगियों को भाग लेने के लिए भारत के राष्ट्र ध्वज की एक-एक बटन पिन दी गई। विजेताओं को उनके स्तरानुसार उपहार भेंट किए गए। जैसे-वर्ण माला कैलेंडर, कहानियों की पुस्तकें, सुन्दर काण्ड इत्यादि। यह उपहार विजेता बच्चों को निर्णायकों द्वारा ही दिए गए।

अंत में हिन्दी यू.एस.ए. के सभी स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं, शिक्षकों, शिक्षिकाओं तथा अभिभावकों को कार्यक्रम की सफलता की बहुत-बहुत बधाई।

धन्यवाद,

अर्चना कुमार

आपके सवाल और हिन्दी यू.एस.ए. के जवाब

प्र. १ : बच्चे को किस उम्र से हिन्दी सिखाई जाये ?

उ. १: बच्चे को आप जन्म से ही हिन्दी सिखाएँ। हाँ, पाठ्यक्रम के अनुसार लिखना-पढ़ना सिखाने के लिए ५-६ वर्ष की आयु उत्तम है।

प्र. २: बच्चों को हिन्दी बोलना कैसे सिखाएँ?

उ. २: यदि आप घर में हर समय हिन्दी में बात करेंगे तथा घर में हिन्दी का वातावरण बनाये रखेंगे तो आपके बच्चे हिन्दी बहुत ही आसानी से सीख जायेंगे।

प्र. ३: घर में हिन्दी का वातावरण कैसे बनाया जा सकता है?

उ. ३: घर के सभी सदस्य हिन्दी में बात करें। बच्चों को हिन्दी में कहानियाँ तथा अपने संस्मरण सुनाएँ। उन्हें हिन्दी की पुस्तकें, पत्रिकाएँ, समाचार-पत्र, कैलेंडर, पोस्टर आदि लाकर दें । इन्हें घर में सजाएँ। बच्चे का नाम हिन्दी में लिखकर उसके कमरे के बाहर लगायें। अपनी मन पसंद कविताएँ, गीत, लोरी आदि बच्चों को खाना खिलाते एवं उनके साथ खेलते समय गाएँ। घर में हिन्दी गीत्, भजन आदि सुनें एवं बच्चों को सुनने के लिए प्रेरित करें। हिन्दी टी.वी. चैनल के शुद्ध कार्यक्रम अधिक से अधिक देखें। मित्रों, सम्बन्धियों से दूरभाष पर तथा जलसों, समारोहों में हिन्दी में बात करें, तथा अपने बच्चों को भी उनसे हिन्दी में ही बात करने के लिए प्रेरित करें।

प्र. ४: क्या बच्चों को अंग्रेजी बोलने पर डाँटना या सजा देना चाहिए?

उ. ४: अंग्रेजी बोलना कोई अपराध या गलत कार्य नहीं है। हमें बच्चों को हिन्दी बोलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, न कि उनके अंग्रेजी बोलने का विरोध। अमेरिका में जन्मे एवं पले बच्चों की मातृ- भाषा अंग्रेजी है, और उनका अंग्रेजी बोलना स्वाभाविक है।

प्र. ५: मैं अपने बच्चों को केवल हिन्दी बोलना सिखाना चाहती हूँ, लिखना पढ़ना नहीं। क्या मेरा सोचना सही है?

उ. ५: बच्चा कोई भी भाषा ठीक से तभी बोल पाता है, जब उस भाषा का उसे शब्द-ज्ञान हो तथा उस भाषा की विशेषताएँ मालूम हों, और उसके उच्चारणों का ज्ञान हो। विद्वानों के अनुसार किसी भी भाषा को ठीक से जानने के लिए न केवल उसे लिखना, पढ़ना और बोलना सीखना चाहिए, बल्कि उस भाषा से जुड़ी संस्कृति का ज्ञान भी होना आवश्यक है।

प्र. ६: मेरा बच्चा भारत में आठवीं कक्षा तक हिन्दी पढ़ कर आया है। मैं क्या करूँ कि वह अपनी हिन्दी न भूले?

उ. ६: आप उसके लिए भारत से आगे के पाठ्यक्रम की पुस्तकें मँगवा सकती हैं, तथा उसे स्वयं या किसी शिक्षक की सहायता से पढ़ा सकती हैं। साथ ही हिन्दी में बातें करना और हिन्दी के कार्यक्रमों में जाना न भूलें। बच्चा यदि हिन्दी पुस्तकों या टी. वी. (हिन्दी चैनल) के लगातार संपर्क में रहेगा तो वह हिन्दी बोलना, समझना और पढ़ना नहीं भूलेगा। लिखने के लिए बच्चे को स्वयं ही अभ्यास करना होगा जो थोड़ा कठिन है। शिक्षक ढूँढ़ने में हिन्दी यू.एस.ए.आपकी सहायता कर सकता है। आपका बच्चा यदि अपने से कनिष्ठ बच्चों को हिन्दी पढ़ायें, तो उसका हिन्दी का ज्ञान यथास्तु बना रहेगा, तथा अपना हिन्दी ज्ञान और बढ़ाने हेतु प्रेरणा भी मिलेगी।

प्र. ७: बच्चों को हिन्दी सिखाने का सबसे सरल तरीका क्या हो सकता है?

उ. ७: बच्चों को कहानियाँ सुनाकर बहुत आसानी से हिन्दी व्याकरण, शब्दज्ञान, प्रश्नोत्तर, वार्तालाप करना आदि सभी कुछ सिखाया जा सकता है। अच्छी नैतिक एवं शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाकर आप बच्चे को न केवल हिन्दी सीखा सकती हैं, अपितु उन्हें चरित्रवान भी बना सकती हैं।

आपके सवाल और हिन्दी यू.एस.ए. के जवाब

प्र. ८: यदि बच्चे को बिल्कुल ही हिन्दी नहीं आती, और हम उसे १० वर्ष की उम्र में हिन्दी यू.एस.ए. की कक्षाओं में भेजते हैं तो उसे हिन्दी सीखने में कितने वर्ष लग सकते हैं?

उ. ८: बच्चा चाहे किसी भी उम्र में हिन्दी सीखना प्रारंभ करे, उसका हिन्दी सीखना उसकी रुचि पर निर्भर करता है। इसके अतिरिक्त माता-पिता के सहयोग, प्रोत्साहन तथा घर के वातावरण पर भी निर्भर करता है। यदि ये सभी सकारात्मक हैं तो पाँच वर्षों में आपका बच्चा बुनियादी हिन्दी लिखना, पढ़ना एवं धारा प्रवाह बोलना सीख सकता है। यही कार्य यदि पाँच वर्ष की आयु से प्रारंभ हो जाता है तो बच्चे के लिए अत्यंत सरल होता है।

प्र. ९: आपने कविता पाठ, अन्य प्रतियोगिताओं तथा हिन्दी महोत्सव को पाठ्यक्रम का आवश्यक हिस्सा क्यों बनाया है?

उ. ९: कविता पाठ प्रतियोगिता, शब्द, अन्ताक्षरी, प्रश्नावली, शब्द-ज्ञान, व्याकरण प्रश्नावली आदि ऐसी प्रतियोगिताएँ हैं, जिनके माध्यम से बच्चों की हिन्दी बोलने की कुशलता को तेजी से बढ़ाया जा सकता है, तथा बच्चों के आत्म-विश्वास और हिन्दी सीखने की गति को भी तीव्र किया जा सकता है। हिन्दी महोत्सव बच्चों के अन्दर हिन्दी के प्रति गर्व की भावना को बढ़ाता है, तथा साथ ही उन्हें प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करता है। पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने से अभिभावक इसे गंभीरता से लेते हैं।

प्र. १०: हम बच्चों के लिए हिन्दी की पुस्तकें तथा अन्य शिक्षण सामग्री कहाँ से खरीद सकते हैं?

उ. १०: हिन्दी यू.एस.ए.के स्वयंसेवकों ने बहुत मेहनत करके कई प्रकार की हिन्दी पुस्तकें, सी. डी., डी. वी.डी. , फ्लेश काड्र्स, चुम्बकीय वर्णमाला, वर्णमाला चार्ट, तथा अनेक प्रकार की हिन्दी सीखने की पुस्तकें, अभ्यास पुस्तकें, तथा कहानियों की पुस्तकें स्वयं लिखी एवं प्रकाशित करवाई हैं, तथा कई अन्य लेखकों की पुस्तकें अन्य प्रकाशकों से खरीदकर आपके लिए संगृहीत की गयीं हैं। हिन्दी यू.एस.ए.के सभी कार्यक्रमों में पुस्तक स्टाल लगाए जाते हैं, जहाँ से आप ये सभी पुस्तकें खरीद सकते हैं।

प्र. ११: मेरे पास समय और पैसा नहीं है, पर मैं हिन्दी यू.एस.ए.की सहायता करना चाहती हूँ। मैं क्या कर सकती हूँ?

उ. ११ : सर्व प्रथम तो आपको धन्यवाद कि आप इस जन अभियान के कार्य में सहयोग देना चाहती हैं। यदि आप अलग से समय नहीं दे सकतीं तो कोई बात नहीं, आप जहाँ भी जाएँ या आपके घर में कोई आये तो आप हिन्दी महोत्सव, हिन्दी कक्षाएँ, कवि सम्मलेन, हिन्दी परीक्षा, पुस्तकों आदि के बारे में सबको बतलाएँ। विभिन्न दुकानों और संस्थानों पर हमारे पर्चे रखें। ई-मेल द्वारा हिन्दी यू.एस.ए.का तथा इसके कार्यक्रमों का प्रचार करें। हिन्दी की सामग्री खरीद कर अपने मित्रों को उपहार स्वरुप दें। अपने व्यापारी मित्रों, डॉक्टर, वकील, दन्त चिकित्सक आदि के विज्ञापन हमारी पत्रिका के लिए दिलवाएँ। ऐसा करने से हिन्दी यू.एस.ए. की बहुत सहायता होगी, और यह संस्था अपने अभियान में सफल होकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगी।

दिलीप द्विवेदी जी का जन्म उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में तोखापुरम गाँव में हुआ। बचपन से ही इनका रुझान धार्मिक क्रिया-कलापों की ओर बढ़ निकला। माता-पिता और बृहद परिवार ने रामायण, पुराणों, और संस्कृत भाषा से नाता जुड़वाया, और गाँव वासियों ने भाई-चारे और सामाजिक दायित्व की सीख दी। आप आई. आई. टी. रूड़की से कम्प्यूटर इंजीनियरिंग और न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी से एम. बी. ए. की पढ़ाई करने के पश्चात् कॉरपोरेट फाईनेंस के क्षेत्र में कार्यरत हैं। इन्हें हिन्दी, संस्कृत, योग, तंत्र, एवं दर्शन शास्त्रों के पठन-पाठन में विशेष रुचि है। आप पिछले दो सालों से हिन्दी यू. एस. ए. में अध्यापन का कार्य कर रहे हैं।

हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति

जब मैंने कर्मभूमि में लेख लिखने के लिए कलम उठाई तो एक सवाल दिमाग में आया कि क्यों न कुछ ऐसा लिखा जाय जिसका वास्ता हिन्दी यू. एस. ए. की दैनिक गतिविधियों से हो। जिसका उद्देश्य आम छात्र- छात्राओं, अभिभावकों एवं शिक्षकों से सम्बन्धित हो। छात्रगण प्रायः यह सवाल पूछते हैं कि हिन्दी पढ़ने से हमें क्या लाभ है। आज अंग्रेजी का वर्चस्व इतना बढ़ गया है कि हिंदुस्तान के नागरिक ही अंग्रेजी को अपनी शिक्षा और बातचीत का माध्यम बड़े पैमाने पर बना रहे हैं, तो हम प्रवासी भारतीय हिन्दी के पीछे इतने उतावले क्यों हो रहे हैं? जब तक हम इस प्रश्न का संतोष जनक उत्तर छात्रों को नहीं देंगे, तब तक हम उनका हिन्दी के प्रति उत्साह वर्धन नहीं कर सकेंगे।

यह प्रश्न बड़ा गूढ़ है और इसका जवाब उससे भी कहीं ज्यादा गूढ़। फिर भी मैं अपना दृष्टिकोण आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा है इसमें आपके कुछ सवालों का हल मिल जाये। अगर हल न भी मिले तो सोचने का एक नया दृष्टिकोण तो अवश्य ही मिल जाना चाहिए। मैं इसको चार प्रमुख पाठक वर्गों के लिए लिख रहा हूँ। ये हैं -- छात्र, अभिभावक, शिक्षक, और प्रबंधक समुदाय।

साधारणतया, हम हिन्दी को एक भाषा के रूप में देखते हैं। परंतु यह सोच अधूरी है। वास्तव में हिन्दी का महत्व इसीलिए है कि यह हमें अपनी संस्कृति से जोड़ती है। भाषा एवं संस्कृति का आपस में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। ये नाव और पतवार जैसे हैं जो एक दूसरे के बिना अधूरे, दिशा हीन, और क्रियाविहीन हो जाते हैं। इसीलिए, हिन्दी सीखने का प्रमुख उद्देश्य भारतीय संस्कृति एवं विचार धाराओं को आने वाली पीढ़ियों के लिए कायम रखना है। भाषा की अनभिज्ञता से हम अपनी संस्कृति से हाथ धो बैठेगें। इसका उदाहरण आप "तंत्र" पर गूगल सर्च कर के देख लें। भाषा और भारतीय संस्कृति से अनभिज्ञ पाश्चात्य जगत ने हमारे आगम शास्त्र को कितना घिनौना रूप दे दिया है।

छात्र गण: प्रिय छात्र और छात्राओं, आपके प्रश्न उचित और सटीक हैं। हमें कोई भी काम करने से पहले उसके उद्देश्य के बारे में पता करना बहुत आवश्यक होता है, और जब तक हम तसल्ली भरा जवाब नहीं पाते हैं तब तक हमारा मन उसमें नहीं लगता है। एक बार उद्देश्य मिलने से हम सही रास्ता पकड़ कर, सही जोश के साथ उसमें लग जाते हैं। हिन्दी पढ़ना भी ऐसे ही एक उद्देश्य की पूर्ति है।

हिन्दी की महत्ता एक भाषा मात्र से कहीं ज्यादा है। ये हमारी संस्कृति और परम्पराओं की जंजीर में एक कड़ी है। ये हमें अपने संस्कारों और पैतृक मूलों से जोड़ती है। वह संस्कृति, जो जीवन में आत्मिक, अध्यात्मिक, और भौतिक जीवन में संतुलन बनाये रखने का उपदेश देती है। आज जब सारी दुनिया भौतिकवाद की तरफ आँख मींचे भाग रही है तो वहीं हम एक प्रकाश की किरण बन कर लोगों को रास्ता दिखा सकते हैं,लेकिन उसके पहले हमें खुद उस आत्मप्रकाश को पाना है, जो हमें एक आशा की किरण में बदल सके। किरण बनाने का माध्यम हमारी संस्कृति है जो हिन्दी भाषा के जरिये ही हासिल होगी।

भाषा का विषय बहुत गूढ़ है, और हिन्दी भाषा का तो कहीं और ज्यादा। बहुत से बड़े लोग भी इसे समझने में भूल कर जाया करते हैं, इसलिए अगर आप इसे पूरी तरह न समझें तो कोई बुराई नहीं है। इस विषय में अभी आप अपने माता-पिता और शिक्षकों की बात मानें, और पूरा विश्वास रखें कि यह आप के

हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति

हित में ही है। हिन्दी, माँ के आलिंगन और पिता के संरक्षण जैसी है जो हमें किसी भी मुसीबत में सहारा देती है। वह सहारा, जो हमें विश्राम प्रदान करता है और हम फिर नए जोश से अपने प्रयासों में लग जाते हैं।

अभिभावक गण: आप सब लोगों का सहयोग इस दिशा में बहुत सराहनीय है। आप हिन्दी के महत्व को समझकर ही अपने बच्चों को हिन्दी सिखा रहे हैं। आप अपने तरीके से बच्चों को "स्वात्मज्ञान" के महत्व को बताते रहिये। अपने आप को जाने बगैर हम संपूर्ण इन्सान नहीं बन पाएँगे। ये सब भारतीय सिद्धांतों को हम भारतीय माध्यम से ही सीख पाएँगे। जब हम खुद यह अपने आपको समझा पाएँगे, तो बच्चों को समझाना पहले की तुलना में थोड़ा सरल हो जायेगा।

आज हम चाहे हिन्दी बोलें, गुजराती बोलें, कन्नड़, या मलयालम, सब भाषाओं का स्तोत्र एक ही है। यह स्तोत्र तो भारतीय संस्कृति है जो संस्कृत भाषा में संगठित हुई है और वही भाषा आज व्यावहारिक रूप से हिन्दी में रूपांतरित हो गयी है। मेरी सभी से यह प्रार्थना है कि आप इस सांस्कृतिक श्रृंखला को अटूट रखने का भरपूर प्रयास करें, और बच्चों को ऐसे साधन उपलब्ध कराएँ जिससे कि वे भारतीय मूलों से जुड़े रहें, और उन मूलों को अपने जीवन में अपना सकें। इन साधनों में हिन्दी सीखना पहला कदम है।

शिक्षक गण: आप तो हिन्दी की महत्ता को जानते ही हैं, इसीलिए मैं यहाँ थोड़ा सा अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहा हूँ। हिन्दी को मात्र भाषा के रूप में दिखाने से इसकी गरिमा का पूरा रूप उभर कर बाहर नहीं आ पाता है। हिन्दी असली मायने में भाषा है। भाषयति इति भाषा। जो हमारे अन्तःकरण की आभा को बाह्य रूप देती है, वह भाषा है। वो आत्मदीप है। हमें इस दीप को मानवतावादी और सामाजिक मुद्दों से जोड़ना है, जो कि हमारी संस्कृति की विशेषता है। इसमें हिन्दी एक महत्व पूर्ण माध्यम है। इसका एक प्रदर्शन यहाँ दिया जा रहा है।

१) हमारी परंपरा भाषा के द्वारा साहित्य रूप में संकलित है। भाषा के बगैर साहित्य का ज्ञान संभव नहीं है।

२) साहित्य पढ़ने से ही ज्ञान होगा और ज्ञान होने पर ही परंपरा आगे की पीढ़ियों में कायम रहेगी।

३) परंपरा के कायम होने से साहित्यों में संकलित मानविक और सामाजिक रीतियाँ बरकरार रहेंगी, और यही हमारा अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।

प्रबंधक गण: मैं हार्दिक दिल से धन्यवाद देता हूँ कि आप हिन्दी भाषा के प्रचार में सतत् प्रयत्नशील हैं। आप बच्चों को एक ऐसा उपहार दे रहे हैं जो कि जिंदगी भर उनके साथ रहेगा। ये साथ ही नहीं रहेगा अपितु दिन दूना रात चौगुना होगा। विद्या का धन बहुत अजीब है। जैसा कि कहा गया है-- न चौर्य हार्यं, न च भातृ भाज्यं, ... व्यये कृते ब्रिद्हते व कदाचित, विद्या धनं सर्व धनं प्रधानं। यह धन आर्थिक व्यवस्था के भंग होने पर भी अभंग रहता है। मैं आप से एक प्रार्थना करूँगा कि जहाँ तक हो सके, हिन्दी और भारतीय संस्कृति को जोड़े रखिये। कविता प्रतियोगिता इस दिशा में बहुत सहायक कदम है। हो सकता है भविष्य में हम किसी ऐसी किताब का संकलन कर सकें जिसके द्वारा हमारे पूर्वजों और ज्ञानियों के बारे में जानकारी दी जाय।

हम पाश्चात्य जगत के निवासियों के लिए हिन्दी प्रचार और संरक्षण एक बहुत बड़ी चुनौती है पर यह एक अवसर भी है। चुनौती यह है कि हम हिन्दी रुपी पौधे को एक नए वातावरण में लगा रहें है जो कि आसान नहीं होगा। भारत में ही हिन्दी साहित्य और परंपरा संस्थापित होने में सदियाँ बीत गयीं थीं। अमेरिका तो अपने लिए बहुत ही नया वातावरण है। फिर भी समस्त हिन्दी यू. एस. ए. परिवार ने यह साबित कर दिया है कि यह कार्य संभव ही नहीं, पर सफल भी होगा। सुनहरा मौका यह है कि हम पाश्चात्य जगत को भारतीय मूलों एवं

(Continued on page 22)

हनुमान चालीसा – भावार्थ - अर्चना कुमार

पिछले दिनों मैंने "श्री हनुमान चालीसा भाष्य "नामक एक पुस्तक पढ़ी जिसमें श्री चालीसा की वृहद् व्याख्या दी गई है।

इस पुस्तक के लेखक श्री "स्वामी डॉ. राम कमल दास वेदांती जी महाराज" हैं। आपने हनुमान चालीसा की व्याख्या बहुत ही सुन्दर ढंग से की है। बहुत ही ज्ञान-वर्धक पुस्तक है यह। इसीलिए मैं यहाँ श्री हनुमान चालीसा के आरम्भिक २ दोहों का अर्थ संकलित कर रही हूँ।

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर विमल जसु, जो दायक फल चारि॥

भावार्थ -- "श्री" का अर्थ है – शोभा युक्त। जो अपने इष्ट को प्रसन्न और प्राप्त करने के लिए शास्त्रोक्त, वेदोक्त, तंत्रोक्त, अनुभवस्थित महापुरुष की आज्ञानुसार नियमबद्ध होकर श्रद्धा एवं विश्वासपूर्वक, स्वयं प्राप्त कर साधक को भी उस आनन्द का अनुभव करा सके, ऐसी शोभा से युक्त विशेषण के लिए ""श्री"" का अर्थ प्रयुक्त होता है।

" गुरुचरण सरोज.." ऐसी शोभा से युक्त सत् गुरु के चरण कमल में दृढ़ता पूर्वक, सच्चे हृदय से, अभिन्न, भाव से, सेवा कर, प्रसन्नता पूर्वक, उनके चरण कमल की रज को सिद्धाञ्जन की तरह मन में स्थान दिया है। इस पावन रज से मनरूपी शीशे को निर्मल कर (अर्थात् गुरु उपदिष्ट भाव रूपी प्रकाश को मन रूपी शीशे में ग्रहण कर) सम्पूर्ण नस-नस में भावरूपी प्रकाश फैल जाय, तन्मयता छा जाय।

" बरनउँ रघुबर विमल जसु ------ " श्री राम जी के वास्तविक स्वरूप को, जो विमल है, दोष रहित है, इस अनुभवस्थित ईश्वर तत्त्व का मैं वर्णन करता हूँ, जो अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष चारों पदार्थों को प्राप्त कर सकता है।

बुद्धिहीन तनु जानिके , सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं , हरहु कलेस विकार॥

भावार्थ – " बुद्धिहीन तनु जानिके " -- ईश्वर – तत्त्व का वर्णन करने के लिए निश्चयात्मिका बुद्धि की आवश्यकता है। गीता के अनुसार ' बुद्धियोग' के प्रदाता स्वयं भगवान हैं। बिना ईश्वर की प्रसन्नता के बुद्धि नहीं मिल सकती। इसलिए भक्त ईश्वर कृपा के पात्र बनने के लिए उत्सुक रहते हैं। संत कहते हैं – " ईश्वर का वास्तविक स्वरूप और चरित्र जानने के लिए मेरी बुद्धि काम नहीं करती है, क्योंकि प्रत्येक शब्द यथार्थता से पूर्ण होना चाहिए। जिस शब्द का अनुभव नहीं है , वह न लिखा जाए और न बोला जाए न समझा जाए और न ही समझाया जाए। ऐसी 'बुद्धि' से मैं हीन हूँ। इसलिए ज्ञान, भक्ति, विद्या और बल की प्राप्ति के लिए ' पवन – पुत्र हनुमान जी ' का मैं स्मरण करता हूँ क्योंकि ' ईशवर-तत्त्व' को वास्तविक रूप में श्री हनुमान जी ही जानते हैं। ईश्वर तो न्याय की ओर देखेंगे, परंतु भक्त सदा दीनता को ही देखेगा।

"सुमिरौं पवन कुमार"" -- ज्ञान के प्रदाता शिवजी हैं। वह निर्गुण, सगुण, साकार, निराकार, निश्प्रपंच, प्रपंच आदि ईश्वर के गुणों तथा ईश्वरीय माया को अच्छी तरह से समझते हैं तथा समझा सकते हैं। इस संसार पर कृपा करने के लिए स्वयं शिवजी ने 'पवन-पुत्र' का रूप धारण किया। शास्त्रों में हनुमानजी को 'रूद्रावतार" कहा गया है। 'रू' का अर्थ है – संसार में जो भयंकर कष्ट हैं, जिनसे प्राणी पीड़ित हैं। 'द्र' का अर्थ है विनाश यानि कष्टों का विनाश करने वाला। अनादि काल से माया से पीड़ित जीव सुख की चाहना में दुःख ही भोगता चला आ रहा है। उस दुःख का विनाश करने के लिए स्वयं 'शिव' 'पवन कुमार' होकर संसार में प्रसिद्ध हुए हैं। उनके बिना मुझे यथार्थ ज्ञान कौन देगा? ऐसा मन में दृढ़ निश्चय करके तुलसीदास जी कहते हैं – 'सुमिरौं पवन कुमार'।

चाहना क्या है? पागल भी बिना स्वार्थ के किसी के नजदीक नहीं जाता। इस शंका का समाधान करते हुए तुलसीदास जी अपने भाव प्रकट करते हैं --

"बल बुद्धि विद्या देहु मोहि"" –

हनुमान चालीसा – भावार्थ

"बल" -- तपबल, जपबल, ज्ञानबल, इन्द्रियबल, संयमबल आदि अनेक गुणों के समूह को 'बल' कहा गया है। एक दामबल भी है।

"बुद्धि" – जो वस्तु जैसी है और जिस प्रकार की है वह मिले, मिलने के बाद अहंकार न आए, ईश्वर की प्राप्ति कर सके और काम करा सके उनको "बुद्धि" कहते हैं।

"विद्या" – 'विद्' धातु का प्रयोग 'जानने' के लिए होता है। वेद, वेदांत, साँख्य आदि शास्त्रों के द्वारा पुरुष, प्रकृति और ब्रह्मा का जो वास्तविक रूप प्रतिपादन किया है, शास्त्रोक्त, साधनों द्वारा ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को जो प्राप्त करता है और कराता है उसका नाम 'विद्या' है। 'विद्या' का वास्तविक रूप है – "तर्क का अवलम्बन न हो। केवल साधक को देखकर ही कृपादृष्टि द्वारा अनुभव जन्य साक्षात् कर सके और करता हो।"

"देहु मोहि" – तुलसीदास जी, हनुमान जी, से प्रार्थना करते हुए कहते हैं 'ये तीनों वस्तुएँ (बल, बुद्धि और विद्या) मुझे दीजिए।

""हरहु कलेस विकार"" -- तुलसीदास जी प्रार्थना करते हैं कि बल, बुद्धि और विद्या तो दें, परंतु पाँच क्लेश हैं जो जन्म-जन्मान्तर से जीव के साथ रहते हैं उन्हें हरें।

इन क्लेश और विकारों के द्वारा चित्त भ्रमित होकर सुख रूपी चाँदी को प्राप्त करने के लिए सीप अर्थात् मायावी भोगों का अर्जन कर रहे हैं। न सुख की प्राप्ति होती है, न क्लेश की निवृत्ति होती है।

" क्लेश " पाँच हैं –
अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश।

" अविद्या " – आत्मा के अतिरिक्त जो सांसारिक विनाशशील वस्तु हैं, चाहे वह अपना शरीर हो या बड़े-बड़े महल आदि, उसमें आत्मबुद्धि (अर्थात् यह मेरी है) समझना, जैसे यह शरीर मेरा है, सदा रहेगा, यही 'अविद्या' है।

" अस्मिता " – मोह, यानि संसार की भोग्य वस्तुओं में जो अपनत्त्व बना लिया है, कि यह वस्तुएँ मुझसे छूटनी नहीं चाहिए, उसे 'अस्मिता' कहते हैं।

" राग " – रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द आदि वस्तुओं में जीव को अति आसक्ति हो जाने को 'राग' कहते हैं।

" द्वेष " – जिन संसारी वस्तुओं में हमने सुख की आशा बना ली है, कि अमुक से हमें सुख की प्राप्ति होगी, उसमें जो व्यक्ति बाधा या रूकावट डालता है, उसको 'द्वेष' कहते हैं।

" अभिनिवेश " – जिस वस्तु विशेष में मन ने सुख की कामना बना ली है, कि वह मुझे सुख पहुँचायेगी, उसके छूट जाने या किसी भी प्रकार से दूर हो जाने का भय सामने हो और जीव उसे खोना न चाहे, अपितु उसकी रक्षा करना चाहे, उस भय वाली मनःस्थिति को 'अभिनिवेश' कहते हैं।

उपनिषद् में आया है – " हे साधक! सदा सावधान रहो। जब तक प्राण अंतिम घड़ी में हैं, ये पाँचों 'क्लेश' किसी न किसी रूप में सन्मुख आते हैं और भ्रष्ट कर देते हैं। अंतिम श्वास ईश्वर से विमुख न होने पाये, तब समझना चाहिए कि 'क्लेश' से मुक्ति हुई।

" विकार " – यदि 'क्लेशों' पर विजय प्राप्त कर ली जाए तो 'विकार' अंतिम श्वास तक जीव को अपने अधीन रखना चाहते हैं। श्री हनुमान जी ने बिना जीवों पर कौन ऐसी दया करने वाला है, जो बिना स्वार्थ के ही तुच्छ जीवों के तोतले बोल सुनकर दौड़े आते हैं?

इसलिए तुलसीदास जी हनुमान जी से प्रार्थना करते हैं कि मेरे 'क्लेश' और 'विकार' हरो।

" विकार " छः हैं –

हनुमान चालीसा – भावार्थ

२) गर्भ में अस्तित्व अर्थात् सत्ता का 'अभिमान' कि मैं दुःखी हूँ इससे कब निवृत्त होऊँगा।

३) जन्म के तीसरे दिन पहले जन्म को भूलकर इस माता में 'अस्तित्व' धारण करना, छठे दिन पिता में 'अपनत्व' मानना तथा परिवार के अन्य व्यक्तियों को अपना समझना।

४) 'वर्द्धत्व' को प्राप्त होना अर्थात् अपने को बड़ा समझना कार्य कुशल समझना।

५) अपने आपको 'प्रौढ़' व बुद्धिमान समझना, अपने मित्र, शत्रु आदि बनाने की स्वयं क्षमता रखना।

६) रोग आदि से पीड़ित होने पर अपने को 'क्षीण' समझना, वृद्धावस्था तक अपने आपको चिंतित रखते हुए दुर्बल होते चले जाना, स्वाभिमान को त्याग कर अपने को पराधीन समझना।

७) अंत में 'चिंता मग्न' होता हुआ अपने को सर्वसमर्थहीन जानते हुए अपने भाग्य को कोसता हुआ, अपनी जवानी में किये हुए कर्मों का अभिमान करता हुआ तथा दूसरों के सामने अपनी डींग हाँकता हुआ तड़प-तड़प कर पशु की तरह अनाथ होकर मृत्यु को प्राप्त होना।

" विकारों के स्थान " सात है – चर्म, हड्डी, माँस, विष्ठा, मूत्र, वीर्य और रक्त। इन सातों से जो वस्तु पैदा होती है उसे 'देह' कहते हैं। यह देह ही 'विकारों' को स्थान देता है। इसलिए तुलसीदास जी श्री हनुमान जी से प्रार्थना करते हैं – "हरहु क्लेस विकार ""।

आशा है आप सभी पाठकों को यह संकलन अच्छा व ज्ञान-वर्धक लगा होगा।

हिन्दी भाषा और भारतीय संस्कृति

सिद्धांतों से अवगत कराएँ जिसने भौतिकवाद के कठोर परिणाम को देखा है और एक नई दिशा और दृष्टिकोण की तलाश में है। हम अपने वैदिक सभ्यता को उजागर करेंगे, जो भेदभाव से परे, भाई-चारे, और एकात्मतत्त्व का उद्घोष करते हैं। इसी माध्यम से हम "वसुधैव कुटुम्बकं" जैसे मानवतावादी सिद्धांतों को पुनः नया जीवन दे सकेंगे।

जय भारती

Vizible Difference

NJ State Licensed
4501 Route 42, Ste.3
Turnersville,NJ 08012
856-740-3223

Permanent Hair Removal by Electrolysis
25% off Electrolysis Packages available
TG Friendly

Facials, Vitamin C & Glycolic Peels
Therapeutic Massage

Available by appointment only

Electrolysis is More Than You Think

Tues thru Sat.

माणक काबरा जी स्वयंसेवक सेवाओं हेतु अमेरिकी राष्ट्रपति कार्यालय द्वारा सम्मानित

हिन्दी यू.एस.ए. के समर्थ कार्यकर्ता एवं एडिसन हिन्दी पाठशाला के संचालक श्री माणक काबरा को हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति कार्यालय द्वारा "President ' s Volunteer Services Award for Community Service " उनकी समर्पित समाज सेवा हेतु रजत पदक से सम्मानित किया गया। श्री माणक काबरा हिन्दी यू.एस.ए. संस्था से गत ४ वर्षों से जुड़े हुए हैं तथा एडिसन हिन्दी पाठशाला के सक्रिय एवं समर्पित संचालक हैं। एडिसन हिन्दी पाठशाला जो कि हिन्दी यू.एस.ए. की ही नहीं अपितु पूर्ण उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी हिन्दी पाठशाला है, का सफल सञ्चालन पिछले ४ वर्षों से करते आ रहे हैं। एडिसन हिन्दी पाठशाला, जिसमें कि औसतन ३५० छात्र प्रति वर्ष हिन्दी का प्रशिक्षण लेते हैं, का पूर्ण उतरदायित्व श्री माणक काबरा के ऊपर ही है। छात्रों का पंजीकरण, अध्यापकों को विभिन्न कक्षाओं का आंवटन, अभिभावकों के प्रश्नों एवं अन्य विधाओं का समाधान आदि ऐसे अनगिनत कार्य है जो कि श्री माणक काबरा बखूबी सम्पन्न करते हैं। इन सभी कार्यों को सुचारू रूप से करने की उनकी विलक्षण प्रतिभा अद्भुत ही है। किसी भी विषम परिस्थिति में उनके चेहरे पर कभी किसी तरह की परेशानी नहीं झलकती, हमेशा उन्हें हँसते हुए ही परेशानियों से जूझते हुए पाया है। सभी कार्यों में चाहे वह उनके क्षेत्र का हो या न हो हमेशा उसे पूर्ण करने में तत्पर रहते हैं।

ये सिटि ग्रुप्स (Citi Groups) संस्थान, न्यू यॉर्क में पिछले ६ वर्षों से कंप्यूटर विश्लेषक के पद पर कार्यरत हैं। न्यू जर्सी में पिछले ६ वर्षों से रह रहे हैं। भारत में, राजस्थान से हैं और इनके २ पुत्र भी एडिसन हिन्दी पाठशाला के विद्यार्थी हैं। अपने बच्चों को भी अपनी सभ्यता, संस्कृति एवं परम्पराओं की पूर्ण शिक्षा प्रदान कर रहे हैं ताकि अपनी परम्पराएँ आने वाली पीढ़ियों में स्थानांतरित होती रहे। अत्यंत धार्मिक प्रवृति के, सीधे , स्पष्टवादी एवं नेक व्यक्ति हैं। अपनी व्यस्त दिनचर्या में बहुत समय हिन्दी यू.एस.ए. को देते हैं। एडिसन हिन्दी पाठशाला के सफल सञ्चालन के पीछे इनकी निष्ठा, समर्पण, संकल्प एवं मेहनत प्रमुख भूमिका रखते हैं।

इनकी समग्र नि:स्वार्थ सामाजिक सेवाओं के लिए इनके संस्थान सिटि एवं अमरीकी राष्ट्रपति कार्यालय द्वारा सम्मानित किये जाने पर हिन्दी यू.एस.ए. की ओर से उन्हें हार्दिक शुभकामनायें। नि:संदेह, ऐसे कार्यकर्ता इस संस्था के स्तम्भ हैं।

राज मित्तल जी हिन्दी यू.एस.ए. के सबसे पुराने स्वयंसेवकों में से एक हैं, और उन्हें इस संस्था का संस्थापक सदस्य माना जा सकता है। मित्तल जी १० वर्षों से अविरत हिन्दी की सेवा में संलग्न हैं, एवं जो भी कार्य हाथ में लेते हैं उसे बखूबी पूरा करते हैं। मित्तल जी की निष्ठा और लगन से हिन्दी यू.एस.ए. की एडिसन पाठशाला आज अमेरिका की सबसे बड़ी पाठशाला बन गई है। हिन्दी यू.एस.ए. की प्रतिष्ठा का रहस्य मित्तल जी जैसे स्वयंसेवक हैं।

हिन्दी वयस्क कक्षा की छात्रा के संस्मरण

एडिसन हिन्दी पाठशाला में वयस्कों एवं कामकाजी व्यवसायियों हेतु भी हिन्दी की कक्षाएँ चलायी जाती हैं। यह कक्षाएँ पिछले २ वर्षों से चल रही हैं। इसमें हिन्दी सीखने वाले सभी विद्यार्थी विभिन्न भाषाओं तथा नागरिकता के हैं, जिन्हें हिन्दी सीखने की उत्कट लालसा है। कुछ विद्यार्थी बहु-राष्ट्रीय संस्थानों में कार्यरत हैं, जिनके व्यवसाय में बहुत कार्य भारत में किया जाता है। इस कारण उन्हें भारत में कार्यरत कर्मचारियों या सहकर्मियों से पारस्परिक संपर्क एवं संचार करना होता है। यदि उनसे संपर्क/ संचार आदान-प्रदान में हिन्दी भाषा का प्रयोग किया जाये तो कार्य अति सुगमता से संपन्न होते हैं, तथा हिन्दी भाषा उनके पारस्परिक एवं व्यक्तिगत संबंधों को मधुर एवं दृढ़ बनाने में एक सेतु का कार्य करती है। इन्हीं को ध्यान में रखते हुए, हिन्दी यू.एस.ए. ने एडिसन एवं सोमरसेट हिन्दी पाठशालाओं में वयस्कों की हिन्दी कक्षाएँ प्रारंभ की हैं। यह कक्षाएँ बहुत सफलता पूर्वक चल रही हैं। इसके विद्यार्थी जो कि बड़े संस्थानों में कार्य करते हैं तथा दैनिक जीवन में अत्यंत व्यस्त होते हुए भी हिन्दी कक्षा में समय पर उपस्थित होकर अत्यंत उत्साह तथा आत्मीयता से अनुशासन में रहकर हिन्दी सीखते हैं। यह हम सभी के लिए अत्यंत गर्व की बात है।

मैरी कोनराड

प्रस्तुत आलेख, मैरी कोनराड जो कि एडिसन व्यस्क हिन्दी पाठशाला की छात्रा हैं, के द्वारा लिखा गया है। मैरी, अमेरिका के ही एक अमेरिकन परिवार में जन्मी तथा पली हैं। भारतीय संस्कृति तथा भाषा ने इन्हें बहुत प्रभावित किया है। बहुत लगन एवं उत्साह से हिन्दी सीख रही हैं। अत्यंत कम समय में ही अपनी प्रतिभा, लगन एवं दृढ़-विश्वास द्वारा इन्होंने हिन्दी का बहुत ज्ञान अर्जित कर लिया है। हालाँकि हिन्दी उनके लिए एक कठिन एवं चुनौतियों से युक्त विदेशी भाषा है, परन्तु इनके कथनानुसार, श्रद्धा एवं लगन से सीखने से यह सभी के लिए अत्यंत सरल हो जाती है। अक्टूबर-२००९ माह में जिस दिन हिन्दी पाठशाला में दिवाली पर्व मनाया गया, ऐसा प्रतीत हुआ कि पर्व का सबसे ज्यादा आनंद मैरी ने ही लिया है। भारतीय पारंपरिक पोशाक, साड़ी में उन्हें देखकर सभी आश्चर्यचकित एवं भाव विभोर हो उठे। हमारे इस पर्व में सम्मिलित होकर इतने उत्साह और लगन से इसे मनाने पर इस पर्व की शोभा और भी अनूठी हो उठी थी।

अगले कुछ वर्षों में मैरी की भारत घूमने की इच्छा है। उनका कहना है कि वह भारत जाकर इस सुंदर देश, इसकी संस्कृति और सभ्यता का अवलोकन करना चाहती हैं। उससे पहले हिन्दी बोलने एवं लिखने में भी सिद्धस्त होना चाहती हैं, ताकि वहाँ पर लोगों से हिन्दी में ही बात करके भारत को और वहाँ के जन -सामान्य को और भी नज़दीक से देख पाएँ। - राज मित्तल

मेरा नाम मैरी कोनराड है। मैंने एडिसन हिन्दी पाठशाला, न्यू-जर्सी में वयस्कों हेतु संचालित हिन्दी कक्षा में सितम्बर २००९ से पढ़ना प्रारंभ किया था। किसी विदेशी भाषा को सीखने एवं समझने का यह अनुभव अत्यंत रोचक है।

हिन्दी वयस्क कक्षा की छात्रा के संस्मरण

पाठशाला एवं संस्थान के कार्यकर्ता छात्रों को विभिन्न प्रतियोगिताएँ एवं कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु जिस तरह से उत्साहित एवं प्रेरित करते हैं वह अत्यंत सराहनीय है, तथा सभी छात्रों को इससे हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होती है।

हालाँकि मैं भारतीय नागरिक या किसी भी भारतीय वंश या मूल से सम्बद्ध नहीं हूँ, फिर भी मुझे दिवाली पर्व पर सुन्दर गुलाबी साड़ी एवं भारतीय परिधान पहनकर सभी के साथ पाठशाला में दिवाली मनाने का सौभाग्य मिला, और मैं अपने आपको बहुत गौरवान्वित महसूस करती हूँ। मेरे जीवन में साड़ी पहनने का यह पहला अवसर था, और यह सोचकर मुझे बहुत घबराहट थी कि अन्य व्यक्तियों के सामने में कैसी दिखूँगी और सभी की मेरे प्रति क्या प्रतिक्रिया रहेगी? परंतु मेरी आशा के सर्वथा विपरी, सभी व्यक्ति एवं छात्र आश्चर्य एवं गर्व से मेरी और देख रहे थे, और बहुत से व्यक्तियों ने मुझे अभिवादन किया एवं इसके लिए मेरी प्रशंसा की। यह सब देख कर बहुत अच्छा प्रतीत हुआ।

हिन्दी स्कूल में हिन्दी सीखने का मेरा यह अनुभव अत्यंत सकारात्मक एवं अनूठा रहा है। जन्म से ही अंग्रेजी भाषी होने तथा सम्पूर्ण अंग्रेजी वातावरण में पले- बड़े होने के कारण, हिन्दी इस उम्र में सीखना अपने आप में एक चुनौती भरा कार्य है। हमारे कुशल अध्यापक हिन्दी के प्रत्येक पाठ एवं प्रसंग का विस्तृत विवरण बहुत ही रोचक शब्दों में प्रदान करते हैं जिससे इसे सीखने की हमारी रुचि एवं उत्साह बना रहता है तथा मेरे लिए एक कठिन भाषा होते हुए भी यह एकदम सरल प्रतीत होती है।

मई २०१० को संपन्न होने जा रहे हिन्दी महोत्सव में भाग लेने हेतु हमारी कक्षा में जोर-शोर से तैयारी चल रही है। हम चलचित्र 'लगान' के एक प्रसिद्ध गाने, 'ओ पालनहारे .....' के सामूहिक प्रदर्शन की तैयारी कर रहे हैं। यह एक बहुत ही कठिन कार्य है, और इसे सुन्दर तरीके से इतनी जनता के समक्ष प्रदर्शित करना अपने आप में एक बहुत ही चुनौती का कार्य है, परन्तु इसके लिए हम सभी में अत्यंत उत्साह एवं जोश है। हमें महोत्सव के दिन का बेसब्री से इंतजार है।

हिन्दी यू.एस.ए. के समस्त स्वयं सेवकों एवं अध्यापकों का मैं हृदय से धन्यवाद एवं आभार प्रकट करती हूँ, जो कि जन सेवा का एक महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत निष्ठा, लगन एवं निःस्वार्थ भावना से कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि हिन्दी सीखने का जो मेरा यह संकल्प और स्वप्न है, आप सभी के इस सहयोग से अवश्य ही फलीभूत होगा। मैं इसके लिए सतत् प्रयत्नशील रहूँगी। मुझे सभी से यह कहते हुए अत्यंत गर्व होता है कि मैं हिन्दी स्कूल में हिन्दी सीख रही हूँ। कुछ ही वर्षों में भारत जाकर उस सुन्दर देश को देखने और वहाँ के व्यक्तियों से हिन्दी में ही बात-चीत कर वहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति को अपनी आँखों से साक्षात् देखने और अनुभव करने की मेरी प्रबल इच्छा है।

श्री दिग्विजय म्यूर जैसा मित्र और कार्यकर्ता मिलना दुर्लभ है। दिग्विजय जी की गिनती हिन्दी यू.एस.ए. के सम्माननीय कार्यकर्ताओं में होती है। इन्होंने हिन्दी यू.एस.ए. की सफलता के लिए निरंतर प्रयास किए हैं, और संस्था का नामकरण भी इनके सुझाव से ही हुआ है। हिन्दी यू.एस.ए. यह कामना करता है कि दिग्विजय जी हिन्दी यू.एस.ए. से आने वाले अनेक वर्षों तक जुड़े रहें, और इनका सटीक मार्गदर्शन संस्था को मिलता रहे। दिग्विजय जी हम सभी के लिए एक उदाहरण हैं। जो व्यक्ति बीमारी की हालत में भी हिन्दी के प्रचार -प्रसार की बात सोचता और कहता है, वह नि :संदेह हिन्दी के लिए समर्पित है। आशा है हमारे समाज के वे लोग जो तन, मन, धन से समृद्ध हैं, पर हिन्दी की ओर उनकी दृष्टि कभी नहीं जाती , दिग्विजय जी से कुछ सीख पाएँगे ।

दिग्विजय म्यूर: एक समर्थ कार्यकर्ता एवं एक कुशल कलाकार....

श्री दिग्विजय म्यूर हिन्दी यू.एस.ए. के एक समर्थ एवं निष्ठावान कार्यकर्ता हैं. पिछले १८ महिनों से किसी अज्ञात रोग से ग्रस्त होने की वजह से अस्वस्थ हैं। दिग्विजय जी इस संस्था से बहुत समय से जुड़े हुए हैं। जब वह स्वस्थ थे तो कोई भी बड़ा से बड़ा कार्य अपने जिम्मे लेने में पीछे नहीं रहते थे , एवं अपनी निष्ठा, स्वधर्मिता, एवं समर्पण से हर कार्य को पूरा करते थे। रुग्णावस्था में होते हुए भी इनका मस्तिष्क हमेशा हिन्दी, हिन्दी यू.एस.ए. एवं देश के विकास के बारे में ही सोचता रहता है।

दिग्विजय जी भारत में कानपुर के रहने वाले हैं, १९८० से अमेरिका में रह रहे हैं। इनके तीन बच्चे है, २ पुत्रियाँ (गीतिका, प्रतीक्षा) एवं एक पुत्र आकाश। इनकी पत्नी, श्रीमती भावना म्यूर, एक प्रतिष्ठित संस्थान में कार्यरत हैं। मुँह का बाजा हार्मोनिका (Mouth-organ) बजाने में दिग्विजय जी ने सिद्धहस्तता प्राप्त की है। मुँह से बजाने वाले इस यन्त्र को बजाकर मधुर गीतों की धुनें निकालने का कार्य अति दुष्कर है, मगर दिग्विजय जी इस कार्य को अत्यंत कुशलता एवं सहजता से करते हैं । घंटों तक लगातार हार्मोनिका बजाकर, मधुर गाने एवं संगीत की धुनों से सभी का मन मोह लेना इनकी विशेषता थी । इनके इस शौक की वजह से इन्हें बहुत ख्याति प्राप्त हुई है, तथा हिन्दी यू.एस. ए. से जुड़ने का भी यह माध्यम बना। जब इस संस्था का उदय हो रहा था, तब इसका नाम "हिन्दी यू.एस.ए.", श्री दिग्विजय जी द्वारा ही प्रस्तावित किया गया था , जिसे तुरंत स्वीकार कर लिया गया था ।

हाल ही में इस संस्था के दो कार्यकर्ताओं, श्री माणक काबरा एवं राज मित्तल ने उनसे मिलकर उनके विचारों को लिपिबद्ध किया। उनसे बातचीत के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं।

प्रश्न: हिन्दी यू.एस.ए. के बारे में अपने अनुभव बताइए।

श्री दिग्विजय: हिन्दी यू.एस.ए. एक ऐसी संस्था है जो बिना कोई दिखावा किये अपना कार्य किये जा रही है। इससे जुड़ना एवं इसका एक कार्यकर्ता होना मेरे लिए अत्यंत गर्व की बात रही है। इस धरती पर बच्चों को हिन्दी सिखाकर अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के बीज रोपने का जो कार्य यह संस्था कर रही है, उसके लिए आने वाली पीढियाँ इसकी आभारी रहेंगी ।

प्रश्न: हिन्दी का प्रसार एवं प्रचार प्रभावी ढंग से कैसे किया जा सकता है?

श्री दिग्विजय: जब तक भारतीयों के हृदय से पराधीनता वाली मानसिकता नहीं जाएगी, हिन्दी का भविष्य डावाँडोल ही रहेगा। भारत में जाने पर ऐसा लगता है कि यदि अंग्रेजी में किसी से बात की जाये तो सम्मान मिलता है, मगर हिन्दी में बात करने वाले को लोग एक हेय दृष्टि से देखते हैं। चाहे कोई जेब-कतरा भी हो और अंग्रेजी में बात करता हुआ पाया जाये, तो सभी उसे बहुत सम्मान से देखेंगे, परन्तु यदि एक विद्वान व्यक्ति हिन्दी में बात करे तो कोई उसे किसी प्रकार की आदर नहीं देता है। यह एक विकृत मानसिकता की परिचायक है। भारतीयों को यह मानसिकता छोड़कर इस स्तर से ऊँचा उठना

दिग्विजय म्यूर: एक समर्थ कार्यकर्ता एवं एक कुशल कलाकार....

होगा, तथा विश्व को ये दिखलाना होगा कि हिन्दी विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है, और अपना सर्वोच्च स्थान रखती है। यदि आप जापान जायेंगे तो वहाँ पर सभी को जापानी भाषा ही बोलते पाएँगे। फ्राँस में सिर्फ फ्रेंच भाषा का ही उपयोग वहाँ के निवासी करते हैं, मगर फिर सिर्फ भारत में ही व्यक्ति अंग्रेजी में बोलकर अपने आपको गर्वान्वित महसूस क्यों करते है ? यह हम भारतीयों के लिए एक शर्मनाक बात है । माना की अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होना वैश्विक व्यापार तथा संचार के लिए आवश्यक है, मगर इसके कारण अपनी स्वयं की भाषा का अपमान एवं तिरस्कार सर्वथा अशोभनीय तथा अपनी मानसिक परतंत्रता के लक्षण हैं।

इस दिशा में दूसरा कदम यह होना चाहिए कि भारतवर्ष का नाम विश्व के नक़्शे पर "भारत" होना चाहिए, न की इन्डिया। जिस प्रकार नागरिकों ने बम्बई का नाम बदलवाकर मुंबई, कलकत्ता का कोलकाता, मद्रास का चेन्नई करवा लिया, मगर अब तक किसी ने इन्डिया का नाम भारतवर्ष बदलवाने के लिए पहल नहीं की। यह हमारी पराधीन मानसिकता का एक बहुत बड़ा उदाहरण है । भारत का प्राचीन नाम भारत वर्ष था, जिसे अंग्रेजों ने स्वार्थवश इन्डिया बना दिया क्योंकि इन्डिया शब्द उनके लिए बोलना बहुत आसान था, जबकि भारतवर्ष को मुख से उच्चारित करना अंग्रेजों के लिए बहुत मुश्किल था। मेरा विश्वास है कि हिन्दी यू.एस.ए. के माध्यम से जो छात्र हिन्दी सीखेंगे, उन्हें हमारी सभ्यता, संस्कृति एवं भाषा को सही रूप में पहचानने का अवसर मिलेगा, और भविष्य में नि:संदेह वह भारत का नाम विश्व में इन्डिया से भारतवर्ष बदलवाने में सफल रहेंगे।

हिन्दी को विश्व के नक़्शे पर प्रतिष्ठित स्थान दिलवाने हेतु हिन्दी यू.एस.ए.को चाहिए कि अमेरिकी मूल के जो व्यक्ति हैं, उनके बच्चों को भी हिन्दी का प्रशिक्षण देने का प्रयास करें। अमेरिकी संस्थाओं में जाकर हिन्दी का प्रचार करें, तथा लोगों को हिन्दी पाठशालाओं में प्रवेश लेने हेतु प्रेरित करें। जब अमेरिकी मूल के निवासियों के बच्चे यहाँ पढ़ना प्रारंभ करेंगे तो इसकी प्रसिद्धि कई गुना फैलेगी, तथा ज्यादा बच्चे यहाँ प्रवेश लेंगे।

लम्बे समय से अस्पताल में रहने के कारण, मैं यहाँ नर्सों को हिन्दी के बारे में बतलाता रहता हूँ। कई नर्सों ने मुझसे हिन्दी के बारे में इतना कुछ जानकर हिन्दी सीखने की अभिरुचि दिखाई है ।

प्रश्न: अपनी व्यक्तिगत रुचियों एवं शौक के बारे में कुछ उल्लेख कीजिए।

श्री दिग्विजय: जैसा कि आप सभी जानते हैं, हार्मोनिका बजाना मेरा सबसे बड़ा शौक एवं रुचि रही है। यह एक ऐसा वाद्य यन्त्र है जिसके बजाने वाले इतने सहज नहीं मिलते तथा इसे सीखने तथा कुशलता प्राप्त करने में बहुत परिश्रम करना होता है। अपने छोटे पुत्र, आकाश को भी मैंने बहुत कुछ सिखा दिया है। बहुत कुशल हो गया है वह इसमें। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वाश है कि बड़ा होकर वह जरुर एक दिन इस हुनर में प्रसिद्धि प्राप्त करेगा। अपने पड़ोसी एवं मित्रों के बच्चों को हार्मोनिका सिखाने की मेरी कामना थी, यदि ईश्वर ने चाहा तो अवश्य पूर्ण होगी ।

प्रश्न: हार्मोनिका पर बजाये आपके अनगिनत गानों में से कौन से गाने आपको सबसे ज्यादा प्रिय हैं?

श्री दिग्विजय: मैंने सैंकड़ों गानें हार्मोनिका पर बजाये हैं। बचपन में मेरे बड़े भाई को हार्मोनिका बजाने का शौक लगा था। मगर वह यह कला मुझे सिखाने हेतु बिल्कुल तैयार न थे। मैंने भी मन में ठान ली थी कि मैं यह बाजा बजाना सीख

दिग्विजय म्यूर: एक समर्थ कार्यकर्ता एवं एक कुशल कलाकार....

कर ही रहूँगा। बड़े भाई के घर से बाहर होने के दौरान चुपके-चुपके उनका हार्मोनिका यन्त्र चुराकर बजा लिया करता था। धीरे-धीरे इसका अभ्यास होता गया तथा निपुणता आती गयी। कुछ पुराने गानें जिनका संगीत अत्यंत ही मधुर है, हार्मोनिका पर बजाने में बहुत आनंद आता है। मुझे ये अत्यंत प्रिय हैं, जैसे, जाने वो कैसे लोग थे जिनको (चलचित्र - प्यासा), जिंदगी के सफ़र में गुज़र जाते हैं जो मुकाम (चलचित्र: आपकी कसम), मेरे महबूब क़यामत होगी (मिस्टर एक्स इन बॉम्बे), हम बेवफा हरगिज़ न थे ... (शालीमार).... आदि गीत मुझे अत्यंत प्रिय है।

प्रश्न: आप हिन्दी यू.एस.ए. एवं हिन्दी पाठशालाओं के लिए कोई सन्देश देना चाहते हैं?

श्री दिग्विजय: हिन्दी यू.एस.ए. एक ऐसी संस्था है जो बच्चों में अपनी संस्कृति, भाषा तथा परम्पराओं का विकास कर उन्हें पुनर्जन्म देने का प्रयास कर रही है। मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं इससे जुड़ा। यह निरंतर प्रगति कर विश्व में एक कीर्तिमान स्थापित करे। हिन्दी यू.एस.ए. का यह नारा अक्षरश: सत्य एवं सार्थक है:

भले ही अंग्रेजी में serve करें , पर हिन्दी पर हमेशा गर्व करें।

खाओ तो जानो!

* * * * *

Five Star Dining
At Home
Premium Frozen Meals
DeepFoods.com

पाठशालाओं के अनुभव एक परिचर्चा - रचिता सिंह

सन् २००५ से २०१० के मध्य हिन्दी यू.एस.ए. की संबद्ध पाठशालाओं की संख्या बहुत तेजी से बढ़ी है। श्रीमती रचिता सिंह सन् २००१ से सभी पाठशालाओं को खुलवाने में प्रमुख भूमिका निभा रही हैं। वे लगातार सभी पाठशालाओं के संचालकों और संचालिकाओं से संपर्क बनाए रखती हैं। रचिता सिंह ने इस परिचर्चा द्वारा यह जानने का प्रयास किया कि हिन्दी यू.एस.ए. की सेवाओं का इन पाठशालाओं को क्या लाभ मिल रहा है। इस परिचर्चा में अमेरिका के विभिन्न राज्यों में स्थित ५ पाठशालाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

दुर्गा मंदिर हिन्दी पाठशाला - मेरा नाम पायल कपूर है। मैं ११ वर्षों से न्यू जर्सी में अपने परिवार के साथ निवास कर रही हूँ। मैंने कानून में विद्या ग्रहण की है (LL.M, Master's in Law) । मैंने कुछ वर्ष भारत में वकालत भी की है। मैं १८ वर्षों से भारत से बाहर रह रही हूँ। दुर्गा मंदिर हिन्दी पाठशाला प्रिंस्टन, न्यू जर्सी में है। पता: ४२४०, मार्ग २७, प्रिंस्टन, न्यू जर्सी ०८५४०। दुर्गा मंदिर पाठशाला सन् २००६ में प्रारंभ हुई थी। हिन्दी कक्षाएँ चार वर्षों से चल रही हैं। दुर्गा मंदिर हिन्दी पाठशाला हिन्दी यू.एस.ए. से चार वर्षों से जुड़ी है। हिन्दी यू.एस.ए. की पुस्तकें और पाठ्यक्रम को लागू करने से हमारी पाठशाला सुनियोजित (organized) रूप से चल रही है। हिन्दी यू.एस.ए. संस्था बहुत अच्छा कार्य कर रही है। विदेश में रहते हुए भी हम अपने बच्चों को अपनी भाषा और संस्कृति की जानकारी सरलता से प्रदान कर रहे हैं। हिन्दी यू.एस.ए. की पुस्तकें और पाठ्यक्रम उपयोग करने से हमारी पाठशाला को बहुत लाभ हुआ है। हम हिन्दी यू.एस.ए. के बारे में सभी को बताएँगे।

पाठशालाओं के अनुभव एक परिचर्चा - रचिता सिंह

जैक्सनविल हिन्दी पाठशाला , फ्लोरिडा - मैं, ज्योति चतुर्वेदी, अपने पति एवं दो बच्चों के साथ जैक्सनविल, फ्लोरिडा में रहती हूँ, और सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर कार्यरत हूँ।

मैं पिछले पाँच वर्षों से जैक्सनविल, फ्लोरिडा में हिन्दी कक्षा चला रहीं हूँ। हिन्दी यू.एस.ए. से पिछले चार वर्षों से जुड़ीं हूँ। पहले मुझे हिन्दी पुस्तकों, पाठ व शिक्षण सामग्री का प्रबंध स्वयं करना होता था। मेरे व्यवसायिक एवं पारिवारिक दायित्वों के साथ यह कार्य मेरे लिए कठिन था। हिन्दी यू.एस.ए. की पुस्तकें एवं पाठ्यक्रम को लागू करने से हिन्दी पढ़ाना सरल हो गया है।

अमेरिका में बड़ी हो रही भारतीय पीढ़ी में हिन्दी शिक्षक तैयार करने की दिशा में प्रयास किये जाने की आवश्यकता है ताकि हिन्दी शिक्षण का कार्य भविष्य में अनवरत चलता रहे। हिन्दी यू.एस.ए. ने हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं शिक्षा के विस्तार में सराहनीय कार्य किया है। मैं बहुत गर्व से इस संस्था का उल्लेख करती हूँ।

डेलावेयर हिन्दी पाठशाला - मैं, जयश्री माथुर, अपने पति के साथ डेलावेयर राज्य के मिडिलटाउन नगर की निवासी हूँ। मैंने भारत में हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय से हिन्दी भाषा में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है, और फिर एम. फिल. की पढ़ाई अर्धपूर्ण कर १९७९ में अमेरिका आ आई। मेरी एक पुत्री, पूजा और पुत्र, पुनीत हैं। मैं एम. फिल. करते समय उस्मानिया विश्वविद्यालय में पूर्वस्नातक कक्षाओं की प्राध्यापिका रह चुकी हूँ। मुझे डेलावेयर राज्य के होकेसिन नगर में स्थित पवित्र देवस्थान “हिन्दू टेम्पल ऑफ डेलावेयर" में ईशकृपा से चार कक्षाओं में लगभग अर्धशतक विद्यार्थियों को हिन्दी भाषाध्ययन कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। न्यू यार्क के क्यूनी में पूर्वस्नातक विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने का श्रेय प्राप्त कर

अब लगभग गत पाँच वर्षों से हिन्दी यू. एस. ए. के अंतर्गत हिन्दी कक्षाओं का संचालन कर रही हूँ। गत पाँच वर्षों से मेरा हिन्दी यू. एस. ए. से सम्पर्क रहा है। दो वर्ष पूर्व जब मैं डेलावेयर में हिन्दी कक्षा संचालन के हेतु तत्पर हुई, तब उस समय इन कक्षाओं का पाठ्यक्रम अत्यधिक असंगठित अवस्था में था। लगभग २० विद्यार्थी केवल एक ही कक्षा में हिन्दी भाषा सीखते थे। मैंने हिन्दी यू. एस. ए. की सहायता व अपने न्यू जर्सी, एडिसन व ईस्ट ब्रुंस्विक के संचालन के अनुभव का प्रयोग करते हुए इन विद्यार्थियों को उनकी आयु व हिन्दी भाषा के ज्ञानाधार पर चार कक्षाओं में विभाजित किया और पाठ्यक्रम का पूर्णतः अनुसरण करते हुए यहाँ कक्षाओं को एक अनुशासित रूप दिया। इस प्रकार हिन्दी यू. एस. ए. से मार्गदर्शन प्राप्त कर न केवल विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा के प्रति एक नया उत्साह जागा है, अपितु उनके माता पिता भी प्रभावित हो कर हमारी सहायता कर रहे हैं। हिन्दी यू. एस. ए. आज हिन्दी भाषा के लिए बहुत कुछ कर रहा है, और आशा है कि भविष्य में भी इसी तरह का योगदान करता रहेगा। संबद्ध पाठशाला के मुद्दे के अतिरिक्त मैं हिन्दी यू. एस. ए. के कार्य से संतुष्ट हूँ, और मेरा सर्वदा यही प्रयास रहेगा कि मैं अपने अंतरतः हृदय से हिन्दी यू. एस. ए. का प्रसार करती रहूँ।

पाठशालाओं के अनुभव एक परिचर्चा - रचिता सिंह

इजलिन हिन्दी पाठशाला - मेरा नाम वंदना गुलियानी है। मेरा जन्म भारत के उत्तरांचल राज्य की राजधानी देहरादून में हुआ था। मेरी पढ़ाई मुंबई और नागपुर में हुई। शादी के बाद बहुत वर्ष कुवैत में रही।

२००१ से हम अमेरिका में रह रहे हैं। यहाँ आने के पश्चात् मैंने Princeton Montessori School से teacher's training की, और छ: सालों से यहाँ एक Montessori स्कूल में Kindergarten में पढ़ा रही हूँ। यहाँ मैंने देखा कि भारतीय बच्चे जब वापिस भारत जाते हैं, तो उन्हें भारत में अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी बोलने तथा लिखने में कठिनाई होती है। इसीलिए मैंने हिन्दी की कक्षाएँ चलाना आरम्भ कर दिया।

मैं न्यू जर्सी के इजलिन नगर में कक्षाएँ चलाती हूँ। मैं गत पाँच वर्षों से कक्षाएँ चला रही हूँ। मैं पिछले तीन वर्षों से हिन्दी यू. एस. ए. से जुड़ी हुई हूँ।

हिन्दी यू. एस.ए. की पुस्तकें तथा पाठ्यक्रम लागू करने के बाद मैंने यह अनुभव किया कि अलग-अलग स्तर की ये पुस्तकें बच्चों के लिए अधिक उपयोगी हैं। भारत में छपी पुस्तकों के बदले हिन्दी यू.एस.ए. की पुस्तकें बच्चों को ज्यादा अच्छी लगती हैं, क्योंकि ये यहाँ की दिनचर्या पर आधारित हैं। यहाँ मैं पार्थ बेटे को बधाई देना चाहती हूँ। उसके द्वारा लिखी गई किताब उच्च स्तर के बच्चों को बहुत पसंद आई।

भविष्य में हिन्दी यू. एस.ए. से मेरी यह आशा है कि यह कार्य जारी रहे, जिससे कि हमारे आज के बच्चे भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता से अवगत हों। यहाँ रहने वाला भारतीय बंगाली, मराठी या पंजाबी नहीं है, केवल भारतीय है। हमारी हिन्दी भाषा हमें मिलकर रहना सिखाती है।

हिन्दी यू. एस.ए. के साथ अपने सम्बंध से मैं बहुत संतुष्ट हूँ। यदि किसी पुस्तक की आवश्यकता हो, तो हमें समय पर मिल जाती है। विभिन्न स्तरों के विषय में भी यदि हमें कोई जानकारी चाहिए, तो हिन्दी यू.एस.ए. से सम्बंधित व्यक्ति हमारी सहायता करते हैं।

पाठशालाओं के अनुभव एक परिचर्चा - रचिता सिंह

अटलांटा , जॉर्जिया - मेरा नाम राधा अग्रवाल है। मेरी दो बेटियाँ हैं - बड़ी बेटी नौंवी कक्षा में है, एवं छोटी बेटी तीसरी कक्षा में है। मैंने अर्थशास्त्र में एम. ए. हापुड़ से किया है।

मेरा नाम रीतू मेहता है। मेरे दो बच्चे हैं - बड़ी बेटी चौथी कक्षा में एवं छोटा बेटा प्री-स्कूल में है। मैंने बी. कॉम. जबलपुर से किया है।

हम दोनों पिछले चार वर्षों से अटलांटा (केनेसा) में हिन्दी कक्षाएँ चला रहे हैं। मुझे अपनी देवरानी से हिन्दी यू. एस. ए. के बारे में जानकारी मिलने पर रीतू को बताया, और रचिता जी से संपर्क किया। तब से हम हिन्दी यू. एस. ए. से जुड़े हैं।

हिन्दी यू. एस. ए. की पुस्तकों से हमें और हमारे छात्रों को उचित मार्गदर्शन मिला है। पाठ्यक्रम लागू करने के बाद छात्र अपनी उम्र और स्तर के अनुरूप हिन्दी की शिक्षा ले रहे हैं। पाठ्यक्रम लागू करने से छात्रों और हमारे लिए परीक्षा की तैयारी काफ़ी सरल हो गयी है। हिन्दी यू. एस. ए. के द्वारा आयोजित परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ा है। ट्रॉफ़ी और सर्टीफिकेट देखकर बच्चों में मेहनत करने की इच्छा जागृत होती है।

आशा है हिन्दी यू. एस. ए. भविष्य में भी हमारी कक्षाओं का इसी तरह से मार्गदर्शन एवं और लोगों को हिन्दी पढ़ने और पढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करती रहेगी।

हम हिन्दी यू. एस. ए. के साथ अपने संबंधों से संतुष्ट हैं। हमें दूरभाष एवं ई-मेल से सभी जानकारी समय पर मिलती रहती है। हमने इस संस्था के प्रचार में बहुत कार्य किया है,

एवं भविष्य में और भी आगे बढ़ाने का प्रयत्न करेंगे। हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए हिन्दी यू एस. ए. को हमारा पूरा योगदान मिलेगा।

डा. शिव और सुधा अग्रवाल जी मॉन्टगोमरी हिन्दी पाठशाला के संचालक हैं। आप दोनों प्रथम महोत्सव से पंजीकरण की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। आप दोनों कविता प्रतियोगिता में निर्णायकों को मदद करते हैं।

मॉन्टगोमरी हिन्दी पाठशाला

मॉन्टगोमरी हिन्दी पाठशाला का सुचारू रूप से चलने का यह प्रथम वर्ष है जो कि मॉन्टगोमरी अपर मिडिल स्कूल में शुक्रवार को सांय ७ से ८ बजे तक चलती है।

इस वर्ष स्कूल में ७२ बच्चे हैं और ४ स्तरों (कनिष्ठ, प्रथमा-१, प्रथमा-२, मध्यमा-१) की कक्षाएँ चलती हैं। प्रत्येक कक्षा में २ से ३ अध्यापक / अध्यापिकाएँ हैं। सभी बहुत ही गुणी और मेहनती शिक्षिक/शिक्षिकाएँ हैं, और प्रत्येक शुक्रवार को समय पर आकर बहुत ही निष्ठा और परिश्रम से बच्चों को पढ़ाती हैं।

हम हिन्दी यू.एस.ए. से पिछले आठ वर्षों से जुड़े हुए हैं परंतु हमें पाठशाला संचालक का कार्य पहली बार करने का अवसर प्राप्त हुआ है। हमारा सौभाग्य है कि हमें आज संचालक के रुप में मॉन्टगोमरी हिन्दी पाठशाला का कार्य दिया गया है। हमारी पाठशाला के अध्यापक / अध्यापिकाएँ / सहयोगी कार्यकर्ता बहुत ही सहयोग देते हैं। हम सभी एक परिवार की भाँति कार्य करते हैं। हमें विश्वास है कि हमारी मॉन्टगोमरी पाठशाला में हिन्दी एक कोर्स के रूप में अवश्य आयेगी।

हमारी पाठशाला के कुछ अध्यापक/अध्यापिकाओं एवम् सहयोगी कार्यकर्ताओं के बच्चे मॉन्टगोमरी हिन्दी पाठशाला में पढ़ते भी नहीं हैं, फिर भी वह पाठशाला में सहयोग देते हैं। हमारे विद्यालय के बहुत से अभिभावक भी हर समय अपना योगदान देने के लिए तत्पर रहते हैं। हम उन सभी को धन्यवाद देना चहते हैं।

हमने अपने स्कूल के बच्चो से हिन्दी के बारे में कुछ सवाल किये उनके कुछ रोचक उत्तर नीचे दिये हुए हैं।

प्रश्न १ : आपने हिन्दी सीखना क्यों आरम्भ किया?
उत्तर : यह भारत की राष्ट्रीय भाषा है और मैं भारत से सम्बंध रखता हूँ – अॅनमर्त्य मनि

मैंने हिन्दी सीखना इसलिए आरम्भ किया क्योंकि यह मेरी मातृभाषा है, और मैं इसको भी उसी तरह से बोल तथा लिख पाऊँ जैसे मैं अंग्रेजी में बोल और लिख सकता हूँ। यह हमको भारत जाने पर भी सभी रिश्तेदारों से बातें करने में सहायता करती है – आकाश बगारिया, पूजा जैन, नेहा साबू, मेहूल सिंह, स्रीया छुगानी, पल्लवी सम्बासिवन, अनिका बगारिया।

मेरी माताजी ने मुझे हिन्दी सीखने के लिये कहा, और मैंने सोचा कि यह एक और दूसरी भाषा सीखने का अच्छा अवसर और अनुभव रहेगा। – चरिता मंतोरा, रश्मि अमलज़ारी, अखिल छुगानी

मैं हिन्दी और अच्छी तरह से सीख सकूँ।- निकिता त्रिपाठी।

तेलुगु के अलावा, कोई अन्य भाषा मैं सीखना चाहता था। – विनीत पासुमर्ति

मैं स्वयं हिन्दी सीखने के लिये और मेरे परिवार के सभी सदस्यों को हिन्दी सिखाने के लिये हिन्दी शिक्षण में भर्ती हुई। – निवेदिता सिवाकुमार

मैं अपने परिवार के साथ हिन्दी में बात करने और हिन्दी फ़िल्में देखने के लिये हिन्दी सीखना चाहती थी। और मुझे मालूम था हिन्दी सीखना मुझे अच्छा लगेगा। – समिका

मॉन्टगोमरी हिन्दी पाठशाला

हरिहरन।

प्रश्न २ : आपका हिन्दी सीखने का अनुभव कैसा रहा और हिन्दी आपकी किस तरह सहायता करती है?
उत्तर : मुझे लगता है कि हम अब भारत में बहुत से लोगों से आसानी से कर सकते हैं, और उनको अच्छी तरह से समझ भी सकता हैं। दूसरी भाषा का आना काम करने में भी सहायक होता है। – अॅममर्त्य मनि, पल्लवी सम्बासिवन

बड़ी होकर जब मैं भारत में काम करूँगी तब हिन्दी भाषा जानने का कौशल बहुत काम आयेगा। – निवेदिता सिवाकुमार

मैं हिन्दी फिल्म बिना "सबटाइटल" के आसनी से देख और समझ सकती हूँ। – चरिता मंतोरा, रश्मि अमलज़ारी, निकिता त्रिपाठी।

हिन्दी शिक्षण से मुझे एक नयी भाषा सीखने में मदद मिली है। – समिका हरिहरन

प्रश्न ३ : हिन्दी कक्षा तथा हिन्दी यू.एस.ए. के बारे में आपको सबसे अच्छा क्या लगता है? अपने सुझाव दीजिए और टिप्पणी कीजिए।
उत्तर : मुझे नयी कविता और गाने सीखना तथा प्रतियोगिता एवम् महोत्सव में भाग लेना अच्छा लगता है। यह हमें हमारी संस्कृति, भाषा और दूसरी हिन्दी पाठशाला के बच्चों से मिलने में सहायता करता है। – अनिका बगारिया, अॅममर्त्य मनि, पल्लवी सम्बासिवन, मेहूल सिंह, अॅबमर्त्य मनि

हिन्दी विद्यालय एक घंटे से ज्यादा का नहीं होना चाहिये, गृहकार्य ३० मिनिट से ज्यादा का नहीं होना चाहिए तथा धर्म के बारे में भी सिखाना चाहिए। – आकाश बगारिया

हिन्दी विद्यालय शुक्रवार को न होकर किसी और दिन होना चाहिये। जब हमारे सभी दोस्त खेल रहे होते हैं, हम हिन्दी पढ़ रहे होते हैं। – नेहा साबू, पूजा जैन, रश्मि अमलज़ारी

कम गृहकार्य, ज्यादा समय हिन्दी बोलने पर तथा कुछ समय हिन्दी में खेल भाषा से सम्बन्धित खेल खेलने पर लगाना चाहिये, इससे हिन्दी बोलने और सीखने में बहुत सहायता मिलती है। – निकिता त्रिपाठी, चरिता मंतोरा, स्त्रीया छुगानी

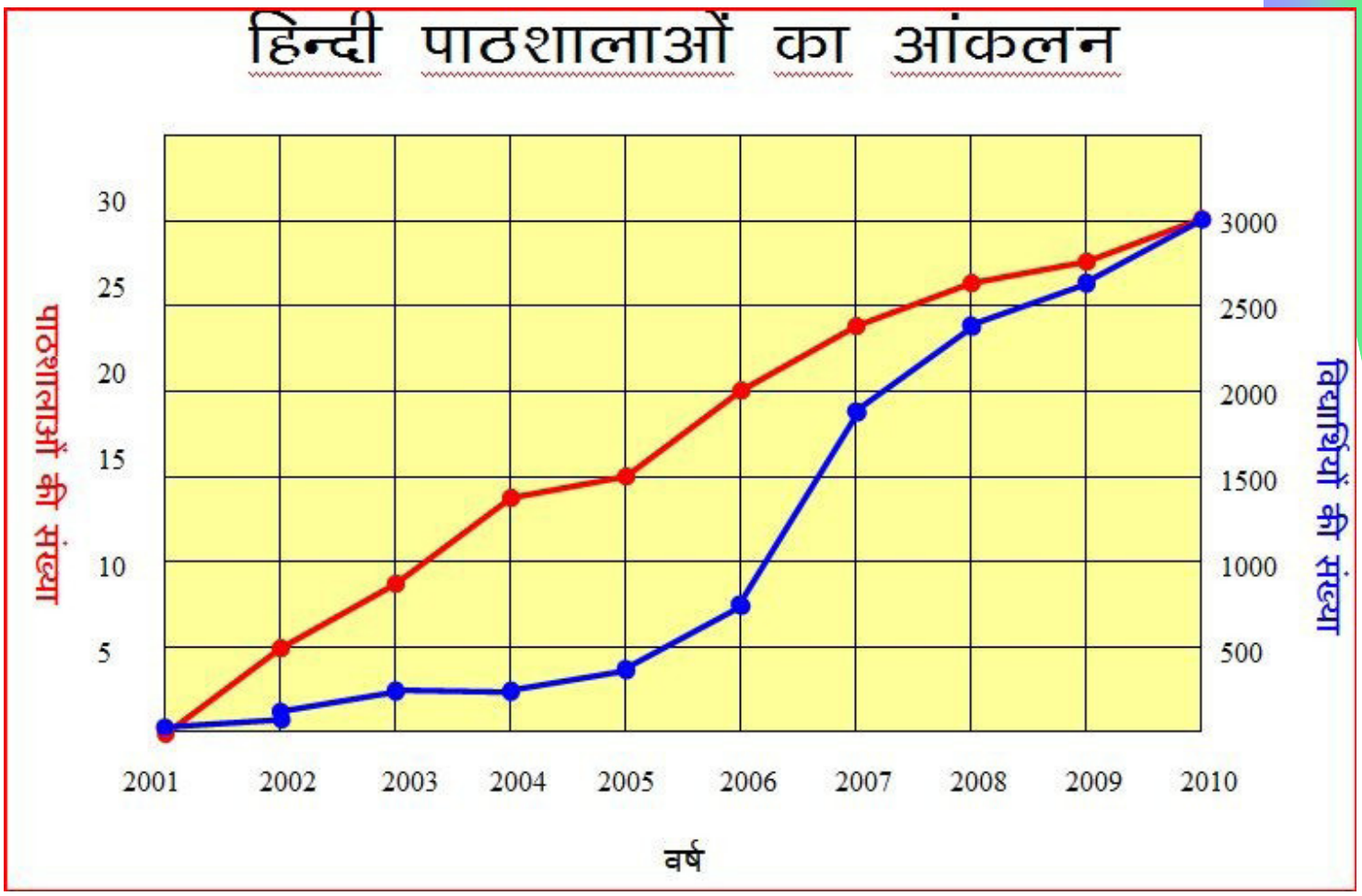

ऊपर दिए गए चार्ट में हिंदी यू.एस.ए. पाठशालाओं की प्रति वर्ष प्रगति को दिखलाया गया है। इस चार्ट को देख कर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि हिंदी पाठशालाओं की संख्या नियमित रूप से बढ़ती रही है। बच्चों को हिंदी पढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य इस बड़े स्तर पर अमेरिका में पहली बार किया गया है। इस कार्य का प्रमुख उद्देश्य भारतीय मूल के बच्चों में भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था बनाए रखना और उन्हें भारत से जोड़े रहना है। इसके अतिरिक्त भारत और अमेरिका के संबंधों में मजबूती लाने के लिए हिंदी का प्रचार-प्रसार अमेरिका में करना बहुत आवश्यक है। हिंदी यू.एस.ए. अमेरिका के विद्यालयों में हिंदी को ऐच्छिक भाषा के रूप में लाने के लिए भी सक्रिय रूप से कार्यरत है।

हिंदी यू.एस.ए. के सामाजिक कार्य की सफलता के पीछे इसके कर्मठ कार्यकर्ताओं के समर्पण, निष्ठा, और बलिदान की झाँकी सहजता से हिंदी यू.एस.ए. के विभिन्न कार्यक्रमों और हिंदी कक्षाओं में देखी जा सकती है। परंतु यह कार्य सारे समाज के लिए है, और समाज में रहने वालों के सहयोग के बिना यह कार्य पूरा नहीं किया जा सकता। हिंदी यू.एस.ए. समाज के सम्मानित एवं प्रतिष्ठित नागरिकों से अनुरोध करता है कि वे आगे आएँ और हमें यथोचित सहयोग दें, जिससे हम अपनी युवा पीढ़ी में उनकी भाषा और सांस्कृतिक धरोहर के प्रति सम्मान की भावना पैदा कर सकें।

कविता प्रतियोगिता २०१० के निम्न प्रतियोगी (निर्णायक गणों के साथ) **अपने स्तरों में विजेता रहे हैं और महोत्सव के अंतिम चरण में भाग लेंगे** (सारे विजेता चित्र में उपस्थित नहीं हैं)

कनिष्ठ-१: साम्या गुप्ता-एडिसन, कपिला डी माने और ऐशानी कपिल-ईस्ट ब्रुन्सविक, संजना गोयल-चेरी हिल, आर्या शुक्ला-पिस्कैटवे, अर्नव देशपांडे और रुचा कप्शिकर-साउथ ब्रुन्सविक, जेन्या मेंदिरत्ता-वुडब्रिज, दिशा चोपड़ा-कनेक्टिकट, श्रिथिक सेकर -लारेंसविल

कनिष्ठ-२: सिया सिंधिया और शिल्पी अग्रवाल-एडिसन, महाति अगुमामिडि-लारेंसविल, कृष्णजीत खन्ना और ध्रुव गुप्ता -मोनरो, जैसमीन जुल्का-चेरी हिल, वर्षिनि विमल और श्रेया अरविन्दक्षन-फ्रैन्कलिन, विशाखा तिवारी-साउथ ब्रुन्सविक, श्रेया अम्बाति-वुडब्रिज

प्रथमा-१, ९ वर्ष से कम: अथिलेश कुप्पु कार्तिकेयन-जर्सी सिटी, मनीषा पार्थसारथी और श्रीनिधि अयालासोमयाजुला-ईस्ट ब्रुन्सविक, हरी शंकरन और संजना विट्ठल -प्लेंसबोरो, प्रेमांकुर चक्रबोर्ती -पिस्कैटवे, शनाया सूद-फ्रैन्कलिन, संजना वर्मा-होलमडेल, रिया सेन और श्रुति राघवन-साउथ ब्रुन्सविक, सुधीश देवाडिगा -चेरी हिल

प्रथमा-१, ९ वर्ष से बड़े: सुमेधा दुबे-एडिसन, श्रेयस कैलाशनाथन-ईस्ट ब्रुन्सविक, श्रेय गुप्ता-लारेंसविल, सौभाग्य बल्यन-लारेंसविल, सिमरन जसनानी-पिस्कैटवे, नेहा लुंद-पिस्कैटवे, अन्विता शास्त्री और तेजस केलकर-साउथ ब्रुन्सविक, श्याम सुन्दर सुब्रामनियम और श्रेया चोपड़ा -कनेक्टिकट

प्रथमा-२, ९ वर्ष से कम: ज्योति काबरा-एडिसन, सान्या जैन-एडिसन, शुभम बाणावालिकर -चेरी हिल, अन्तरिक्ष तुल्श्यान-जर्सी सिटी , अर्जुन अय्यर -जर्सी सिटी , अमीषा टंडन -जर्सी सिटी, प्रज्ञा चक्रबर्ती -पिस्कैटवे, सारिशा यादव-फ्रैन्कलिन, अथर्व कोष्टी और नंदन शास्त्री-साउथ ब्रुन्सविक

प्रथमा-२, ९ वर्ष से ज्यादा:आदित्य पार्थसारथी-ईस्ट ब्रुन्सविक और आरजू कपिल-ईस्ट ब्रुन्सविक, सन्नी उपाध्याय -लारेंसविल, अमया गुलाटी और श्रेया किलम्बी-मोनरो, ऐश्वर्या माधिकर; गौरव पाठक; पर्णिका पुरी और साहिब श्रीवास्तव-प्लेंसबोरो, प्रियंका मेहता-फ्रैन्कलिन, दिविज गुप्ता-वुडब्रिज

मध्यमा -१: निकिता त्रिपाठी-मॉटगोमेरी, अर्नव गुप्ता-एडिसन, हृथिका गणेश -प्लेंसबोरो, ईशा शर्मा -पिस्कैटवे, कुशाग्र माथुर-फ्रैन्कलिन, इशानी रंजन; कृति सिन्हा; मेघा चौधरी; मिहिका थपलियालब और टान्या जैन-साउथ ब्रुन्सविक

पाठशालाओं की शिक्षिकाओं, शिक्षकों और कार्यकर्ताओं के चित्र (नाम बाएँ से)

लारेंसविल श्रुति बाल्यन, मीना राठी, प्रभा अग्रवाल, निधि जोशी, जयश्री कलवचवाला, माधवी मिश्रा, स्वाति नवाड़े, सुनीता कलपटापु, रत्ना पराशर, श्वेता अग्रवाल, रितु शास्त्री, रीमा वर्मा, चेतना शर्मा, कोमल अग्रवाल,सन्दीप अग्रवाल

प्लेंसबोरो शिक्षिकाएँ-ममता त्रिवेदी, प्रीती माटा, ममता पुरी, मीनू कोहली, अनामिका सहाय, पूजा पॉल, पूजा संगल, अलका मिश्र, सुरेखा मन्धानिया, अराधना दास रश्मी पाणी, मुकुल पूवन, मोनिका मिर्ग, शालिनी भयाना
शिक्षक- विकाश ओहरी, रोबिन दास, बिजय कुवर, गुलशन मिर्ग, सुमीत सहाय, कुमार विक्रम, संजय भयाना

वुडब्रिज रवीना कार्लोस, माधवी बथुला, अर्चना कुमार, अनिता गुप्ता, ज्योत्सना सिन्हा, आदित्य कुमार

मोनरो

चेरी हिल/होल्मडेल देवेन्द्र सिंह, संजय पटेल, पार्थ सिंह परिहार, रमेश गुप्ता, श्वेता गुप्ता,रचिता सिंह, सुषमा कुमार, निनिता पटेल

ब्रिजवाटर निशा वर्मा, शीला काकवानी, मनीषा जन्जीखेल, कैलाश देशमुख, मंजू भाटिया

साउथ ब्रुन्सविक विजयश्री राव ,सपना हरजानी, घनश्याम मटरेजा, संजय कोश्ती, प्रतीक जैन , उमेश महाजन , अनीता मटरेजा, पद्मजा पेद्दाडा , गीता गुट्टा, निहारिका श्रीवास्तव, साधना जैन , रंजना गुप्ता, रश्मि बगडिया, शिखी थपलियाल, शिल्पा महाजन, पुनीता वोहरा

मान्टगमरी संजना मेहता, संगीता जैन, नागेश खरिदी, मनोज जैन, पारूल वडोदरिया, अद्वैत तारे, डिम्पल जैन, राजेश शाह, ममता त्रिपाठी, शिव अग्रवाल, पूनम तलरेजा, सुधा अग्रवाल

फ्रैन्कलिन पूर्वी भट्ट, गोविन्द सिंह, राजश्री अंचलिया, भूपेन्द्र मौर्य, मंजू मौर्य, रंजिता सिंव्हल, पद्मजा कड़ियाला, निधि राजपूत, विधु गोयाल, चेतना दोषी, अमितु मेहता, दीपा शर्मा, शुभेन्दू सिंह

एडीसन प्रीती जैन, निलीमा टंडन, अनुजा काबरा, अनुभा अग्रवाल, प्रीती शर्मा, वासु अग्रवाल, प्रिया तलाठी, अर्चना गुप्ता, आकांक्षा आर्य, अरुंधती तारे,, दिव्या लाल, सरिता मिश्रा, प्रीती शुक्ला, प्रतिभा निच्चवाड़े, मोनिका गुप्ता, रश्मि सुधीर, वंदना अग्रवाल, ज्योति गुप्ता, शशि आर्य, किरण सैनी, देवेन्द्र सिंह, राज मित्तल

पिस्कॉटवे बाएँ से: राकेश पुरिल, सत्यमित्र आर्य, सीमा अग्रवाल, रेनू पहाडिया, चंद्रा मोहनकुमार, वीना त्रिपाठी, संज्योत टाटके, रसिका टाटा, सोनी जिंदल, सुमन दहिया शाह, सोनिता वर्मा, उषा भिसे, गायत्री भिसे, मंजू उके, कल्पना शर्मा, वाणि गिरीश, नूतन लाल, दीपक लाल

जर्सी सिटि वैशाली कुलकर्णी, मकरन्द जानी, संध्या तुलसियन,मुरली तुलसियन

ईस्ट ब्रुन्सविक कोमल मल्होत्रा, मायनो मुर्मु, सारिका पटेल, गुरमीत विर्दी, ललित चलू, गीता टंडन, वंदना पलरेचा, अनीता वार्ष्णेय, सविता नायक

कविता प्रतियोगिता २०१० के विजेता पृष्ठ ...से आगे

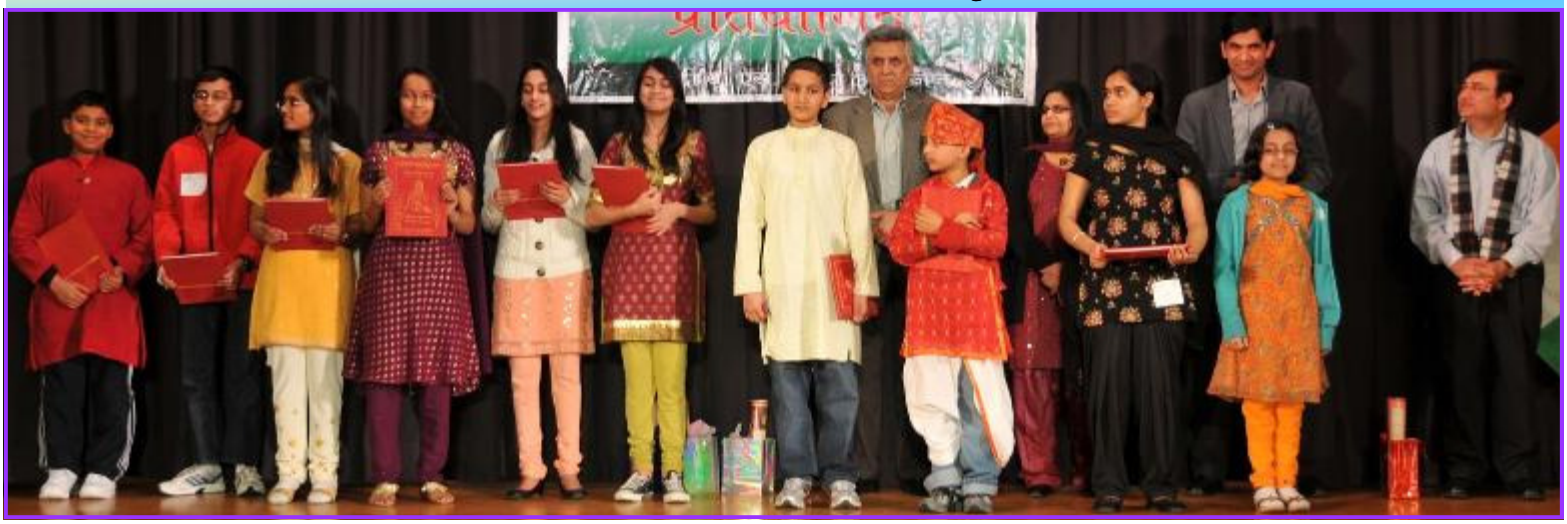

मध्यमा-२: पूजा अग्रवाल और आस्था सैनी-एडिसन, रितेश दाश और संशल भयाना-प्लेंसबोरो, केन्द्र सिंह और हर्ष मालीवाल-फ्रैन्कलिन, अनन्या गुट्टा; मनाली महाजन और संजना मट्टा-साउथ ब्रुन्सविक, अंकुर पोद्दार-वुडब्रिज

उच्च स्तर:संजना शास्त्री; समृद्धि उप्पलदड़ियम; प्राची मक्कड़; और सूर्य मक्कड़-एडिसन, सोंधायनी मुर्मू-ईस्ट ब्रुन्सविक, प्रियंका चटर्जी -चेरी हिल; वैष्णवी गोपालकृष्णन; और रश्मि देवाडिगा-चेरी हिल, साची मतरेजा-साउथ ब्रुन्सविक, तनवी बनोटा-वुडब्रिज

कोलाज :एक अनूठी प्रतिभा

कलाकार – पार्थ सिंह परिहार यहाँ लगे इन चित्रों को देखकर यह अनुमान लगाना कठिन है कि यह बच्चे खुचे पुराने कागजों को विभिन्न आकार में फाड़कर या काटकर बनाए गए चित्र हैं। इस प्रकार की कलाकृति को कोलाज कहते हैं।

प्रसिद्ध कलाकारों ने भी इन कलाकृतियों को देखकर दाँतों तले उँगली दबा ली। पहले तो विश्वास करना कठिन है कि १४ वर्ष का एक बालक इतने धीरज वाला काम कर सकता है। जी हाँ, यहाँ पर एक चित्र उसी बालक का है। बिल्कुल ठीक पहचाना आपने। यह काम पार्थ सिंह परिहार का ही है। अपनी पढ़ाई में शिखर पर होने के साथ-साथ पार्थ एक अच्छा कलाकार भी है। अपना यह चित्र उसने अपनी ही एक फोटो को देखकर आठवीं कक्षा में बनाया था। यह चित्र केवल पार्थ का चित्र ही नहीं है, बल्कि उसके व्यक्तित्व की झलक को भी इसमें स्पष्ट देखा जा सकता है। इसमें उसके प्रिय स्थानों, भोजन, रुचि आदि की झलक भी देखने को मिलती है।

दूसरी कलाकृति पार्थ ने १६ वर्ष की आयु में भारत में बनाई है, जब वह ग्रीष्म कालीन अवकाश मनाने अपने नाना-नानी के यहाँ गया था। उसी दौरान पार्थ की एक आँटी का जन्मदिन पड़ा और पार्थ ने उन्हें अचम्भित करने वाला यह उपहार दे डाला। इस कोलाज में आभूषणों और चेहरे के भावों को जिस सुंदरता से तराशा गया है, उसे देखकर विश्वास करना कठिन हो जाता है कि यह कोलाज है। कोलाज में सामान्यत: इस प्रकार की बारीकियाँ देखने को नहीं मिलतीं। शाबाश पार्थ! हमें तुम पर गर्व है।

श्रीमती मालती गुप्ता जी हिन्दी पाठशाला, कनेक्टिकट में शिक्षिका हैं। आपने एम. ए. (हिन्दी), मुंबई विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में किया है। आप राष्ट्रभाषा 'रत्न' की परीक्षा में सर्वप्रथम आयीं थीं। आपने भारतीय रिजर्व बैंक में २० वर्षों से अधिक काम करते हुए कई बार हिन्दी सप्ताह में हिन्दी भाषण प्रतियोगिताओं में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया है। आपने १९८६ में दिल्ली में हुए तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिस्सा लिया था।

कनेक्टिकट की हिन्दी पाठशाला का प्रथम वर्ष – प्रथम प्रयास

अभी कुछ ही महीनों पहले कनेक्टिकट के ट्रंबल नगर के ट्रंबल हाईस्कूल में हिन्दी पाठशाला का प्रारम्भ हुआ है। संचालक श्री संजीव वाधवा के कुशल नेतृत्व में कनिष्ठा-१, कनिष्ठा-२, प्रथमा -१ तथा वयस्कों की कक्षा मिलाकर ४ कक्षाएँ चल रही हैं। इसको लेकर सभी बच्चों में, शिक्षिकों में, शिक्षिकाओं में तथा अभिभावकों में बड़ा ही उत्साह है। सप्ताह भर सभी को सोमवार की शाम का इंतजार रहता है। शाम होते ही हिन्दी सीखने व सिखाने का हर्ष सभी को सहज ही खींच लाता है। बच्चे तो बहुत ही लालायित रहते हैं, तथा उनमें समय से पहले पहुँचने की होड़ सी लगी रहती है। उनके इस हर्षोल्लास में अभिभावक व शिक्षक सहज ही डूब जाते हैं।

अभी हाल ही में हिन्दी यू.एस.ए. के हिन्दी अभियान के तहत कविता प्रतियोगिता की घोषणा हुई। शिक्षक व शिक्षिकाओं ने कक्षा में जैसे ही इसकी सूचना अपनी-अपनी कक्षाओं में दी, बच्चों व अभिभावकों ने कविताएँ ढूँढनी आरम्भ कर दीं। शिक्षक व शिक्षिकाओं ने भी उनके प्रयास में अपना योगदान दिया। पाठशाला के वरिष्ठ शिक्षक श्री बालकृष्ण शर्मा जी ने बच्चों के स्वभाव व आवाज के अनुरुप कविताओं का चुनाव किया। प्रथम वर्ष होने के कारण हिन्दी कविता को अंग्रेजी लिपि से पढ़कर बोलने का प्रयास किया गया।

प्रत्येक सप्ताह हिन्दी पाठशाला के निर्धारित समय से एक घंटा पहले मिलना तय हुआ। इस समय में सभी प्रतियोगी विद्यार्थी व सभी शिक्षक, शिक्षिकाएँ मिलकर बारी-बारी से कविता पाठ का अभ्यास करवाते थे। मैं उनके उच्चारण पर ध्यान देती, और एक-एक शब्द को कई-कई बार बुलवाती, तथा शर्मा जी उनकी अभिनय शैली की बारीकियों पर ध्यान देते। चार सप्ताहों के प्रयास के बाद आखिरी सप्ताह में उनके मंच प्रस्तुतिकरण पर भी ध्यान दिया गया। दिन-रात एक करके सबने कविता याद की। सही उच्चारण व अभिनय के साथ मंच पर प्रस्तुत करने की हर रिहर्सल में प्रत्येक विद्यार्थी ने हमारे प्रोत्साहन व परिश्रम में अपना सहयोग देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इन सबमें अभिभावकों का सहयोग भी सराहनीय रहा।

प्रतियोगिता के दिन हम सब बहुत ही उत्साह से न्यूजर्सी पहुँचे। वहाँ इतने सारे बच्चों को देखकर मन में उत्साह की लहर दौड़ गई, और लगा हम सचमुच कोई अच्छा काम कर रहे हैं। इन नन्हें-मुन्हें बच्चों व उभरती युवा पीढ़ी को उनकी अपनी राष्ट्रभाषा से परिचय करवाकर हम सही मायने में उन्हें अपने देश से व संस्कृति से जोड़ रहे हैं। इससे न केवल उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा अपितु अपने देश के प्रति सम्मान भी पैदा होगा।

कविता प्रतियोगिता अपने निर्धारित समय से शुरु हो चुकी थी। मैं उस माहौल में उमंग की झलक अपने सभी बच्चों, शिक्षकों व अभिभावकों के चेहरों पर देखकर आनंदित हो रही थी। सबसे पहले कनिष्ठा -१ श्रेणी का कविता पाठ आरम्भ हुआ। हमारी पाठशाला की ६ वर्षीया दिशा चोपड़ा ने हिस्सा लिया था। दिशा को प्रारम्भ से ही अपनी कविता में बड़ी दिलचस्पी थी। जब पहली बार उसने मुझे अपनी कविता सुनाई थी तो मैंने उसे कुछ अभिनय बताकर कहा था कि इस तरह अभिनय के साथ गाओगी तो अच्छा लगेगा। उसने अगली बार अभिनय के साथ वह कविता सुनाई तो सबने बहुत प्रशंसा की। फिर तो उसमें आत्मविश्वास आ गया कि मैं अच्छे से अच्छे ढंग से अपनी कविता सुनाऊँगी। जब मंच पर उसने अपनी कविता पूरे उत्साह व आत्मविश्वास के साथ मधुर बोली में प्रस्तुत की तो सभी मंत्रमुग्ध हो गए। देखते ही देखते दिशा चोपड़ा अपनी श्रेणी में विजयी घोषित हुई और मई में होने वाले महोत्सव के

कनेक्टिकट की हिन्दी पाठशाला का प्रथम वर्ष – प्रथम प्रयास

लिए चुनी गई। हम सभी बहुत प्रसन्न थे अपनी पहली विजय पर।

इसके पश्चात् प्रथमा – १ श्रेणी के बच्चों ने कविता पाठ किया। न्यूजर्सी के बड़े सारे बच्चों ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। जयशंकर प्रसाद, मैथिली शरण गुप्त, हरीवंशराय बच्चन जैसे उच्च स्तर के कवियों की कविताएँ उन कम उम्र के बच्चों ने सुनाईं। अपने जीवन काल में मैंने इन कवियों की अनेकों रचनाओं का आनंद लिया है लेकिन इन बच्चों के मुख से सुनकर मन भीतर तक सिहर गया।

कुछ समय के पश्चात् कनेक्टिकट के बच्चों के नंबर की पुकार हुई। उन्हें स्टेज के पिछले दरवाजे के पास लाईन में खड़ा होने के लिए कहा गया। हम सब उनके साथ वहाँ पहुँचे। शर्मा जी ने सब बच्चों को प्रोत्साहित किया व उनके फोटो खींचे। तत्पश्चात् मैंने वहाँ जो दृश्य देखा वह मैं कभी नहीं भूलूँगी। बच्चों ने अपनी-अपनी कविताएँ याद करना आरम्भ कर दिया। कविता के साथ-साथ अपनी अभिनय शैली को भी परखा। उनके इस प्रयास से ऐसा महसूस हुआ कि उनके मन में कितनी ललक है अपनी कविता को और अच्छे रूप से प्रस्तुत करने की।

सबने बारी-बारी से अपनी कविता मंच पर प्रस्तुत की। प्रिया गुप्ता ने अपनी कविता “जहाँ-जहाँ हम को फूलों की सी कोमलता व भंवरों की सी अल्हड़ता" के अनुरुप ही प्रदर्शित किया। श्यामसुन्दर ने अपनी तेज तर्रार आवाज में सुभाष चंद्र बोस की देशभक्ति की जोशीली कविता "चलो दिल्ली" सुनाई। श्रवण वाधवा ने “हिम्मत करने वालों की हार नहीं होती“ इस कविता द्वारा हिम्मत व दृढ़ता ही विजेता की निशानी है इसका ऐलान किया। पृथ्वी महेश ने “नए जमाने का बंदर“ इस कविता द्वारा पुरानी कविता में नए जमाने के व्यंग्य को बड़े अच्छे रूप में प्रस्तुत करके सभी को हँसा दिया। एक ओर श्रेया चोपड़ा ने अपनी मधुर व तटस्थ आवाज में प्रार्थना सुनाकर सबको मोहित कर दिया तो दूसरी ओर निहाल वाधवा ने अपने स्वभाव के अनुरुप ही अपनी कविता "गिलहरी“ में गिलहरी की दिनचर्या का हाल सुनाया।

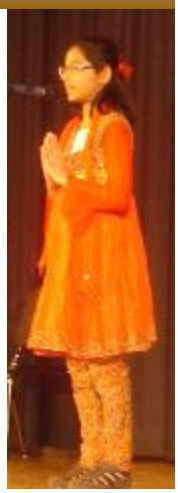

अब बारी आई विजेताओं के नाम घोषित करने की तो कनेक्टिकट पाठशाला के अभिभावक व शिक्षिक तैयार थे अपने-अपने कैमरे के साथ। अपने विजेता बच्चों की छवि को कैमरे में उतारने के लिए। कितना विश्वास था हमें अपने सभी बच्चों के प्रदर्शन पर।

उस प्रतियोगिता में कनेक्टिकट पाठशाला के २ और बच्चों के नाम विजयी घोषित हुए, वे हैं श्यामसुन्दर व श्रेया चोपड़ा। ये दोनों भी मई में होने वाले महोत्सव में हिस्सा लेंगे। हम सभी प्रसन्न थे। जो विजयी हुए उनका उत्साह तो बढ़ा ही साथ-ही-साथ जो विजयी नहीं हुए उनके मन में भी अगली बार और अच्छा प्रदर्शन करने की लालसा उत्पन्न हुई है।

कनेक्टिकट पाठशाला के इस प्रथम अभियान ने हम सभी का उत्साह दूना कर दिया है। हम सबका यह मानना है कि हमारे सभी बच्चों ने अपने पहले वर्ष में ही जो प्रदर्शन किया है वह सचमुच सराहनीय है। हम कनेक्टिकट पाठशाला के सभी बच्चों को विजेताओं की श्रेणी में ही गिनते हैं।

हम शिक्षकों का यह मानना है कि अभ्यास के दौरान बच्चों के हिन्दी उच्चारण पर बहुत ध्यान दिया गया। उसके कारण कुछ शब्दों के उच्चारण में बच्चों की समझ जागृत हुई है। बड़े पैमाने पर “है” , “हे” व “हैं” के उच्चारण में भेद समझने का अवसर प्राप्त हुआ है।

इस पाठशाला के अन्य शिक्षक व शिक्षिकाएँ जिनका हमें सहयोग प्राप्त है वे हैं श्री विजय वासुदेवा, श्री कमल पंडया व श्री मति सरस्वती सालनकर। आप सभी हिन्दी के प्रति अपनी निःस्वार्थ सेवा में लगे हुए हैं।

नूतन लाल जी एडिसन में रहती हैं। आपने ने गणित शास्त्र में एम.एससी. किया है। आप हिन्दी यू. एस. ए. से चार वर्षों से जुड़ी हैं। आजकल आप फ्रैन्कलिन हाई स्कूल में हिन्दी की शिक्षिका हैं। नूतन जी बहुत व्यस्त रहने के पश्चात् भी अपने घर से दूर हिन्दी यू. एस. ए. की कक्षा में पढ़ाती भी हैं।

मेरे अनुभव

पिस्कैटवे हिन्दी पाठशाला के अनुभव - पिस्कैटवे हिन्दी पाठशाला को खुले हुए २ वर्ष ही हुए हैं, लेकिन इन दो वर्षों में छात्र एवं छात्राओं की संख्या निरन्तर बढ़ती ही जा रही है। इस पाठशाला में लगभग ११५ छात्र एवं छात्राएँ हैं। १५ शिक्षिकाएँ एवं ३ स्वयंसेवक निःस्वार्थ भाव से इस कार्य में लगे हुए हैं। बर्फ ,तेज बारिश एवं ठंडी हवाओं में भी छात्र एवं छात्राएँ प्रत्येक शुक्रवार को उपस्थित होते हैं, बच्चो में हिन्दी के प्रति इतना लगाव देखकर बहुत ही अच्छा लगता है।

जनवरी महीने में पाठशाला में कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उस दिन का दृश्य तो देखने लायक था। पाँच वर्ष से लेकर पंद्रह वर्ष के बच्चों ने इस कविता पाठ में भाग लिया। बच्चों ने तितली, परी, जोकर, भारत माता बनकर एवं अपनी कविता के अनुरूप कपड़े पहन कर अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। थोड़ी देर के लिए तो मैं अचंभित हो गई कि मैं अमेरिका में हूँ या भारत में। पाठशाला का वातावरण भारतमय हो गया था। बच्चों एवं उनके अभिभावकों में हिन्दी के प्रति स्नेह, लगाव एवं उत्सुकता देखने को मिली। बच्चे तो उत्साहित थे ही, साथ ही साथ अभिवावक भी बहुत उत्साहित दिख रहे थे।

हिन्दी यू.एस.ए. के कारण अमेरिका में रहने वाले भारतीय बच्चे हिन्दी के प्रति जितने जागरूक हो गए हैं, उतने तो भारत में रहने वाले बच्चे भी जागरूक नहीं हैं। हिन्दी यू.एस.ए. अमेरिका में बसे भारतीयों के लिए हिन्दी और भारतीय संस्कृति से जुड़ने का एक बहुत ही सरल माध्यम बन गया है। पिस्कैटवे हिन्दी पाठशाला में बहुत से ऐसे बच्चे हैं, जिनके माता -पिता को हिन्दी बिल्कुल नहीं आती है, परन्तु वे अपने बच्चों को हिन्दी पाठशाला में भेज रहे हैं, ताकि उनके बच्चे हिन्दी सीखें और भविष्य मे उनको किसी भी परेशानी का सामना न करना पड़े। हिन्दी भाषा के अभाव में जो कष्ट माता-पिता ने उठाएँ हैं, वे उनके बच्चों को न उठाने पड़ें।

फ्रैन्कलिन हिन्दी पाठशाला के अनुभव - मैं पिस्कैटवे हिन्दी पाठशाला की संचालिका एवं शिक्षिका के साथ-साथ फ्रैन्कलिन हाई स्कूल में हिन्दी भाषा की शिक्षिका भी हूँ। फ्रैन्कलिन हाई स्कूल में हिन्दी इस सत्र (२००९-२०१०) से प्रारम्भ हुई है। मेरी कक्षा में ९ से १२ वर्ष के छात्र-छात्राएँ हैं। मैंने अपने हाई स्कूल में इस वर्ष होली मनाई। होली के दिन मैं अनेक रंगों के गुलाल एवं नाश्ते के लिए समोसे एवं काजू कतली ले गयी थी। जब अन्य कक्षाओं को होली के बारे में पता चला तो वे लोग भी मेरी कक्षा में आ गए। अभारतीय छात्र गुलाल देखकर बहुत खुश हुए। पहले तो मैंने उन्हें यह बताया कि होली क्यों मनाई जाती है। उन लोगों ने होली की वीडियो क्लिप भी देखी। छात्र परेशान थे कि कब उन्हें गुलाल लगाने को मिलेगा, व वीडियो क्लिप समाप्त होते ही वे एक दूसरे के चेहरों पर रंग-बिरंगा गुलाल लगाएँ और फिर समोसा, काजू कतली खाएँ। कक्षा समाप्त होने के बाद वे लोग वापिस अपनी कक्षा में चले गए। उन्हें होली खेल कर बहुत ही आनन्द आया। अभारतीय छात्र-छात्राएँ हिन्दी सीखने के लिए बहुत ही उत्साहित दिखे। उन्हें हिन्दी फिल्म देखना, भारतीय भोजन खाना, भारतीय त्योहार मनाना आदि बहुत पसंद आता है।

फ़रवरी महीने में मैं ACTFL OPI टेस्टर ट्रेनिंग के लिए NYU गयी थी। वहाँ मेरे साथ ट्रेनिंग में, University of Texas at Austin, के हिन्दी के प्रोफेसर जिष्णु शंकर जी एवं

मेरे अनुभव

Syracuse University के हिन्दी के प्रोफेसर आनंद द्विवेदी जी थे। बातचीत के दौरान जिष्णु जी ने मुझे बताया कि ऑस्टिन के हिन्दी-उर्दू फ्लैगशिप कार्यक्रम में हम सदा मेधावी छात्रों की खोज में रहते हैं। इस ध्येय से यदि हमारे संस्थान के बारे में जानकारी हाईस्कूलों तक पहुँच जाये तो शायद बच्चों को आगे हिन्दी-उर्दू पढ़ने का निर्णय लेने में सहायता मिले। जिष्णु शंकर जी ने इससे सम्बंधित कुछ सामग्री, डाक के जरिये मुझे भेजी है, हाई स्कूल के छात्रों को देने के लिए।

आज अमेरिका में हिन्दी की अपनी अलग से पहचान बन रही है। सुरक्षा एवं कई अन्य कारणों से अमेरिकी सरकार हिन्दी को बढ़ावा दे रही है। अगर बच्चे हाई स्कूल में हिन्दी लेते है, तो उन्हें हर वर्ष पाँच क्रेडिट मिलते हैं,जो कि भविष्य के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होंगे। आनेवाले दिनों में बहुत सी सरकारी नौकरियों में हिन्दी में क्रेडिट वालों को नौकरी मिलेगी। मुझे याद है कि जब मुझे केवल चार क्रेडिट के लिए Rutgers University में हजारों डालर्स खर्च करने पड़े थे। परन्तु अब यह क्रेडिट हाई स्कूल में हिन्दी लेने से ही मिल रहे हैं। मेरा अभिभावकों से आग्रह है कि वे अपने बच्चों को हाई स्कूल में हिन्दी भाषा को ऐच्छिक विषय के रूप में चुनने में सहायता करें, जिससे हिन्दी भाषा अमेरिका में और आगे बढ़ सके।

M3 REALTY
Residential & Commercial Real Estate

नवम् हिन्दी महोत्सव की अपार सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ

1910 Oak Tree Rd, Edison, NJ 08820

Finding the perfect home is a dream many have
Let's make your dream come true !!!

Anubha Aggarwal
Realtor Associate

Vidhya Ramakrishnan
Realtor Associate

Thinking of Buying or Selling ???
Wondering how much your property is worth ???
Call us for a No Obligation, Free Market Analysis at

Business:	७३२ ६०३ ०७०० Ext २६०	७३२ ६०३ ०७०० Ext २७७
Cell:	७३२ ९१० ६३६४	७३२ ९१० ००२९
Email:	aggarwal_anubha@yahoo.com	vidhyanj@yahoo.com
Website:	http://anubha.msx.mlxchange.com	www.m3realty.com

मैं हिन्दी बोल रही हूँ - स्मृति जोशी

मैं हिन्दी हूँ। बहुत दुखी हूँ। स्तब्ध हूँ। समझ में नहीं आता कहाँ से शुरू करूँ? कैसे शुरू करूँ? मैं, जिसकी पहचान इस देश से है, इसकी माटी से है। इसके कण-कण से हैं। यकायक अपने ही आँगन में बेइज्जत कर दी गई। कहने को संविधान के अनुच्छेद ३४३ में मुझे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। अनुच्छेद ३५१ के अनुसार संघ का यह कर्त्तव्य है कि वह मेरा प्रसार बढ़ाएँ। पर आज यह सब मुझे क्यों कहना पड़ रहा है? नहीं जानती थी मेरा किसी 'राज्य' की विधानसभा में किसी 'जुबान' पर आना ऐसा शर्मनाक तांडव रच सकता है।

मन बहुत दुखता है जब मुझे अपनी ही संतानों को यह बताना पड़े कि मैं भारत के ७० प्रतिशत गाँवों की अमराइयों में महकती हूँ। मैं लोकगीतों की सुरीली तान में गूँजती हूँ। मैं नवसाक्षरों का सुकोमल सहारा हूँ। मैं जनसंचार का स्पंदन हूँ। मैं कलकल-छलछल करती नदियों की तरह हर आम और खास भारतीय हृदय में प्रवाहित होती हूँ। मैं मंदिरों की घंटियों, मस्जिदों की अजान, गुरुद्वारे के शबद और चर्च की प्रार्थना की तरह पवित्र हूँ। क्योंकि मैं आपकी, आप सबकी-अपनी हिन्दी हूँ।

विश्वास करें मेरा कि मैं दिखावे की भाषा नहीं हूँ, मैं झगड़ों की भाषा भी नहीं हूँ। मैंने अपने अस्तित्व से लेकर आज तक कितनी ही सखी भाषाओं को अपने आँचल से बाँध कर हर दिन एक नया रूप धारण किया है। फारसी, अरबी, उर्दू से लेकर 'आधुनिक बाला' अंग्रेजी तक को आत्मीयता से अपनाया है। सखी भाषा का झगड़ा मेरे लिए नया नहीं है। इससे पहले भी मेरी दक्षिण भारतीय 'बहनों' की संतानों ने यह स्वर उठाया था, मैंने हर बार शांत और धीर-गंभीर रह कर मामले को सहजता से सुलझाया है। लेकिन इस बार मेरी अनन्य सखी मराठी की संतानें मेरे लिए आतंक बन कर खड़ी है। इस समय जबकि सारे देश में विदेशी ताकतों का खतरा मँडरा रहा है, ऐसे में आपसी दीवारों का टकराना क्या उचित है?

लेकिन कैसे समझाऊँ और किस-किस को समझाऊँ? मैं क्या कल की आई हुई कच्ची-पक्की बोली हूँ जो मेरा नामोनिशान मिटा दोगे? मैं इस देश के रेशे-रेशे में बुनी हुई, अंश-अंश में रची-बसी ऐसी जीवंत भाषा हूँ जिसका रिश्ता सिर्फ जुबान से नहीं दिल की धड़कनों से है। मेरे दिल की गहराई का और मेरे अस्तित्व के विस्तार का तुम इतने छोटे मन वाले भला कैसे मूल्यांकन कर पाओगे? इतिहास और संस्कृति का दम भरने वाले छिछोरी बुद्धि के प्रणेता कहाँ से ला सकेंगे वह गहनता जो अतीत में मेरी महान संतानों में थी।

मैंने तो कभी नहीं कहा कि बस मुझे अपनाओ। बॉलीवुड से लेकर पत्रकारिता तक और विज्ञापन से लेकर राजनीति तक हर एक ने नए शब्द गढ़े, नए शब्द रचे, नई परंपरा, नई शैली का ईजाद किया। मैंने कभी नहीं सोचा कि इनके इस्तेमाल से मुझमें विकार या बिगाड़ आएगा। मैंने खुले दिल से सभी भाषाओं का,भाषा के शब्दों का, शैली और लहजे का स्वागत किया। यह सोचकर कि इससे मेरा ही विकास हो रहा है। मेरे ही कोष में अभिवृद्धि हो रही है। अगर मैंने भी इसी संकीर्ण सोच को पोषित किया होता कि दूसरी भाषा के शब्द नहीं अपनाऊँगी तो भला यहाँ तक उद्दाम आवेग से इठलाती-बलखाती कैसे पहुँच पाती?

मैंने कभी किसी भाषा को अपना दुश्मन नहीं समझा। किसी भाषा के इस्तेमाल से मुझमें असुरक्षा नहीं पनपी। क्योंकि मैं जानती थी कि मेरे अस्तित्व को किसी से खतरा नहीं है। पर महाराष्ट्र विधानसभा की घटना से एक पल के लिए मेरा यह विश्वास डोल गया।

पिछले दिनों मैं और मेरी सखी भाषाएँ मिलकर त्रिभाषा

ब्रज राज किशोर जी ने ३० साल से अधिक अध्यापन किया है। आपने दर्जनों पुस्तकें हिन्दी और अंग्रेज़ी में लिखी हैं। आपने हिन्दी और अंग्रेज़ी में एम.ए. और पीएच.डी. की है। आजकल आप अमेरिका के सोमरसेट नगर में रहते हैं।

चरैवेति, चरैवेति

चरैवेति, चरैवेति, चलते रहो, चलते रहो!
कलनिनादित निर्झर से नित्य तुम बढ़ते रहो
लोकहित की लिए ललक, सतत् ही बहते रहो
आस-पास दूर-दूर, चर अचर सबको
सजल, सरस, सप्राण ओ' सुहासित करते रहो
बन कर्मयोगी, बन विघनेश, हे पनुपुत्र तुम
मानवता के मार्ग में सुमन सदृश्य बिछते रहो।

हिमालय पर उगा उदग्र, उर्जस्वित देवदार
हो रहा है जो अग्रसर ऊपर और ऊपर
जिससे कि पा सके अवालम्ब अम्बर
मिल जाए थके-मांदे घनो. को आधार
और कर सके पिता सूर्य को नमस्कार।
अही सदा एक मात्र तुम्हारा आदर्श हो
संदर्भ हो, प्रतिमान हो, अनुकरणीय हो।

चरंति ब्रहमांड, चल रहे हैं चांद-तारे
ग्रह-नक्षत्र, जो रक्त है धमनियों में हमारे
गत्तिमान है सरिता, हैं साक्षी दोनों किनारे
पवन है प्रवहमान, ज्यं हो गरुड़ पंख पसारे
नाच रही है धरा, जानते हो किसके सहारे?
पता है कैसे थे वामन अवतार पधारे
यजमान राजा बलि की यज्ञशाला द्वारे
और हुआ था क्या जब थे उन्होंने तीन डग भरे
मन्त्र मुग्ध देव दानव देखते रहे थे खडे के खडे।

गतिमति है हिमनद, हिमालय, ऋतुचक्र भी
क्या थमा है काल का रथ भी कभी?
नहीं अगतिक जो भी, है श्रेष्ठ और समर्थ
यही सब है वरेण्य, शेष सब है व्यर्थ।
गति ही प्राण है, पहचान है जीवन की
गति ही गति है, संगीत, लय और छंद भी
नृत्य, अनश्वर्ता और आत्मा का अमरत्व भी
स्रजन का मूल और मोक्ष का द्वार भी
सम्यक, सत्वगुण शमन्वित चरित्र का मूल भी।

एकला चलो, मिलकर या समूह में
पर चलो ऐसे कि जैसे चले थे तथागत
या राम-पादुका लेकर चले थे भरत
कि तुमहारे चरण-चिन्हों से मंडित
पगडंडी बन सके जन-जन का जनपथ।

मैं हिन्दी बोल रही हूँ

फार्मूला पर सोच ही रही थीं। लेकिन इसका अर्थ यह तो कतई नहीं था कि हमारी संतान एक-दूसरे के विरुद्ध नफरत के खंजर निकाल ले। यह कैसा भाषा-प्रेम है? यह कैसी भाषाई पक्षधरता है? क्या 'माँ' से प्रेम दर्शाने का यह तरीका है कि 'मौसी' की गोद में बैठने पर अपने ही भाई के मुँह पर तमाचा मार दो? क्या लगता है आपको, इससे 'मराठी' खुश होगी? नहीं हो सकती। हम सारी भाषाएँ संस्कृत की बेटियाँ हैं। बड़ी बेटी होने का सौभाग्य मुझे मिला, लेकिन इससे अन्य भाषाओं का महत्व कम तो नहीं हो जाता। पर यह भी तो सच है ना कि मुझे अपमानित करने से मराठी का महत्व बढ़ तो नहीं गया?

यह कैसा भाषा गौरव है जो अपने अस्तित्व को स्थापित करने के लिए स्थापित भाषा को उखाड़ देने की धृष्टता करे। मुझे कहाँ -कहाँ पर प्रतिबंधित करोगे? पूरा महाराष्ट्र तो बहुत दूर की बात है अकेली से मुझे निकाल पाना संभव नहीं है। बरसों से भारतीय दर्शकों का मनोरंजन कर रही फिल्म इंडस्ट्री से पूछ कर देख लें कि क्या मेरे बिना उसका अस्तित्व रह सकेगा? कैसे निकालोगे लता के सुरीले कंठ से, गुलजार की चमत्कारिक लेखनी से? कोई और रचनात्मक काम क्यों नहीं करते मराठी पुत्र? जो 'मन' से सबको भाए ना कि 'मनसे' सबको डराए। अपनी सोच को थोड़ा सा विस्तार दो, मैं आपकी भी तो हूँ।

आज बस इतना ही, आप सबकी हमेशा-सी,
हिन्दी

कैसे सिखाएँ हिन्दी - माधवी मिश्र जी

अपने बच्चों को कैसे सिखाएँ हिन्दी? भाषा प्रयोग से आती है। भाषा सुनने से आती है। अर्थ तो बाद की बात है। बहुत छोटा बच्चा जब बोलना आरम्भ करता है, उदाहरण के लिए बाबा, दादा, चाचा तो उसको इनके अर्थ नहीं पता होते। वह इन ध्वनियों को सुनता है और उनकी नकल उतारता है। इन शब्दों के अर्थ तो उसको बड़े होकर समझ आते हैं। इसका यह मतलब है कि भाषा नकल उतारने से आती है, जैसा सुनो वैसा बोलो। ये सत्य हर भाषा के साथ लागू होता है।

उदाहरण के लिए अपने बच्चे अंग्रेजी भाषा कैसे सीखते हैं? विद्यालय जाते हैं, और अध्यापक-अध्यापिकाओं से बहुत से वाक्य और शब्द सुनते हैं, उनको दोहराते हैं और बोलने लगते हैं। इनको अंग्रेजी भाषा किसी और भाषा में अनुवाद करके नहीं सिखाई जाती, अपितु अंग्रेजी से अंग्रेजी सिखाई जाती है। इससे एक बात और स्पष्ट है कि भाषा अनुवाद से नहीं अपितु प्रयोग से आती है। सुनने और नकल करने से आती है। जब किसी परिस्थिति के अनुसार कोई वाक्य बोला जाता है तो ध्वनियाँ कानों में जाती हैं, और जिस परिस्थिति में बोला जाता है वह परिस्थिति उसका अर्थ बताती है।

भाषा में पहले शब्द सिखाए जाने चाहिए। छोटे-छोटे वाक्य पहले सिखाए जाने चाहिए क्योंकि वाक्य कारण से जुड़े हैं, उस कारण में उनका अर्थ छिपा है। पूरे वाक्य का अर्थ जानने के बाद अलग-अलग शब्दों का अर्थ तो सहज समझ में आ जाता है।

भाषा का प्रयोग किन-किन विषयों में किया जाए, जिससे सामान्य बोली जाने वाली भाषा में बच्चों की गति हो जाए। इसके लिए पन्द्रह-बीस वाक्य के छोटे-छोटे निबन्ध लिखे जाए। निबन्ध के विषय हों:

१. अपनी दिनचर्या (आप दिनभर क्या-क्या करते हैं?)
२. हमारा विद्यालय (विद्यालय का क्या नाम है?, कहाँ पर है?, क्या-क्या कक्षाएँ होती हैं?, कौन-कौन से खेल खेलते हैं? इत्यादि)
३. हमारा परिवार (दादी, बाबा, माता-पिता, भाई-बहन आदि सभी के बारे में पाँच छः वाक्य लिखना।)
४. अपनी अभिरुचियाँ (खेल, पढ़ाई, खाना-पीना, क्या पसंद है? क्यों पसन्द है?)
५. हमारी मित्र मंडली (कौन सा मित्र क्या अच्छा जानता है? उसकी क्या बात मुझे पसन्द है? इत्यादि ---)
६. अपने त्यौहार (होली, दिवाली, दशहरा --- कब मनाते हैं , क्यों मनाते हैं , कैसे मनाते हैं ? ---)
७. गर्मियों की छुट्टियाँ (कहाँ गए?, क्या-क्या देखा? क्या बहुत अच्छा लगा? ---)

इन सात-आठ विषयों पर कुछ-कुछ वाक्य लिखना, बोल-बोल कर बताना और उनको दोहराते हुए सुनना। इन सब निबन्धों में से एक विषय का विस्तार हम आपको दे रहे हैं। विषय है : अपनी दिनचर्या –

हम सवेरे सात बजे उठते हैं। एक गिलास पानी पीते हैं। दाँत साफ करते हैं। नाश्ता करते हैं। कपड़े बदलते हैं। पाठशाला के लिए बस्ता लेते हैं। जूते और जैकेट पहनते हैं। बस से विद्यालय जाते हैं। बस इस समय ले जाती है, पाठशाला में ये-ये कक्षाएँ चलती हैं।

इतने छोटे-छोटे वाक्य हैं, बहुत कम शब्द हैं, और उनका बार-बार प्रयोग है। यदि आप बीस मिनट से आधे घंटे रोज़ किसी एक विषय पर बोलेंगे और सुनेंगे तो आपके बच्चे बहुत जल्दी हिन्दी बोलने लगेंगे।

बोलते समय बच्चों का उच्चारण दोष कैसे दूर करें? बच्चों को दीर्घ उच्चारण कराएँ। यानि एक शब्द को लम्बा करके ज़ोर से बोलें जिससे सारी ध्वनियाँ स्पष्ट रूप से उनके कानों में जाएँ और वह उनकी नकल कर सकें।

(Continued on page 51)

पार्थ परिहार से बातचीत

इस वर्ष हिन्दी यू.एस.ए के उच्च स्तर के विद्यार्थियों के लिए जिस पाठ्य पुस्तक का प्रयोग किया जा रहा है, वह हिन्दी यू.एस.ए के ही एक पूर्व छात्र, **पार्थ सिंह परिहार**, द्वारा लिखी गई है। यह पुस्तक लिखकर, पार्थ अपनी पीढ़ी के लिए एक उदाहरण ही नहीं बल्कि प्रेरणा का एक स्त्रोत बने हैं। हिन्दी यू.एस.ए के लिए यह बहुत गर्व की बात है। जब पार्थ के सैट (SAT) परीक्षा में १००% अंक आए तो एडीसन पाठशाला के उच्च स्तर के शिक्षकों एवं छात्रों ने पार्थ से मिलने की इच्छा प्रगट की। शुक्रवार, १२ फरवरी २०१० को, उच्च स्तर के छात्रों के आमंत्रण पर पार्थ एडिसन हिन्दी पाठशाला आए, और वहाँ पर उच्च स्तर के विद्यार्थियों से बातचीत की। उसी बातचीत के कुछ अंश यहाँ प्रश्नोत्तर के रूप में दिए जा रहे हैं।

प्रश्न: हिन्दी क्यों सीखें? हिन्दी के अध्ययन से आपको किस प्रकार का फायदा हुआ? व्यक्तिगत, सामाजिक, शैक्षिक आदि।

पार्थ: हिन्दी सिर्फ एक भाषा नहीं है। हिन्दी के द्वारा हम अपने परिवार और संस्कृति को बेहतर समझ सकते हैं। हम अपनी जड़ों के करीब जा सकते हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम वो समझें जो हम एक भारतीय के रूप में, एक समुदाय के रूप में करते हैं। हमारी अपनी एक पहचान होनी चहिए।

सामाजिक स्तर पर भी भारत में अपने दादा- दादी के साथ संवाद करने में सक्षम होना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे अलग पीढ़ी के हैं और उनके भी अपने अनुभव हैं, जो वे आप के साथ साझा कर सकते हैं।

शैक्षिक स्तर पर भी आँकड़े बताते हैं कि एक विदेशी भाषा सीखने का उच्च SAT स्कोर के साथ सीधा संबंध है। उस परिप्रेक्ष्य से यह बहुत जरूरी है कि आप एक विदेशी भाषा सीखें। और जब विदेशी भाषा सीखना ही है तो हिन्दी से बेहतर क्या हो सकता है।

प्रश्न: हिन्दी यू. एस. ए. की कक्षा ने हिन्दी सीखने में क्या भूमिका निभाई ?

पार्थ: मैं शायद सही व्यक्ति नहीं हूँ जिससे ये सवाल किया जाए, क्योंकि बचपन से ही मेरे माता-पिता मुझे हिन्दी सिखा रहे हैं, लेकिन जबसे हिन्दी यू. एस. ए. की कक्षाएँ शुरु हुई हैं, उनका मुझपर भी बहुता प्रभाव पड़ा है।

जैसा आप सभी जानते हैं कि कक्षाओं में पढ़ाई को बहुत गम्भीरता से लिया जाता है। हिन्दी यू.एस.ए. में बच्चे को वो सब पढ़ाया जाता है जो उनको रोज की दिनचर्या में काम आता है।

प्रश्न: आपने अपना नियमित काम और हिन्दी कार्य को कैसे संतुलित किया, तथा आपको एक पाठ्य पुस्तक लिखने का समय कैसे मिला? क्या आप वीडियो गेम, दोस्तों, आदि में भी रुची रखते हैं?

पार्थ: मैं वीडियो गेम नहीं खेलता हूँ। मैं अपने दोस्तों के साथ शनिवार-रविवार को मिलता हूँ ताकि बाकि पाँच दिन मैं अपने लिए रख सकूँ। पाठ्य पुस्तक मैंने अपनी भारत यात्रा के दौरान लिखी जहाँ मेरे पास समय का इतना अभाव नहीं था।

प्रश्न: आपको कैसा लगा जब आपके माता-पिता ने आपको हिन्दी सीखने को कहा ?

पार्थ: जब मैं बोलना सीखा उसके साथ ही मेरे माता-पिता ने मुझे हिन्दी सिखाना शुरू कर दिया। मेरे पास हिन्दी सीखने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

प्रश्न: आपने अपने हिन्दी के अपने ज्ञान को और गहरा कैसे किया? सिनेमा, पुस्तकें, हिन्दी क्लब, दोस्तों और परिवार आदि के साथ बातचीत?

पार्थ: हिन्दी चलचित्र से निश्चित रूप से फर्क तो पड़ता है, क्योंकि एक माहौल बन जाता है। हिन्दी सिनेमा, मनोरंजन के साथ-साथ अपनी भाषा से भी जोड़े रखता है। मैं कभी-कभी हिन्दी किताबें भी पढ़ता हूँ, लेकिन अभी पढ़ाई के कारण समय नहीं मिल पा रहा है।

पार्थ परिहार से बातचीत

प्रश्न: भविष्य में आपकी, अपने हिन्दी कौशल के साथ क्या करने की योजना है ?

पार्थ: बस हिन्दी यू. एस. ए. का काम करते रहने की इच्छा है। भविष्य में शायद मुझे मौका मिले कि मैं भारत जाऊँ और वहाँ के लोगों के लिये कुछ करूँ।

प्रश्न: आपको हिन्दी बोलने की प्रेरणा कहाँ से मिली?

पार्थ: मेरे घर में अधिकतर हिन्दी ही बोली जाती है, जिससे मुझे भी हिन्दी सीखने की प्रेरणा मिली। अगर मैं हिन्दी नहीं सीखता तो मुझे कुछ समझ नहीं आता कि घर वाले क्या बोल रहे हैं।

प्रश्न: जिनके घर में हिन्दी नहीं बोली जाती है वे हिन्दी का अभ्यास कैसे करें ?

पार्थ: किसी भी भाषा को सीखने के लिए उसका अभ्यास आवश्यक है। आप अपनी पाठशाला की किताब पढ़ सकते हैं। इसे पढ़ने से आपका अभ्यास तो होगा ही साथ-साथ आपकी शब्दावली भी बढ़ेगी। मुझे लगता है कि हिन्दी में शब्दावली का अच्छा होना बहुत महत्वपूर्ण है।

प्रश्न: आपने यह किताब क्यों लिखी ?

पार्थ: मैंने सोचा कि उच्च स्तर में प्रयोग होने वाली पाठ्य पुस्तक में कुछ कमी थी। पिछली पुस्तक में वह शब्दावली नहीं थी जो हम इस पुस्तक के द्वारा सीख रहे हैं। इस पुस्तक के अध्यायों की शब्दावली, मध्यमा – २ में सीखे हुए शब्दों पर आधारित है। ये सभी शब्द हम दैनिक जीवन में उपयोग कर सकते हैं।

यह पुस्तक यहाँ के विद्यालयों में दूसरी भाषाओं के पाठ्यक्रम में उपयोग होने वाली पुस्तकों की तरह ही है।

प्रश्न: आपको किताब लिखने में कितना समय लगा ?

पार्थ: अगर आरंभ से अंत तक समय जोड़ा जाए तो मुझे पुस्तक लिखने में करीब छ: माह का समय लगा। इस कार्य को पूरा करने में, मेरी माताजी ने मेरी सहायता की। विचार मेरे थे लेकिन सम्पादन का कार्य मेरी माताजी ने किया।

बातें तो चलती ही रहतीं लेकिन हमारी कक्षा का समय समाप्त होने के कारण हमें प्रश्नोत्तर का दौर यहीं समाप्त करना पड़ा। जाते-जाते पार्थ ने सभी छात्रों की किताबों पर अपने हस्ताक्षर करके ये पल अविस्मरणीय बना दिए।

पार्थ के लिए गजेन्द्र सोलंकी जी द्वारा रचित कुछ पंक्तियाँ -

वाणी का वरदान है पार्थ बढ़ाए साख
पेड़ नहीं अब पार्थ को, दिखे चिड़ी की आँख
दिखे चिड़ी की आँख निशाना ऐसा साधा
लक्ष्य बेध में नहीं दिखाई देती बाधा
चौबीस सौ पूरे नंबर लगते अठखेली
ज्यों तेंदुलकर ने रिकार्ड वो पारी खेली

कैसे सिखाएँ हिन्दी - माधवी मिश्र जी

यह सब सिखाने में ऐसा क्या किया जाए जिससे बच्चे रुचि लें, मन से सीखें। इसके लिए २ गूढ़ मंत्र – पहला प्रशंसा जैसे अरे वाह । क्या बात है, शाबाश , बहुत अच्छे !। इत्यादि। दूसरा पुरस्कार-यदि तुमने इतना काम इस समय तक कर लिया तो तुम्हारे लिए ये लेकर आएँगे, तुम्हें वहाँ ले जाएँगे ---। इस तरह उनके मन को सीखने के लिए प्रोत्साहन दें।

नवम् हिन्दी महोत्सव की सफलता हेतु हमारी ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ

प्रिय पुत्र देवेन,

यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता होती है कि तुमने हिन्दी सीखने में इतनी प्रगति की है। तुम्हारी इस सफलता एवं श्रम से हम सभी अत्यंत प्रभावित हैं। इसी प्रकार परिश्रम करते रहो, एक दिन तुम अवश्य एक महान व्यक्ति बनोगे ऐसा हमारा विश्वास है।

प्रिय पुत्र नील,

यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता होती हैं कि तुमने हिन्दी पाठशाला में जाकर हिन्दी सीखना प्रारम्भ कर दिया है। हमें यह ज्ञात है कि तुमने हिन्दी का बहुत ज्ञान अपने बड़े भाई देवन से सीखा है। हमें तुम पर अत्यंत गर्व है, इसी प्रकार मेहनत करते रहो। हिन्दी सीखने से तुम दोनों भाई अपनी संस्कृति एवं मातृभाषा से जुड़े रहोगे जो कि हमारे लिए अत्यंत गर्व कि बात होगी। इश्वर तुम्हे इस कार्य में सफलता प्रदान करें।

परेश और अल्पा पटेल

श्री सूर्य दत्त दुबे जी द्वारा रचित इस सुंदर कविता का वाचन उनकी सुपौत्री, सुमेधा दुबे जो कि एडिसन हिन्दी पाठशाला की छात्रा हैं, ने अपनी सुंदर वाणी में कविता पाठ प्रतियोगिता के दौरान किया था। जिस दिन एडिसन हिन्दी पाठशाला की कविता पाठ प्रतियोगिता संपन्न हुई, दुर्भाग्यवश उससे एक दिन पूर्व ही इनके दादा श्री दुबे जी का निधन हुआ। यह विधि की एक विडंबना थी। इस सुंदर कविता एवं इसके लेखक के बारे में जानकारी सुमेधा दुबे द्वारा उनके ही शब्दों में पढ़िए...

क्यों?

मैं, सुमेधा दुबे, नवीं कक्षा की विद्यार्थी हूँ तथा एडिसन हिन्दी स्कूल में हिन्दी की छात्रा भी। एक विद्यार्थी के लिए सबसे बड़ी समस्या है - परीक्षा ! मेरे लिए तो यह बहुत बड़ी समस्या है ही। लगता है मेरे बाबाजी (दादाजी) भी इससे डरते थे। तभी तो उन्होंने यह कविता लिखी थी। यह कविता पढ़ कर आपको भी लगेगा कि यह हमारी हालत पर कितनी सही बैठती है।

यह कविता मेरे बाबाजी, श्री सूर्य दत्त दुबेजी ने लगभग सन् १९४६ में लिखी थी जब वे BA की पढ़ाई कर रहे थे। लेकिन लगता है कि आगे चलकर उन्होंने अपने इस डर को जीत लिया, क्योंकि बाद में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से MA (हिन्दी) की परीक्षा पास की और १९५५ में राजनीतिक शास्त्र में MA भी किया। मेरे बाबाजी अब इस दुनिया में नहीं रहे। १५ जनवरी २०१० को उन्होंने हम सबसे हमेशा के लिए विदा ले ली, लेकिन हमारे लिए वे कई कविताएँ तथा यादें छोड़ गए हैं। भले ही आज वे मेरे पास न हों, पर मेरे दिल में वे हमेशा जिंदा रहेंगे। आशा है कि मैं भी उनकी तरह खूब पढ़ूँगी।

दीनानाथ दयानिधि, दीजे कोई ऐसी सिद्धि,
जिससे हम दीनों के भाग्य ही पलट जायें।

साल भर मौज करें, सपनों की खोज करें,
घर के पलंगों को, तोड़े पै जुट जायें।।

परचा आसान हो, प्रश्नों का ज्ञान हो,
ऐसी कुछ शान हो, उत्तर सब रट जायें।

परीक्षिका अंधी हों, या कि बहुधन्धी हों,
ऐसी कुछ गंधी हों, कापी सूंघ हट जायें।।

सौ में सौ नंबर होयें, ओढ़ के कम्बल सोयें,
कोई जगाए तो, जागने से नट जायें।

दीनानाथ दयानिधि, दीजे कोई ऐसी सिद्धि,
जिससे हम दीनों के भाग्य ही पलट जायें।।

नवम् हिन्दी महोत्सव की अपार सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ

Key Apparel Resources Ltd.
1400 Broadway, Suite # 501
New York, NY 10018
212-354-9862

मोनिका मिर्ग जी देहरादून में पली-बढ़ी, अब प्लेंस्बोरो न्यू जर्सी में अपने पति और दो बच्चों के साथ रहती हैं। इन्होंने देहरादून से एम.एससी की है। आजकल यह प्लेंस्बोरो पाठशाला में हिन्दी पढ़ाती हैं। इन्हें छोटे बच्चों के साथ समय बिताना बहुत अच्छा लगता है। यह दो वर्षों से हिन्दी यू.एस.ए. के साथ जुड़ी हुई हैं।

हिन्दी बोलो

हिन्दी बोलो हिन्दी बोलो, सारे बंद दरवाजे खोलो
अंग्रेजी सीखो, हिन्दी ना छोड़ो
हेल्लो बोलो, नमस्ते ना छोड़ो
डिजनी देखो, सोनी ना छोड़ो
होलीवुड देखो, बोलीवुड ना छोड़ो
हिपहॉप करो, कत्थक ना छोड़ो
पॉप गाओ, राग ना छोड़ो
बर्गर खाओ, रोटी ना छोड़ो
जेल(Gel) लगाओ, तेल ना छोड़ो
क्रिस्मस मनाओ, दीवाली ना छोड़ो
कैंडल जलाओ, दिया ना छोड़ो
अमेरिकन हो, भारत ना छोड़ो
अमेरिका में हिन्दी यू.एस.ए. ना छोड़ो
बाहर कुछ भी बोलो, घर में हमेशा हिन्दी बोलो
हिन्दी बोलो हिन्दी बोलो, सारे बंद दरवाजे खोलो

धनंजय निचकवड़े जी ने मुंबई विद्यापीठ से एम. बी. ए. की पदवी प्राप्त की है। कंप्यूटर में काम करने के अलावा उन्हें साहित्य, संगीत तथा कविताओं में बहुत रुचि है। धनंजय जी एक तबला वादक भी हैं। यह कविता उन्होंने अपनी बेटी नेहा के कविता पाठ प्रतियोगिता के लिए लिखी थी।

अमृतधारा

जीवन शुरू हुआ माँ के प्यार से,
जता के रखेंगे हम नन्हें दिल से।
पिताजी ने दिया धीरज,
माँ और पिताजी में दिखता सूरज ।।१।।

सूरज की किरणें आशा दिखलाती,
बादलों की काली घटा पानी बरसाती।
धरती माता अनाज के दाने देती,
आशा, पानी और अनाज है जीवन साथी ।।२।।

जन, जंगल और जानवर हैं हमारी दुनिया,
इसमें कहीं नहीं कमियाँ।
बनाये रखो खुबसूरत दुनिया,
रखो उसे हरीभरी दुल्हन सी सजी संवरी ।।३।।

जीवन है एक अमृतधारा ,
दुनिया के फूलों फलों से संवारा।
आशाओं से सजा संवारा,
जो मिले न कभी दोबारा
जीवन है एक अमृतधारा ।।४।।

ज्योति गुप्ता जी एक वर्ष से हिन्दी यू.एस.ए. के लिए एडिसन हिन्दी पाठशाला मे मध्यमा-१ स्तर की सहायक शिक्षिका के रूप मे कार्यरत हैं। जब से इन्होंने हिन्दी पढ़ाने का कार्य संभाला है, तभी से कुछ पंक्तियाँ इनके दिमाग में इधर-उधर भटक रहीं थीं। अभी २०१० वर्ष की कविता पाठ प्रतियोगिता के दौरान उन्हें कविता के रूप मे पूर्ण करने का अवसर मिला। यह बच्चों के स्तर की सरल और शिक्षाप्रद कविता है।

बड़ा ही महत्व है

जैसे आँखों की ज्योति
वैसे सीप में मोती,
जैसे पंडित की धोती
वैसे दादे की पोती,
का बड़ा ही महत्व है।

जैसे धुप में छाँव का
वैसे पंथ के लिये पाँव का,
जैसे दोस्तों में प्रीत का
वैसे हार के बाद जीत का,
बड़ा ही महत्व है।

जैसे खाने मे रोटी
वैसे हिमालय की चोटी,
जैसे पर्वतों की ऊँचाई
वैसे समुद्रों की गहराई,
का बड़ा ही महत्व है।

जैसे मछली के लिये जल
वैसे बलवान के लिये बल,
जैसे कलम की स्याही
वैसे शहर मे व्यापारी,
का बड़ा ही महत्व है।

जैसे माँ की ममता
वैसे श्रम के लिये क्षमता,
जैसे तीर के लिये निशाने का
वैसे डूबते के लिये किनारे का,
बड़ा ही महत्व है।

जैसे देश का तिरंगा
वैसे नदियों मे गंगा,
जैसे जीवन मे यात्राओं का
वैसे हिन्दी मे मात्राओं का,
बड़ा ही महत्व है ।

नवम् हिन्दी महोत्सव की अपार सफलता के लिए

हार्दिक शुभकामनाएँ

Aquarius USA, INC.

212-730-4351

147W 35th Street, Suite 501
New York, NY 10001

M3 REALTY
Residential & Commercial Real Estate

१९१० Oak Tree Road, Edison, NJ ०८८२०

BUY ☺ SELL ☺ RENT ☺ INVEST

First class service and first class result on your side from beginning to end

Harish Verma
Realtor Associate
Direct: ९०८-७०५-७७३२

Residential: Single Family Homes, Condos, Town homes

Business: Deli, Convenience Stores, Dry Cleaning, Laundromat, Liquor Stores, Gas Station

***Free Market Analysis of Your Property**

श्यामल मजूमदार मूलत: बाँगलाभाषी हैं, और वर्तमान में हिन्दी मंच के उदीयमान कवियों में अपना स्थान बना चुके हैं। लखनऊ निवासी श्यामल भारतीय स्टेट बैंक में कर्मचारी हैं। वे हास्य-व्यंग्य के साथ गंभीर कविता की भी समझ रखते हैं।

थोड़ी सी अंग्रेजी पढ़ ली, गुब्बारे से फूल गए

थोड़ी सी अंग्रेजी पढ़ ली, गुब्बारे से फूल गए,
दादा-दादी, चाचा, ताऊ, सम्बोधन ही भूल गए।

अंकल - आंटी, हाय-हैलो, जाने क्या-क्या कहते हैं,
पश्चिम वाली धुन में निशदिन, खोए-खोए रहते हैं,
याद रही व्हिस्की की बोतल, दवा पिता की भूल गए।
थोड़ी-सी अंग्रेजी पढ़ ली, गुब्बारे से फूल गए।

अंग्रेजी के उपन्यास को बड़े गर्व से पढ़ते हैं,
वैलेंटाईन-न्यू ईयर पे नए शगूफे गढ़ते हैं,
नानक-तुलसी और कबीर, नव स्वंत्सर भूल गए?
थोड़ी सी अंग्रेजी पढ़ ली, गुब्बारे से फूल गए।

रॉक-पॉप-डिस्को म्यूजिक पर, सारी रात थिरकते हैं,
फैशन शो में अंग-प्रदर्शन, नारी-मुक्ति समझते हैं,
अरे ओले-ओले याद रहा, पर सारेगामा भूल गए?
थोड़ी सी अंग्रेजी पढ़ ली, गुब्बारे से फूल गए।

चार निवाले कम खाया है, फिर भी उन्हें खिलाया है,
एक कमरे में चार-चार बच्चों को साथ सुलाया है,
चारों ने आवास लिए माँ-बाप को रखना भूल गए?
थोड़ी सी अंग्रेजी पढ़ ली, गुब्बारे से फूल गए।

ये मत भूलो तुम भी इक दिन बूढ़े ही कहलाओगे,
समय-चक्र के प्रतिदानों से, क्या तुम खुद बच पाओगे?
फिर ना कहना बेटे मेरे, हमें भला क्यों भूल गए?
थोड़ी-सी अंग्रेजी पढ़ ली, गुब्बारे से फूल गए।

नवम् हिन्दी महोत्सव की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ

शर्मा परिवार

अनामिका सिंह कक्षा १० की छात्रा हैं और एडिसन की जे. पी. स्टीवन पाठशाला में पढ़ती हैं। कविताएँ लिखना और अपनी भावनाओं को व्यक्त करना अनामिका का हमेशा से शौक रहा है। यह कविता मेरे लिए बहुत ख़ास क्योंकि यह मेरी पहली हिन्दी कविता है। यह कविता मैं अपने पिता श्री अनिल कुमार सिंह और माता श्रीमती विभा सिंह को समर्पित करना चाहती हूँ क्योंकि वे इस कविता के राही हैं।

राही

हर नए जगह पे, एक सहारा मिलता है,
कोई अपना कहने को, दोबारा मिलता है।

हर नए मंजर पे, खुशियाँ आती हैं,
और आगे चल कर, यादें कहलाती है।

हर अलग मोड़ पे, मिलता है एक नया एहसास,
और उसके साथ , खुद को पाने की प्यास।

हर नए दरवाज़े के बाहर, एक खुबसूरत कहानी,
जो हमें साथ ले जाती है, जैसे बहता पानी।

और हर नए रस्ते पे ,एक नया विश्वास,
की बहुत जल्द, घर होगा पास...

नवम् हिन्दी महोत्सव की सफलता की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ

GARDEN STATE PHYSICIANS P.C.

21 Jefferson Plaza (off Raymond Rd.), Princeton, NJ 08540

Dr. Sonia Deora & Dr. Srinivas Mendu

Board Certified in Family Practice and Internal Medicine

- Physical Exams, annual pap smears
- Blood work done on premises
- EKGs Halter Monitors
- Spirometry, Nebulizer Treatments
- Management of cuts, minor burns & lacerations
- Age appropriate immunizations

732-274-1274

- Same day, weekend & evening appointments available
- Same day, weekend & evening appointments available
- Most Insurances accepted
- Hospital affiliations: JFK, RWJ and Somerset Medical Center
- New Patients welcome

Management of all medical conditions including but not limited to Diabetes, Hypertension, Asthma, Allergies, Arthritis and Thyroid Disorder.

आदित्य काबरा हिन्दी पाठशाला के विशिष्ठा-२ में पढ़ते हैं। आदित्य १० वीं कक्षा के छात्र हैं और इन्हें हिन्दी गानें गाना और सुनना बहुत पसंद है। यह कविता इन्होंने हिन्दी यू. एस. ए. के कामों से प्रभावित हो कर लिखी है। हिन्दी यू. एस. ए. के सभी कार्यक्रमों में सहयोग देते हैं।

हिन्दी भाषा

हिन्दी है भारत की भाषा, अमेरिका में आकर जाना,
भारत से भी ज्यादा इसको, आकर यहाँ पहचाना।

हर शुक्रवार को जब, हम हिन्दी स्कूल जाते हैं,
हर एक चहरे पे हम, एक चमक ही पाते हैं।

जितना आनंद पढ़ाने में शिक्षक जन पाते हैं,
उससे भी ज्यादा हम मन ही मन हर्षाते हैं।

भारत की है शान हिन्दी, भारत का अभिमान हिन्दी,
फिर भी न जाने क्यों, हम हिन्दी से शरमाते हैं।

सबसे प्यारी सबसे न्यारी यही एक भाषा है,
आओ पढ़ें और पढ़ाएँ, आगे इसको और बढ़ाएँ।

नवम् हिन्दी महोत्सव की अपार सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ

HEMANG MANAV SEVA SAMITI

हेमंग मानव सेवा समिति

BHOPAL (MADHYA PRADESH). BHARAT.

Congratulations from

PANDIT KAPIL DEV SHASTRI
PANDIT KRISHNA KUMAR PANDEY
Dr. Naresh Sharma
Dr. Karuna Sharma
Mrs. Pragna Tripathi
Mrs Priyanka Tripathi
Mr. Nishith Tripathi

आदित्य कुमार आठवीं कक्षा के मेधावी छात्र हैं। इन्होंने हिन्दी यू.एस.ए. के विद्यालय से विशिष्ठा - २ तक की शिक्षा ग्रहण की है। अंग्रेजी के लेख बहुत ही सृजनात्मक ढंग से लिखते हैं। हिन्दी की उच्चतम कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद अब आदित्य बाल स्वयंसेवी कार्यकर्ता के रूप में हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़े हैं। आदित्य को वीडियो गेम खेलना, पुस्तकें पढ़ना तथा इंटर नेट पर नई-नई जानकारी प्राप्त करना बहुत ही पसन्द है। बहुत ही शांत व समझदार हैं व एक जिम्मेदार बड़े भाई हैं।

हिन्दी ज्ञान की आवश्यकता

मैंने हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशाला से विशिष्ठा – २ तक की कक्षा का ज्ञान प्राप्त किया है। वैसे तो हमारे घर में हिन्दी ही बोली जाती है परन्तु मेरी माँ ने मुझे हिन्दी लिखना व पढ़ना बहुत पहले ही जब मैं ७ वर्ष का था तभी सिखा दिया था। उस समय हम शारलेट, नॉर्थ कैरोलाइना में रहते थे। ५ वर्ष पहले यहाँ न्यूजर्सी में आए तो हिन्दी यू.एस.ए. के बारे में पता चला। तब मैंने वेद मन्दिर में हिन्दी यू.एस.ए. द्वारा चल रही हिन्दी कक्षा में जाना आरम्भ किया।

हम जब यह बात करते हैं कि हम हिन्दी क्यों सीखते हैं? तो सब यह उत्तर देते हैं ताकि हम भारत में अपने दादा-दादी, नाना-नानी तथा परिवार के बाकि सभी लोगों से बात कर सकें। कभी हम कहते यह हैं कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है, इसीलिए हम इसे सीखते हैं। ये सभी बातें बिल्कुल सही हैं। परंतु मुझे हिन्दी सीखने का एक और बहुत बड़ा लाभ हुआ कि अब मैं हिन्दी की पुस्तकें पढ़ सकता हूँ। मैं हिन्दी की कहानियाँ पढ़ कर अपने छोटे भाई को सुना सकता हूँ।

बहुत छोटे पन से मुझे हनुमान चालीसा सिखाई गई थी। जब मेरी माँ ने चालीसा सिखाई तो साथ-साथ अर्थ भी समझाया। कभी-कभी अर्थ याद रह जाता कभी-कभी हम भूल जाते। परंतु अभी कुछ दिन पहले मैंने एक पुस्तक में चालीसा का अर्थ पढ़ा तो बहुत अच्छा लगा। इसी प्रकार नई-नई कहानियाँ पढ़ना व बचपन में सीखे श्लोकों के अर्थ को पढ़ना बहुत अच्छा लगता है।

यहाँ यहाँ मैं आप सभी के लिए एक छोटी सी कहानी प्रस्तुत कर रहा हूँ : आशा से पुरुषार्थ भला

एक किसान के पास बहुत बड़ा खेत था। उसी खेत में एक मुर्गा-मुर्गी भी रहते थे। धीरे-धीरे फसल तैयार होने लगी, उधर मुर्गी ने भी अंडे दिए। कुछ दिनों बाद अंडे फूट गए और उनमें से चूजे निकले।

किसान रोज आता और जौ की बालियों को देखकर अनुमान लगाता कि फसल पकने में अभी समय बाकी है। मुर्गी के चूजे उसकी बात को सुनते और फिर जैसा किसान कहता वैसा ही मुर्गा-मुर्गी को बता देते।

समय बीतता गया। चूजे बड़े होने लगे। एक दिन किसान खेत में आया और बालियों को हाथ से छूकर बोला, ' फसल अब पक चुकी है। गाँव में जाकर पड़ोसियों से कहूँगा कि वे फसल काटने में मेरी सहायता करें।' यह कहकर किसान चला गया। संध्या के समय जब मुर्गा-मुर्गी खेत में आए तो चूजों ने किसान की बात उन्हें बता दी।

मुर्गा-मुर्गी ने अपने बच्चों से कहा, ' फसल कटने में अभी समय लगेगा। तब तक हम यहीं रहेंगे।'

कुछ दिनों बाद किसान फिर खेत में आया और बालियों को देखकर बोला, ' फसल तो पक चुकी है। पड़ोसी बिल्कुल निकम्मे हैं, अभी तक उन्होंने फसल नहीं काटी। कल छोटे भाइयों से जाकर कहूँगा कि वे फसल काटने में मेरी सहायता करें।' कहकर किसान चला गया।

शाम को मुर्गा-मुर्गी जब दाना चुनकर खेत में पहुँचे तो उनके बच्चों ने कहा, ' किसान आज भी आया था। वह कह रहा था कि वह अपने भाइयों को फसल काटने के लिए कहेगा।'

मुर्गा-मुर्गी ने अपने बच्चों से कहा, ' बेफिक्र होकर रहो। इतनी जल्दी फसल कटने वाली नहीं है।'

इस प्रकार ५ - ६ दिन और व्यतीत हो गए। एक दिन किसान

(शेष पृष्ठ ६० पर)

प्राची परिहार हिन्दी यू.एस.ए. की भूतपूर्व छात्रा हैं। कर्मभूमि पत्रिका के अनेक मुख्पृष्ठ आप डिजाइन कर चुकी हैं। संगीत, चित्रकारी, घर सजाना, दूसरों की मदद करना, भारतीय संस्कृति से जुड़े कार्यों में भाग लेना आदि इनके प्रिय शौक हैं। इस समय प्राची प्रिंसटन विश्वविद्यालय में भौतिक शास्त्र को मुख्य विषय के रूप में लेकर प्रथम वर्ष में पढ़ रही हैं। वे बचपन से ही एक मेधावी छात्रा हैं। हिन्दी और अंग्रेजी के अतिरिक्त वे जर्मन भाषा का भी ज्ञान रखती हैं।

दीदी की सीख

बच्चों क्या तुम जानते हो कि हिन्दी सीखने के क्या लाभ हैं

नीचे लिखे बिंदुओं को ध्यान से पढ़ो। इन्हें पढ़ने के बाद शायद तुम्हारी रुचि हिन्दी सीखने में और अधिक बढ़ जाए, और तुम अपने मित्रों को भी इसके बारे में गर्व से बता पाओ।

१. हिन्दी भारतीयता की पहचान है। यदि तुम्हें हिन्दी आएगी, तो तुम भारत से जुड़े रहोगे।
२. हिन्दी में वर्णों की संख्या ५२ है। यदि तुम इन वर्णों का सही उच्चारण करना सीख गए तो तुम विश्व की कोई भी भाषा बहुत आसानी से सीख सकते हो।
३. हिन्दी जानने से तुम अपने मम्मी-पापा, दादा-दादी, नाना-नानी की बातों को अच्छी तरह समझ सकोगे।
४. हिन्दी जानने से तुम भारतीय संस्कृति का पूरा-पूरा आनंद उठा सकोगे। तुम त्योहार, पूजा, भजन, आरती, फिल्में, फिल्मी गाने, देशभक्ति के गाने आदि समझकर दिल से गा सकोगे।
५. हिन्दी साहित्य बहुत ही समृद्ध है। दुनिया के किसी भी साहित्य में इतना ज्ञान और विस्तार नहीं मिलता जो हिन्दी साहित्य में मिलता है।

बच्चों क्या तुम जानते हो कि हिन्दी और संस्कृत जानने से तुम और भी बुद्धिमान हो जाओगे। हाँ, बच्चो यह सच है। यदि तुम प्रतिदिन हिन्दी लिखो या पढ़ो, तो तुम एक अतिरिक्त भाषा में निपुण तो हो ही जाओगे और साथ में अपनी पाठशाला की पढ़ाई भी ज्यादा आसानी से कर लोगे। इसका कारण यह है कि हिन्दी भाषा में ऊपर और नीचे दोनों तरफ मात्राएँ लगती हैं, जिन्हें लिखने और पढ़ने के लिए मस्तिष्क के दाएँ और बाएँ दोनों हिस्से सक्रिय हो जाते हैं, और मस्तिष्क तेजी से कार्य करने लगता है।

इसलिए बच्चों, हिन्दी सीखने में तुम जो समय लगा रहे हो, वह सचमुच समय का सदुपयोग है। बाद में बड़े होकर तुमको यह लगेगा कि तुमने हिन्दी सीख कर जीवन का सबसे अच्छा कार्य किया है, क्योंकि इससे तुम एक पूर्ण भारतीय बन सकोगे। पर बच्चों अपनी हिन्दी पर घमंड नहीं करना, केवल गर्व करना, और अपने माता-पिता को हिन्दी सिखाने के लिए धन्यवाद देना नहीं भूलना।

हिन्दी ज्ञान की आवश्यकता

फिर आया और खड़ी फसल को देखते हुए बोला, 'पड़ोसी भी निकम्मे हैं और भाई भी – कल मैं स्वयं आऊँगा फसल काटने के लिए।' कहकर वह चला गया।

अब तक चूजे बड़े हो चुके थे। सांयकाल जब मुर्गा-मुर्गी बच्चों के पास खेत में लौटे तो बच्चों ने उनसे कहा, ' आज किसान कह रहा था कि उसके पड़ोसी व भाई सभी निकम्मे हैं। कल से वह स्वयं ही फसल काटेगा। '

बच्चों के मुख से यह सुनकर मुर्गा बोला, ' हमें अब यहाँ से जाना होगा क्योंकि कल फसल अवश्य ही कटेगी। किसान अब स्वयं परिश्रम करने के लिए तैयार हो चुका है।' फिर अगले दिन भोर में ही मुर्गा-मुर्गी अपने बच्चों के साथ अन्य स्थान की ओर चल पड़े।

शिक्षा : दूसरों के भरोसे रहकर काम पूरे नहीं होते। ईश्वर भी उन्हीं की सहायता करते हैं जो अपनी सहायता स्वयं करना जानते हैं।

कहानी - अम्माँ सबकी प्यारी अम्माँ - प्राची परिहार

बच्चों, अमेरिका में मई के महीने में 'मदर्स डे' मनाया जाता है। भारतीय संस्कृति में माँ का स्थान सर्वोपरि है। भारतीय कैलेंडर में कोई 'माँ दिवस' नहीं होता, क्योंकि हमारी संस्कृति प्रतिपल माँ को सम्मान देने और उसे याद रखने की संस्कृति है। बच्चों, हो सके तो प्रतिदिन मदर्स डे मनाओ। तुम माँ की हर बात मानो, कक्षा में अच्छे नंबर लाओ, और खूब पढ़ाई करो। तुममें जो भी विशेष गुण हैं, उन्हें बहुत मेहनत करके निखारो। तुम्हारी सही दिशा में प्रगति और तुम्हारे जीते हुए पुरस्कार ही माता-पिता के लिए सबसे अच्छा उपहार हैं।

मैं तुम्हें एक संवेदनशील कहानी सुनाने जा रही हूँ, जो यह बताती है कि केवल तुम ही नहीं जानवर भी अपनी माँ को बहुत प्यार करते हैं।

एक छोटा सा लड़का था। उसका नाम जगदीश था। वह अपने माता-पिता के साथ एक बड़े से घर में रहता था। उसकी कोई बहिन या भाई नहीं था। अकेला होने के कारण वह ऊब जाता था। एक दिन उसके मन में विचार आया कि यदि वह कोई जानवर पाल ले तो उसका समय उसके साथ खेलने में अच्छा बीतेगा।

एक दिन वह अपने घर के पिछवाड़े में खेल रहा था। उसने देखा कि पेड़ पर एक गिलहरी का बच्चा बैठा था, जो आम को खाने का प्रयास कर रहा था। जगदीश के मन में उस बच्चे को पकड़ने का विचार आया। उसने एक पत्थर उठा कर उस आम पर मारा, जिससे वह आम धरती पर गिर पड़ा और साथ में गिलहरी का बच्चा भी धड़ाम से धरती पर आ गया। जगदीश तो तैयार ही था, उसने झट से बच्चे को पकड़ लिया।

बच्चे की माँ गिलहरी यह सब देख रही थी। वह सहायता के लिए जोर-जोर से चिल्लाने लगी। उसकी आवाज सुनकर बच्चा भी करुण आवाज में चिल्लाने लगा। जगदीश ने उनके चिल्लाने पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने गिलहरी के बच्चे को एक पिंजड़े में बंद कर दिया। पिंजड़े के अंदर एक कटोरी में पानी और रोटी का टुकड़ा रख दिया। थोड़ी देर जगदीश देखता रहा कि शायद बच्चा वह खाना खाएगा, लेकिन बच्चे ने खाने की ओर देखा तक नहीं, बल्कि वह पिंजड़े में इधर- उधर भाग कर बाहर निकलने का रास्ता ढूँढता रहा।

जगदीश ने सोचा कि यदि वह बाहर चला जाएगा, तो शायद गिलहरी का बच्चा खाना खा लेगा। यह सोचकर वह पर्दे के पीछे छुप गया, और देखने लगा कि अब बच्चा क्या करता है। उसने देखा कि बच्चा चीं-चीं की आवाज करने लगा, और उसकी आवाज सुनकर उसकी माँ खिड़की पर आ गई। उसने इधर-उधर देखा और एक ही छलाँग में वह पिंजड़े के ऊपर बैठ गई, और बच्चा उससे आकर चिपक गया। यह देख कर जगदीश को बहुत बुरा लगा, और वह डंडा लेकर दौड़ा। उसे देख कर गिलहरी खिड़की से कूद कर भाग गई। जगदीश ने खिड़की बंद कर दी, और वह आराम से जाकर सो गया।

सुबह जब वह गिलहरी के बच्चे के पास पहुँचा तो उसने देखा कि वह एक कोने में दुबका बैठा है, और उसने खाना भी नहीं खाया। जगदीश को चिंता हुई। उसने सोचा कि यदि यही हाल रहा तो बच्चा मर जाएगा। यह सोच कर वह बहुत दुखी हो गया। अचानक ही उसे एक विचार आया और उसने कमरे की खिड़की खोल दी, और वह स्वयं पर्दे के पीछे छुप गया।

उसने देखा कि गिलहरी आई और साथ में एक फल भी लाई। वह कूद कर पिंजड़े में बैठ गई, और अपने बच्चे को खूब प्यार करने लगी। उसके बाद उसने वह फल धीरे से पिंजड़े में डाल दिया। जगदीश आँखें फाड़ कर देख रहा था कि गिलहरी का बच्चा जल्दी-जल्दी वह फल खा रहा था। बीच-बीच में वह अपनी माँ को भी प्यार भरी नजरों से देख लेता था, मानो कह रहा हो कि माँ तुम कितनी अच्छी हो। मेरा कितना ध्यान रखती हो। तुम अब यहीं रहना, मुझे छोड़ कर मत जाना।

यह दृश्य देख कर जगदीश को अपनी माँ की याद आ गई, और

(शेष पृष्ठ ६२ पर)

संजना मेहता १४ वर्ष की हैं और मोंटगोमेरी मिडल स्कूल में आठवीं कक्षा की छात्रा हैं। आप मोंटगोमेरी हिन्दी पाठशाला में प्रथमा-२ स्तर के बच्चों की सह-अध्यापिका के रूप में हिन्दी का ज्ञान बाँट रही हैं। इन्हें हिन्दी गीत व भजन गाने का शौक है। बच्चों के साथ बातचीत करना इन्हें बहुत अच्छा लगता है।

मेरी अब तक की हिन्दी की यात्रा

मेरा नाम संजना मेहता है और मैं मोंटगोमेरी हिन्दी पाठशाला में सह-अध्यापिका हूँ। पिछले एक वर्ष से मैं हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशाला में पढ़ा रही हूँ।

मैंने हिन्दी अपने पिताजी से सीखी है। " कहो न प्यार है " फिल्म से मेरी हिन्दी यात्रा आरम्भ हुई। इस फिल्म को देखते-देखते मेरे पिताजी ने मुझ से हिन्दी में बात करना शुरु किया। जब मैं सरलता से हिन्दी बोलने लगी तो मेरे पिताजी ने सोचा कि वे मुझे हिन्दी लिखना व पढ़ना भी सिखा दें। जब मेरी दादी भारत से हमारे पास आती थीं तो साथ में हमारे लिए हिन्दी की पुस्तकें भी लाती थीं। मुझे हिन्दी पढ़ना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था, लेकिन मेरे पिता जी के कठिन परिश्रम के कारण मुझे हिन्दी लिखना व पढ़ना आ गया। जब मैं भारत जाती थी तो मेरे रिश्तेदार मेरी अच्छी हिन्दी सुनकर हैरान हो जाते थे।

जब मैं ११ वर्ष की थी तो आसानी से हिन्दी बोल, लिख और पढ़ लेती थी। १२ वर्ष की हुई तो मेरे दोस्तों के माता-पिता ने मुझे उनके बच्चों को हिन्दी सिखाने का सुझाव दिया।

सन २००८ की गर्मियों की छुट्टियों में मैंने ५ बच्चों को ८ सप्ताहों में हिन्दी लिखना और पढ़ना सिखाया। उस वर्ष मेरी एक दोस्त की माताजी ने अध्यापिका ममता त्रिपाठी जी को बताया कि मैं हिन्दी पढ़ाती हूँ। फिर जनवरी २००९ में मैं ममता जी के साथ हिन्दी पढ़ाने लगी। मुझे उनके साथ पढ़ाना इतना अच्छा लगा कि मैं इस वर्ष भी मोंटगोमेरी हिन्दी पाठशाला में पढ़ा रही हूँ।

मेरा मानना है कि हिन्दी सीखना अपने भारत से रिश्ता बनाए रखने के लिए बहुत आवश्यक है। जैसे-जैसे भारतवाशी पूरे विश्व में फैल रहे हैं, वैसे-वैसे हिन्दी भी फैल रही है। "स्लमडॉग मिल्यनेर" फिल्म से भी हिन्दी का बहुत प्रचार हुआ है। विश्व विद्यालयों ने भी हिन्दी का महत्व महसूस किया है और हिन्दी पढ़ानी शुरु की है। भारत एक शक्ति बन कर उभर रहा है। यदि भविष्य में भारत जाकर किसी को काम करना पड़े तो हिन्दी का ज्ञान बहुत उपयोगी होगा। मुझे लगता है हिन्दी सीखने के बहुत फायदे हैं और हम सब भारतीयों को हिन्दी आनी ही चाहिए।

मेरी अब तक की हिन्दी की यात्रा बहुत अच्छी रही। अगर मेरे पिताजी ने मुझे हिन्दी नहीं सिखाई होती तो मैं अपनी दादी और नानी से बात ही नहीं कर पाती। अगर मुझे हिन्दी बोलनी और समझनी नहीं आती तो मैं हिन्दी फिल्में इतने आनन्द से नहीं देख पाती, और मुझे हिन्दी पढ़ाने का यह सुअवसर जो हिन्दी यू.एस.ए. ने दिया है नहीं मिल पाता।

कहानी - अम्माँ सबकी प्यारी अम्माँ - प्राची परिहार

उसका हृदय ग्लानि से भर गया। उसी क्षण उसने दौड़ कर पिंजड़े का दरवाजा खोला, और गिलहरी के बच्चे को निकाल कर पेड़ के नीचे छोड़ दिया। बच्चा दौड़ कर पेड़ पर चढ़ गया। वहाँ जाकर वह अपनी माँ से चिपक गया। गिलहरी के बच्चे को खुश देखकर जगदीश ताली बजाने लगा। अचानक ही उसके मुँह से निकल गया, 'अम्माँ सबकी प्यारी अम्माँ', और उसने निर्णय किया कि वह अब कभी भी किसी जानवर को उसकी माँ से अलग नहीं करेगा। उस दिन से वह गिलहरी का बच्चा जगदीश का मित्र बन गया था। जगदीश प्रतिदिन उसके साथ खेलता, और उसे रोज नई-नई चीजें खाने को देता।

रामायण की पहेलियाँ - रचिता सिंह

बच्चों, यहाँ पर कुछ पहेलियाँ दी जा रही हैं, जिनके उत्तर में तुम्हें रामायण के पात्र का नाम बताना है। उत्तर इसी पत्रिका में दिए गए हैं।

१. राम-लखन को कौन ऋषि महलों से लेकर आए।
असुरों को अत्याचारों के उन्हें दृश्य दिखलाए॥
निशिचरहीन करेंगे धरती बात गले बैठाई।
रावण के अत्याचारों से धरा मुक्त करवाई॥

२. रामकथा के थे प्रथम लेखक-गायक आप।
क्रौंच विरह को देखकर फूट पड़ा संताप॥
'मरा-मरा' के जाप से ब्रह्मज्ञान था पाया।
जरा जोर से बोलो-- तुमने क्या है नाम बताया॥

३. रामकथा का अमृत तुलसी बाबा ने पिलवाया।
जन-जन की भाषा में था सो सबने उसको पाया॥
घर-घर औ' लीलाओं में उसको श्रद्धा से गाते।
हिन्दू धर्म बचा उससे ये है बुजुर्ग बतलाते॥

४. अवधी भाषा में लिखी रामकथा विस्तार।
हिन्दू जनता से मिला उनको प्रेम अपार॥
पत्नी की आलोचना ने दिखलाई राह।
निश दिन फिर बढ़ता गया राम प्रेम उत्साह॥

५. पिता और चाचाओं से भी थे वे ज्यादा वीर।
मार गिराई सारी सेना ऐसे थे रणधीर॥
पकड़ यज्ञ का घोड़ा हर्षित थे वे दोनों भाई।
माता ने ही फिर उनकी सबसे पहचान कराई॥

६. जनकसुता ने कष्ट उठाए चौदह वर्षों वन में।
किंतु किंचित् फर्क न आया फिर भी उसके मन में॥
गए राम जब वन को वो भी संग उन्हीं के आई।
पतिव्रत्य की मर्यादाएँ उसने थीं सदा निभाई॥

७. मिथिला के अधिराज जनक ने उसे खेत में पाया।
रोते देखा कन्या को सीने से उसे लगाया॥
थी अज्ञात शील-कुल की पर बेटी उसे बनाकर।
सौंपा रामचन्द्र के हाथों करके भव्य स्वयंवर॥

८. अवधपुरी के घर-घर में है दीपोत्सव त्योहार।
रामचन्द्रजी वापस आए कर रावण संहार॥
दीपमालिका की तिथि हमको ठीक-ठीक बतलाओ।
मुँह मीठा कर साथ हमारे फिर तुम दीप जलाओ॥

९. माता थीं वो राम की दशरथ की पटरानी।
निश्चित तुमने भी सुनी होगी करुण कहानी॥
आँखों से देखा स्वयं बने राम वनवासी।
उनसे ज्यादा छाई होगी किस पर भला उदासी॥

१०.सीता माता की मुक्ति को हुआ भयानक युद्ध।
मेघनाद ने शक्ति मारी लक्ष्मण को हो क्रुद्ध॥
गए हिमालय हनुमत और वो बूटी लाए।
नाम बताओ उसका जिसने लखन जिलाए॥

११.लक्ष्मण जब मूर्च्छित हुए चिंतित थे सब लोग।
हनुमत लाए उड़कर वैद्य-बताया रोग॥
वैद्यराज का नाम सोचकर हमें बताओ।
राम-लखन-हनुमान सभी के आशिष पाओ॥

१२.छह-छह मास वो सोता औ' जगता था।
रावण भी खुद कभी-कभी उससे डरता था॥
युद्धभूमि में उसने तांडव रूप दिखाया।
मगर राम ने रण में उसको मार गिराया॥

१३.था लंका का राज वीर पुरुष ज्ञानी-विज्ञानी।
लेकिन सीता को ले आया और राम से ठानी॥
एक न मानी जाने किस-किसने उसको समझाया।
स्वयं मरा परिवार-मित्र, सेना को भी मरवाया॥

रामायण की पहेलियाँ - रचिता सिंह

१४.कथा सुनाती थीं बचपन में दादी-नानी।
दशरथ के घर में थी ऐसी कुलटा रानी॥
दासी की बातों में आ षड्यंत्र रचाया।
राम-लखन-सीता को फिर वन में भिजवाया॥

१५. लंका पहुँचे किस तरह करके सागर पार।
कठिन समस्या आ अड़ी कैसे हो उद्धार॥
राम-लखन की सेना में थे दो अभियंता।
पत्थर तैरा शीघ्र बनाया पुल और रस्ता॥

रामायण पहेलियों के उत्तर:

१. विश्वामित्र
२. वाल्मिकी
३. राम चरित मानस
४. गोस्वामी तुलसी दास
५. लव - कुश
६. सीता
७. सीता
८. दीपावली
९. कौशल्या
१०.संजीवनी बूटी
११.सुषेण वैद्य
१२.कुम्भ कर्ण
१३.लंकेश रावण
१४.कैकेयी
१५.नल और नील

रावण -दहन -- दीपक अग्रवाल

इस बार जब मैं रावण -दहन देखने बच्चों के साथ आया
रावण के पुतले को अपनी तरफ कुछ इस तरह मुस्कुराते पाया
मानो कह रह हों कि ए मानव तू मुझे जलते देखने है आया
क्या अपने अन्दर स्थापित रावण को तू अभी तक जला है पाया
मेघनाद सा दम्भ तुझमें , कुम्भकरण सा भोग विलासी है तू
आदर्शों की जहाँ न कीमत, ऐसे संसार का वासी है तू
क्या तूने कभी कलियुग की सीता को ध्यान से है देखा
आधुनिकता की दौड़ में लाँघ रही मर्यादा की लक्ष्मणरेखा
तेरी कलियुग की रामायण तो देती है अजब अनोखा ही आभास
जिसमें सीता को मिलता है रनिवास, सास ससुर को मिले वनवास
"कृष्ण-सुदामा" सी दोस्ती नहीं दिखती तेरे इस संसार में
सोने चाँदी में तो सुना था ,अब तो खोट है तेरे प्यार में
पुतले की इन सच्ची बातों ने मुझको निरुत्तर सा कर दिया
बच्चों का हाथ पकड़ कर धीरे से घर की ओर चल दिया।

प्रस्तुत लघु कथा की रचियता **सुश्री श्वेता सीकरी जी,** एडिसन, न्यू-जर्सी में रहती हैं, तथा भारत में हरियाणा प्रान्त की रहने वाली हैं। इनके दो बच्चे हैं। बड़ा बेटा ६ वर्ष का है तथा एडिसन हिन्दी पाठशाला में हिन्दी का विद्यार्थी भी है। श्वेता जी, मर्क फारमेसुएटीकल, औषध निर्माण करने वाले बहुराष्ट्रीय संस्थान में कंप्यूटर विश्लेषक के पद पर कार्यरत हैं। कार्य में व्यस्त होने के उपरांत भी परिवार तथा बच्चों को बहुत समय देती हैं। अमेरिका में रहते हुए भी बच्चों को भारतीय संस्कार, भाषा एवं संस्कृति सिखाने हेतु पूर्ण रूप से कटिबद्ध एवं संकल्पित हैं। 'जीत की मिठास' एक सुन्दर मर्मस्पर्शी बाल कथा है जिसे श्वेता जी ने हाल ही में लिखा है।

जीत की मिठास ....

एक बार एक नगर में दो जुड़वां भाई रहते थे। जिनके नाम वरुण और तरुण थे। दोनों थे तो जुड़वाँ, पर दोनों के स्वभाव में अत्यधिक अन्तर था। वरुण जहाँ मेहनत करने से दूर नहीं भागता था, वहीं तरुण काम से जी चुराता था। वरुण अपने भाई की इस आदत को भली भाँति जानता था, पर आपस में प्यार होने के कारण, वरुण उसका भी काम खुद ही कर लेता था। जब भी उसकी मम्मी उनको अपना कमरा साफ करने के लिए कहती थीं तो सारा काम वरुण ही कर देता था। स्कूल में भी ऐसा ही होता था। अगर तरुण से स्कूल का कोई काम नहीं होता था तो वरुण उसके कार्य को कर देता था।

एक बार वरुण और तरुण की कक्षा के बच्चों को दूसरी स्कूल में जाकर एक प्रतियोगिता में भाग लेना था। सारे बच्चों ने खूब मेहनत की, परन्तु हर बार की तरह तरुण ने कोई मेहनत नहीं की। प्रतियोगिता का दिन आ गया और सभी बच्चों ने अपना अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन तरुण का प्रदर्शन सबसे ख़राब रहा। उसे इस बात का कोई दुःख नहीं था। जहाँ तरुण का प्रदर्शन बुरा रहा, वहीं वरुण का प्रदर्शन सर्वश्रेष्ठ होने पर उसे विजयी घोषित कर पुरस्कृत किया गया। वरुण को अपनी जीत की बहुत ख़ुशी थी, पर इसके साथ ही अपने भाई तरुण की असफलता तथा प्रतियोगिता में जीतने हेतु कोई प्रयास न करने के कारण दुःख भी था।

तरुण भी इस बात से परेशान था कि वह अपने माता-पिता को अपने बारे में क्या बतलायेगा। यही सोच कर उसने वरुण से कहा कि यह इनाम उसे चाहिए और माता-पिता को भी यही कहना होगा कि यह इनाम तरुण ने जीता है , वरुण ने नहीं। प्रत्येक बार की तरह वरुण ने तरुण की यह बात मान ली और और अपना पुरस्कार तरुण को दे दिया। दोनों भाई जब घर पहुँचे और अपने माता-पिता से तरुण ने प्रतियोगिता में अपनी विजय के बारे में झूठ बोलकर वरुण द्वारा जीता हुआ इनाम अपना बतलाकर दिखलाया तो उसके माता-पिता अत्यंत प्रसन्न हुए, और उन्होंने तरुण की बहुत प्रशंसा की और उसे बहुत प्यार किया। उसने माता-पिता को इस बात का जरा भी भान न होने दिया कि वास्तव में यह इनाम तरुण ने नहीं अपितु वरुण ने जीता है।

माता पिता से झूठ बोलकर लिए जाने वाले इस सम्मान, प्रशंसा, एवं प्यार से तरुण को कुछ क्षण के लिए बहुत प्रसन्नता हुई, परन्तु इस प्रसन्नता को वह अपने हृदय में ज्यादा समय तक न रख पाया। पहली बार उसे इस बात का दुःख हुआ कि उसके भाई की जीत को अपनी जीत बतलाकर उसने बहुत अशोभनीय काम किया है। उसे अपनी इस करनी पर पश्चाताप होने लगा। वरुण को भी अपने भाई की इस तरह की ये आदत उचित प्रतीत नहीं हुई। माता-पिता द्वारा प्रशंसा एवं प्यार का असली हकदार तो वरुण ही था। उसने अब मन में ठान लिया कि वह तरुण की यह बुरी आदत सुधारेगा।

अगले दिन जब स्कूल में तरुण ने वरुण को उसका काम करने के लिए कहा तो वरुण ने उसे कहा कि इसके बदले तरुण को उसकी एक बात माननी होगी। तरुण उसकी बात मानने के लिए झट से राजी हो गया। शाम को जब उनकी मम्मी ने कमरा साफ करने के लिए कहा तो वरुण ने तरुण से कमरा साफ करने के लिए कहा, और उसे याद दिलाया कि उसने वरुण की बात मानने का वायदा किया था। बस फिर क्या था तरुण ने पलक झपकते ही तुरंत कमरा साफ कर दिया।

जीत की मिठास ....

बस फिर तो यही सिलसिला बन गया। जब भी तरुण को वरुण से कोई कार्य करवाना होता तो बदले में उसे भी काम करना पड़ता था। इससे तरुण को धीरे-धीरे कुछ काम करने की आदत पड़ रही थी।

अगले वर्ष एक दिन फिर उसी प्रतियोगिता का समय आ गया। परन्तु इस बार भी तरुण का मन इसे जीतने के लिए मेहनत करने को तैयार नहीं था। उसके मस्तिष्क में अभी भी यही कुविचार आ-जा रहे थे कि वो वरुण के इनाम को अपना बतलाकर माता-पिता को प्रसन्न कर देगा। परन्तु यह क्या? ठीक प्रतियोगिता वाले ही दिन वरुण बीमार हो गया। ऐसे में वरुण ने तरुण को बुला कर कहा कि उसे अपने भाई पर पूर्ण विश्वास है कि वह इस प्रतियोगिता में अवश्य ही विजयी होगा। तरुण बहुत सहमा हुआ था।

प्रतियोगिता प्रारंभ हुई और एक-एक करके सभी बच्चों ने अपना-अपना प्रदर्शन दिया। तरुण की बारी आने पर उसने भी बहुत प्रयास करके अपना अच्छा प्रदर्शन दिया। प्रतियोगिता के परिणाम घोषित होने पर तरुण के आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि उसे इस प्रतियोगिता में सर्वाधिक अंक प्राप्त हुए एवं वह विजेता घोषित किया गया। उसे प्रतियोगिता जीतने पर सुन्दर पुरस्कार दिए गए। पुरस्कार जीत कर घर जाते समय अचानक ही तरुण को आज इस बात का अहसास हुआ कि स्वयं के श्रम एवं प्रयास से जीतने में कितना आनंद मिलता है। गत वर्ष अपने भाई की जीत के गौरव को चुराकर उसने कितना निंदनीय कार्य किया था। तरुण दौड़ा-दौड़ा घर पहुँचा और अपने माता-पिता को अपना इनाम दिखाया। उसके माता-पिता बेटे की सफलता से बहुत प्रसन्न हुए और उसे खूब प्यार किया। आज माता-पिता का यह प्यार उसे बहुत अच्छा लग रहा था। फिर वह दौड़ा-दौड़ा वरुण के पास गया और उसे अपना इनाम दिखाया। वरुण अपने भाई की प्रतियोगिता में हुई जीत से बहुत प्रसन्न हुआ और उसने तरुण से कहा कि उसके लिए एक और इनाम है। एकाएक वरुण अपने पलंग से खड़ा हो गया और तरुण को हँसते हुए कहा कि उसने बीमार होने का नाटक किया था। असल में वह तरुण को अपने स्वयं की मेहनत से प्रतियोगिता जीत कर उसका अहसास करवाना चाहता था। दोनों भाई इस बात पर खूब हँसे।

अपने भाई का उसके प्रति इतना स्नेह एवं समर्पण देखकर, तरुण का मन पिछले वर्ष की प्रतियोगिता में झूठ बोलकर अपने माता-पिता को धोखा देने तथा अपने भाई के प्रति किये गए अन्याय के अपराधबोध द्वारा ग्लानि से भर उठा। उससे अब ज्यादा सहा नहीं गया। वह फूट-फूट कर रोने लगा और अपने माता-पिता को सारी बातें सच-सच बतला दीं। पापा-मम्मी ने जब पूरी बातें सुनीं तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ तथा दुःख भी। उन्होंने दोनों बच्चों को गले लगाया और उनकी बहुत प्रशंसा की। उस दिन के बाद तरुण अपना सभी कार्य स्वयं करने लगा। उसमें अपना स्वाभिमान, तथा आत्मविश्वास इस घटना के पश्चात स्वतः ही जागृत हो गया। जो उपलब्धि अपने स्वयं के परिश्रम द्वारा अर्जित की जाती है उसकी ख़ुशी कुछ और ही होती है। अपने भाई वरुण के प्रति उसका आदर एवं सम्मान सदा के लिए उसके हृदय में दृढ़ होकर समा गया....

जब देखने जाएँ किसी बीमार व्यक्ति को - राज मित्तल

हम सभी के जीवन में ऐसे अवसर तो प्राय: आते ही रहते हैं, जब हमारे कोई परिजन, मित्र, अथवा सम्बन्धी अस्वस्थ हों, और उनकी कुशलक्षेम जानने हेतु उनके निवास या चिकित्सालय में जाना होता है। बहुत बार यदि किन्हीं विवशताओं के कारण वहाँ जाना संभव न हो तो हम फ़ोन पर ही रोगी अथवा उनके परिवार जनों से बात करके उनकी कुशलक्षेम जानने का प्रयास करते हैं।

रोगी की कुशलक्षेम पूछना तथा उनके ऐसे विकट समय में उन्हें सच्ची एवं आत्मिक सांत्वना प्रदान करना एक महत्वपूर्ण कला है। शायद यह बात जन-सामान्य के लिए इतना महत्व नहीं रखती, किन्तु यदि इसे गंभीरता से लिया जाय तो इसके परिणाम अत्यंत सुखद होंगे। इसके परिणाम अत्यंत दुखद भी हो सकते हैं, यदि हम इस बारे में ठीक से नहीं सोचें।

किसी मित्र या सम्बन्धी का उनकी बीमारी में हाल मालूम करने जाना मात्र एक औपचारिकता नहीं, अपितु हमारी व्यवहार कुशलता एवं सूझ-बूझ उनके लिए एक मनश्चिकित्सा (Therapy) का कार्य करती है। आपका व्यवहार उनके प्रति अत्यंत मृदु हो तथा आपकी उपस्थिति उन्हें ऐसा अहसास दिलाये कि आपसे मिलकर रोगी के हृदय को सुकून मिले, और आपके साथ बिताये कुछ पल उनकी अस्वस्थता व दु:ख को कम करने में सहायक हो। रोगी से बात करते समय हमें कुछ सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि बीमारी में रोगी की मानसिक एवं शारीरिक मन:स्थिति अत्यंत संवेदनशील हो जाती है। हमारे द्वारा कोई भी अनुपयुक्त वार्तालाप रोगी की मानसिक स्थिति को और ज्यादा विकृत कर उसकी बीमारी को कम करने के स्थान पर अधिक जटिल बना सकता है।

प्राय: देखा गया है कि कई व्यक्ति रोगी से मिलते ही उससे किसी ऐसी घटनाओं की चर्चा करने लगते हैं, जिसके कारण वह पहले से ही दुखी है और उन्हें वह भुलाना चाहता है। कुशलक्षेम पूछने आने वालों द्वारा उन्हीं घटनाओं का पुन: जिक्र उसके घावों पर नमक छिड़कने जैसा कार्य करता है। रोगी से हमें उनकी व्यक्तिगत ऐसी किसी भी दु:खद घटनाओं का ज़िक्र नहीं करना चाहिए जिससे उनका मानसिक संतुलन बिगड़ जाये। रोगी से अपना वार्तालाप समयस्थिति, रोगी की मानसिक अवस्था तथा उसकी अस्वस्थता के कारणों को ध्यान में रख कर ही प्रारंभ किया जाना चाहिए। यह एक कुशल कला है जिसे प्रत्येक मनुष्य को समझना चाहिए। आपकी समझदारी रोगी को मानसिक संतोष प्रदान कर उसे रोगमुक्त करने में अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकती है, तथा इसके विपरीत असावधानीवश कही गयी बातें रोगी को विचलित कर उसकी मानसिक एवं शारीरिक मन:स्थिति को और कमजोर कर सकती हैं, और कई बार ऐसा भी पाया गया है कि ये रोगी की मृत्यु के कारण भी बन सकते हैं।

जब हम किसी रोगी से मिलने जाएँ तो कुछ मुख्य बातें हमें ध्यान रखनी चाहिए। इनका उल्लेख नीचे किया जा रहा है। यदि इन बातों पर गंभीरता से ध्यान दिया जाय तो न केवल आप रोगी को उसकी बीमारी में स्वास्थ्य लाभ करने में सहायक होंगे, बल्कि रोगी को आपसे मिलकर अत्यंत प्रसन्नता होगी, एवं कुछ समय के लिए वह अपनी बीमारी, दु:ख आदि सभी कुछ भूलकर आपके साथ बिताये गए समय को अपने जीवन के बहुमूल्य क्षण मानकर सदैव याद रखेगा।

-रोगी से मनोबल बढाने वाली बातें ज्यादा से ज्यादा करें।

- रोगी से मिलने जाने पर ज्यादा तड़क-भड़क वाले कपड़े, गहने, मेकअप अदि न हो।

- रोगी से मिलने अस्पताल द्वारा निर्धारित समय पर ही जाएँ।

- रोगी के पास ज्यादा देर तक रुक कर बातें न करें।

- अपना डॉक्टरी ज्ञान न दें तथा सुने सुनाये इलाज न बताएँ।

- रोगी का उसके डाक्टर के प्रति अविश्वास पैदा न करें।

- जहाँ तक हो सके बच्चों को साथ न ले जाएँ।

जब देखने जाएँ किसी बीमार व्यक्ति को ....

- आपके चेहरे से रोग की गंभीरता का पता रोगी को न चले, यदि रोगी किसी भयंकर रोग से पीड़ित भी हो तो उनसे उसके दुष्परिणामों के बारे में कभी भी चर्चा न करें।

- रोगी को व्यर्थ की दिलासा न दें , और न उसके पास बैठ कर रोयें। इससे उसका मनोबल गिरता है।

- रोगी के किन्हीं पुराने ज़ख्मों को कुरेदकर उसे किसी प्रकार का मानसिक आघात न दें।

- वृद्ध एवं असमर्थ रोगी की बात ध्यान से सुनें, और उसकी बात समाप्त होने पर ही अपनी बात प्रारंभ करें।

- बीमारी में रोगी का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है, इसलिए किसी भी प्रकरण पर बहस न करें। रोगी से किसी प्रकार के तर्क-वितर्क कभी भी न करें।

- रोगी व उसके परिवार से स्वागत सत्कार की आशा न रखें।

- रोगी को तरह-तरह की बीमारियों के किस्से न सुनाएँ, तथा न ही उनके खतरों के बारे में बताकर उसके दिल में भय उत्पन्न करें।

- रोगी को उसके पसंद की कोई वस्तु जैसे कोई पुस्तक, उसके पसंदीदा गानों अथवा फिल्म की कैसेट अथवा सी.डी., फूलों का गुलदस्ता आदि भेंट में दें जो उसे कुछ मानसिक सुख प्रदान कर सके।

- अपने वार्तालाप के दौरान रोगी का भरपूर मनोरंजन करें। उनके जीवन के सुखमय क्षण जो आपने कभी उनके साथ बिताये हों, ऐसी घटनाएँ जो हास- परिहास युक्त हों, की चर्चा करें। रोगी को वह सुनकर अच्छा लगेगा, और कुछ क्षणों के लिए वो अपनी अस्वस्थता के बारे में बिल्कुल भूल जायेगा।

- रोगी से उनके मनपसंद संगीत, गाने, फिल्म, कविता, साहित्य, जिसमें उनकी अभिरुचि हो, के बारे में चर्चा-परिचर्चा करें, तथा वातावरण को पूर्णतया हास-परिहास युक्त रखें।

- आप रोगी के यदि बचपन के साथी हैं, या स्कूल/ कॉलेज आदि में साथ पढ़े हों तो, अपने विगत दिनों की पुरानी सुखद घटनाओं का उल्लेख करें, तथा रोगी को अपने समय के कुछ सुखद क्षणों की स्मृति कराएँ। इससे रोगी का मनोरंजन भी होगा, और साथ ही साथ उनका ध्यान अपनी अस्वस्थता से हटकर कुछ क्षणों के लिए दूसरी बातों में केन्द्रित रहेगा।

- राजनैतिक विषयों पर जो कि रोगी के जीवन से सम्बंधित न हों, पर भी चर्चा-परिचर्चा की जा सकती है, परन्तु ध्यान रहे कि किसी प्रकार का अनुपयुक्त वाद-विवाद इससे पैदा न हो।

ध्यान रखियेगा, आप अपना समय लगाकर अपने निकटतम की अस्वस्थता का हाल-चाल पूछने जा रहे हैं, आपका वहाँ जाने का मुख्य उद्देश्य रोगी की सहायता करना, तथा उसे ऐसे क्षणों की अनुभूति करवाना है कि रोगी उन क्षणों में अपनी बीमारी तथा मानसिक दुःख को बिल्कुल भूल जाये। अपनी तरफ से ऐसा कोई कार्य या वर्ताव न करें, जिससे कि रोगी का दुःख और मानसिक संताप कम होने के बजाय और बढ़ जाये। रोगी पर इस तरह का प्रभाव डालें कि वह आपको याद रखे। बीमारियों के ठीक होने में जितना महत्व इलाज और दवाओं का है, उससे अधिक महत्व कई बार रोगी की मानसिक अवस्था को स्वस्थ रखना, एवं रोगी के साथ व्यवहार का महत्व है। यह एक मनोचिकित्सा है जो कि कई मायनों में दवाओं से ज्यादा प्रभावी सिद्ध होती है।

मीना राठी जी हिन्दी यू.एस.ए. में लगभग तीन वर्षों से स्वयंसेविका की महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। मीना जी का विशेष योगदान हिन्दी यू.एस.ए. के मंचों को सजाने और भारतीय साज-सज्जा की चीजों के प्रदर्शन में रहता है। मीना जी लावरेंसविल हिन्दी पाठशाला में भी विद्यार्थियों को हिन्दी के कार्यक्रमों को तैयार करने में उनकी सहायता करती हैं और इस पाठशाला के प्रमुख कार्यकर्ताओं में से एक हैं।

रेकी - ऊर्जा चिकित्सा

रेकी प्राकृतिक चिकित्सा की एक बहुत प्राचीन कला है। "रे" का अर्थ है "जीवन शक्ति" और "की" / "ची" अर्थात् "ऊर्जा" या "प्राण"।

रेकी के इतिहास के अनुसार जापान में सन् १९२२ में कुछ धर्मशास्त्री छात्रों ने उनके अध्यापक डॉ. मिकाओ सूई को चुनौती दी कि वे भी उन्हें ऐसी उपचार शक्ति दिखाएँ, जैसी ईसा या उनसे पहले के संतों में विद्यमान थी। अध्यापक इस चुनौती का उत्तर देने में असफल रहा, लेकिन उसने उत्तर ढूँढना आरम्भ कर दिया। उनके बीस वर्षों के अथक प्रयास के बाद उन्हें संस्कृत में लिखे हिन्दुओं के उपनिषद ग्रंथ में उत्तर मिला। उन्होंने इसका अध्ययन किया और तत्पश्चात् २१ दिनों का उपवास रखा, और जापान में करमा पर्वत पर तपस्या की, जहाँ उन्हें रेकी प्रतीकों का ज्ञान प्राप्त हुआ। यह उपचार विधि (पद्धति) पुनः जागृत की गई और पीढ़ी दर पीढ़ी आगे सिखाई गई।

रेकी जापान की एक तकनीकी प्राचीन कला है, जो तनाव को कम करके विश्राम को बढ़ाती है, और उपचार को बढ़ावा देती है। रेकी एक अनदेखी "जीवन शक्ति ऊर्जा" है, जो हाथों के द्वारा संचारित होकर हमें जीवन प्रदान करती है। यदि जीवन शक्ति ऊर्जा कम है तो हम में तनाव अधिक होगा, और हमारे बीमार होने की सम्भावना भी अधिक होगी। अगर ऊर्जा शक्ति अधिक या ऊँची होगी तो हम खुश और स्वस्थ होंगे। रेकी मनुष्य के सम्पूर्ण शरीर, दिमाग, भावनाओं और मन उत्साह का इलाज करती है, और हमें सुख, शांति व सुरक्षा की भावना प्रदान करती है।

चिकित्सक अपने हाथों को उपचार करने की इच्छा से मरीज के ऊपर रखता है, और ऊर्जा बहने लगती है। रेकी ऊर्जा बहुत चतुर है, क्योंकि उसे मालूम है कि उसे किस ओर बहना है और क्या करना है। वह एक बहुत चातुर्य शक्ति से प्रवाहित हो रही है। लेने वाले के अन्दर जाकर ऊर्जा अपने आप बहती है, क्योंकि उसके प्रवाह को एक उच्च बुद्धि द्वारा निर्देश दिया जा रहा है। रेकी हर चीज का इलाज कर सकती है, क्योंकि यह एक बुनियादी स्तर पर काम करती है। यह एक आसान, साधारण, प्राकृतिक, सुरक्षित और आध्यात्मिक ठीक होने या सुधार का तरीका है, जो हर कोई प्रयोग कर सकता है। यह हर बीमारी या वियोग में काम आती है। यह दूसरे इलाजों के साथ भी काम लायी जा सकती है, और दूसरे दुष्प्रभावों पर भी काबू रखती है। रेकी एक आध्यात्मिक चिकित्सा है। यह किसी धर्म से प्रभावित या किसी धर्म विशेष की नहीं है। यह कोई हठ धर्म या कट्टर पन नहीं है। रेकी सीखने के लिए आपको पहले विश्वास या शिक्षण की आवश्यकता नहीं है। सच में रेकी कोई भ्रम प्रभावित नहीं है। आपको अगर विश्वास नहीं भी हो तो भी रेकी काम करेगी। रेकी के संस्थापक डॉ. मिकाव के अनुसार रेकी एक सरल, शांति, नैतिक सद्भावनाओं पर आधारित व सैद्धांतिक है।

रेकी का सिद्धांत है:

"केवल आज के लिए चिंता न करें।
केवल आज के लिए क्रोधित न हों।
अपने माता-पिता व बड़ों का आदर करें।
अपनी आजीविका ईमानदारी से कमाएँ।
प्रत्येक वस्तु के प्रति आभार व्यक्त करें। "

मंजू मौर्य जी मुम्बई में पली-बढ़ी, अब सोमरसेट नगर (फ्रैन्कलिन टाउनशिप) में रहती हैं। बम्बई विश्वविद्यालय से इन्होंने रसायन शास्त्र में एम.एससी. की है। पिछले ३ सालों से आप फ्रैन्कलिन हिन्दी पाठशाला चलाती हैं। सह-संचालन के साथ-साथ आप प्रथमा-२ की अध्यापिका भी हैं। इन्हें चित्रकारी का भी शौक है। आप स्थानीय स्कूल बोर्ड में भी कार्यशील हैं, और इनके अथक प्रयासों से हिन्दी वैकल्पिक विषय की तरह फ्रैन्कलिन हाईस्कूल में अब पढ़ाई जाती है।

थाई रसेदार सब्जी

हमें कभी-कभी कुछ भारतीय भोजनों से कुछ अलग स्वादिष्ट खाने की इच्छा होती है। आइए आज देखते हैं कि स्वादिष्ट थाई सब्जी कैसे बनाई जाए, जो आप सादे चावल के साथ खा सकते हैं। यह स्वादिष्ट होने के साथ-साथ स्वास्थयकारी भी है क्योंकि इसमें हरी सब्जियों के साथ टोफू का प्रयोग होता है, जिसमें प्रचुर मात्रा में प्रोटीन है।

सामग्री:

१. एक पैकेट टोफू (जैविक [organic])
२. एक टीन नारियल का दूध
३. पाँच नींबू के पत्ते (जो चीनी दुकानों में मिलते हैं)
४. दो बड़े चम्मच जैतून(Olive) का तेल
५. ४-६ जवा (clove) लहसुन
६. अदरक का छोटा टुकड़ा (१/२ इन्च का)
७. आधा कप सूखा नारियल
८. आधा नींबू का रस
९. ३-४ बड़े चम्मच सोय सॉस (Soy Sauce)
१०. दो छोटे चम्मच भूरी चीनी
११. आधा कप ताजा हरा धनिया
१२. दो कप पानी
१३. २ छोटे चम्मच लालमिर्च की लेई (chili sauce)
१४. सब्जियाँ : एक हरी या लाल शिमला मिर्च, आधा कप चेरी टमाटर, डेढ कप बैंगन, एक कप बड़ा कुकुरमुत्ता (Mushroom) , २०० ग्राम शकरकंद, आधा प्याज, डेढ कप फूलगोभी, एक कप नर्म मटर (Snow peas)

विधि:

-सारी सब्जियों को धोकर काट लें, टोफू को भी छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें।

-अब एक कड़ाही में तेल डालकर उसमें लहसुन, अदरक और प्याज डालकर एक से दो मिनिट तक पकाएँ। फिर इसमें पानी, नींबू के पत्ते और लालमिर्च की लेई मिलाएँ और दो से तीन मिनिट तक उबलने दीजिए।

-अब एक अलग तवे पर सूखे नारियल को भून लीजिए और आधा नारियल अलग रखिए, और आधा कड़ाही में डालिए

-अब इसमें फूलगोभी और शकरकंद को डालकर दो से पाँच मिनिट पकाएँ (देर से पकाने से नर्म होगी)।

-पक जाने पर बाकि की सब्जियाँ डालकर ५ मिनिट तक धीमी आँच पर पकाएँ।

-फिर उसमें नारियल का दूध मिलायें। अब इसमें नमक, भूरी चीनी, सोय सॉस और टोफू मिलाकर चार-पाँच मिनिट तक पकाएँ। (ध्यान रहे चलाते समय टोफू टूटे ना)

- बाकि सूखे नारियल को सब्जी के ऊपर छिड़क दें।

लीजिए आपकी थाई रसेदार सब्जी तैयार है, इसे बासमती चावल के साथ परोसें।

डॉ.मृदुल कीर्ति जी ने कई धार्मिक ग्रन्थों का सरल गद्यों में रूपान्तर किया है। इनमें प्रमुख हैं श्रीमद भगवद्गीता, सामवेद, नौ उपनिषदों, ल्हातीत छाना, अष्टवक्र गीता इत्यादि। आपने मेरठ विश्वविद्यालय से राजनीति शास्त्र में पीएच.डी. की है।

ध्यान की ऊष्मा

ध्यान की ऊष्मा ही कर्म की ऊर्जा है।

'ध्यान' शब्द का अर्थ बहुधा पूजा पद्धति से लिया जाता है। वास्तव में ध्यान पूजा पद्धति नहीं वरन जीवन पद्धति है जो जीवन का सर्वांग निरूपण करती है। जिधर आपका ध्यान है, सच पूछो तो आप भी वहीं हो। जिस विषय वस्तु पर आपका ध्यान है, वही आपका अपना परिचय पत्र भी है। यह कर्म पद्धति भी है, हमें प्रति पल प्रत्येक काम ध्यान से ही करना होता है। ध्यान से उतरो वरना गिर जाओगे, ध्यान से सड़क पर चलो, ध्यान से कार चलाओ आदि।

'ध्यान' का शाब्दिक अर्थ चेतना को समग्र एकाग्रता से विषय वस्तु के बिंदु पर केन्द्रित करने की मानसिक प्रक्रिया है। इस समग्र एकाग्रता का विषय क्या हो, यह एक पृथक विषय है। सच कहो तो चोर भी चोरी पूरे 'ध्यान ' से ही तो करता है। सतही रूप से, सामान्य भाषा में इसे पूर्ण सावधानी से काम करने की विधि भी कह सकते हैं। इन सतहों को पार करने के बाद जब हम तहों में प्रवेश करते हैं, तो ध्यान हमें उस मौलिक बिंदु की ओर ले जाता है, जो हमारा गंतव्य है।

"निजात्मानं ब्रह्म रूपं "
हमें अपने मौलिक स्वरुप का ज्ञान ध्यान से ही होता है। यहाँ एकाग्र चित्त अपरिहार्य है। पर हम अपने को भौतिकता से इतना आवृत कर चुके हैं कि अपना मूल स्वरुप ही भूल गए। चित्त वृत्तियाँ बहिर्मुखी होकर बिखर चुकी हैं। हर ओर रोग, शोक, दुःख, पीड़ा, अवसाद, उदासी, तनाव और अशांति है। उन्हें संयमित और अंतर्मुखी करने का ज्ञान ही योग है। ध्यान की गहराई में उतर कर ' निजात्मानं ब्रह्म रूपं ' की क्षमता का ज्ञान सर्व प्रथम ऋषि पातंजलि ने दिया।

" अथ योगानुशासनम" का उद्घोष करते हुए योग शिक्षा की अनादिता सूचित की है। मूल समाधान

"योगश्चीचित्तवृतिनिरोधः " चित्त वृत्ति निरोध (सर्वथा रुक जाना) ही योग है।

योग पद्धति में ऋषि पातंजलि ने अष्टांग योग से परिचित कराया।

अष्टांग योग

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार , धारणा, ध्यान और समाधि।

और धारणा, ध्यान, समाधि ---त्रयं एकत्र संयम

महर्षि पातंजलि कृत 'पातंजल योग दर्शन' आत्म-भू-योग दर्शन है। यह अनन्य, अनूठा और अनुपमेय योग दर्शन, जो अपने लिए आप ही प्रमाण है। इस अपूर्व और अद्भुत ग्रन्थ के समान अन्य कोई यौगिक ग्रन्थ है ही नहीं। अतः'पातंजल योग दर्शन' प्रामाणिक अद्वितीय योग-दर्शन ग्रन्थ है। यद्यपि गीता में (२-३९ , ५-२) योग के सन्दर्भ में सांख्य दर्शन की पुष्टि है, जिसके प्रणेता ऋषि कपिल थे। सांख्य-दर्शन का मूल वैदिक दर्शन है, और योग दर्शन सांख्य पर आधारित है।

कल्पों पूर्व अभूतपूर्व प्रज्ञा दृष्टि से ऋषि पातंजलि द्वारा देखे गए शाश्वत सत्य कितने सार्थक और सटीक हैं। कदाचित् आज से अधिक वे कभी उपयोगी ना रहे होंगे।

समादिपाद के ३३ वें मन्त्र में आज के युग के लिए इसकी उपादेयता देखने और आत्म सात करने योग्य है।

मैत्री करुणा मुदितो पेक्षानाम सुखदुःख पुण्यापुण्य विषयानाम भावनात श्रीचित्तप्रसादनम । ३३ । समाधिपाद

राग,द्वेष, घृणा,ईर्ष्या और क्रोध आदि विकारों का

ध्यान की ऊष्मा

नाश होकर चित्त शुद्ध ----निर्मल हो जाता है। आज यही वैचारिक शुद्धता ही तो चाहिए।

अभ्यासवैराग्याभ्याम तन्निरोधः । १२ समाधिपाद
चित्त की विकारी वृतियों का सर्वथा प्रवाह रोकने के लिए अभ्यास और वैराग्य यह दो उपाय हैं। आज चित्त वृत्तियों का प्रवाह परम्परागत संस्कारों के बल से सांसारिक भोगों की ओर चल रहा है। उसे रोकने का उपाय वैराग्य है, और उसे कल्याण मार्ग पर ले जाने का उपाय अभ्यास है।

गीता में भी कहा है--
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येंन च गृह्यते ६-३५
अभ्यास और वैराग्य से मन वश में होता है।

तत्र ध्यानजमनाशयम।---६ कैवल्यपाद
उनमें से जो ध्यान जनित चित्त होता है, वह कर्म संस्कारों से रहित होता है, अतः वही कैवल्य का हेतु हो सकता है।

उस समय योगी का चित्त विवेक में रमण करता हुआ कैवल्य के अभिमुख हो जाता है, अर्थात् अपने कारण में विलीन होना आरम्भ कर देता है; क्योंकि चित्त का अपने कारण में विलीन होना और दृष्टा स्वरुप में स्थित होना ही 'ध्यान' की पराकाष्ठा , लक्ष्य और उत्कर्ष है। यही कैवल्य है।

BALACHANDAR JAYARAMAN

CERTIFIED PUBLIC ACCOUNTANT
BUSINESS CONSULTANT
979 Raritan Road, Suite # 3, P.O.Box 755
Clark, NJ 07066

Email: balajayaraman@msn.com
732-539-0924 (tel/cell)
732-943-7605 (tel)
732-909-7122 (fax)

Member: AICPA
Member: NJSCPA
Licensed as CPA in NJ & IL

>Free Initial Consultation
>Low Cost / High Quality Service
>Prompt & Individual Attention by a CPA
>On-Time Performance
>High Customer Satisfaction

Tax Planning and Preparation
Accounting and Auditing Services
New Business Setup
Financial Statements: Compilations, Reviews & Audits
Sales Tax and Payroll Tax Returns
Financial and Compliance Services for Government Programs

For Corporations, Partnerships, Individuals, LLC/ LLP & Non-Profits
CALL BALA JAYARAMAN AT 732-539-0924

नवम् हिन्दी महोत्सव की सफलता की हार्दिक शुभकामनाएँ

Naveen Mehrotra, MD, MPh, FAAP

Board certified in Pediatrics

www.drmehrotra.com

1315 Stelton Road
Piscataway, NJ 08854
(732)819-8800

652 Amboy Avenue
Edison, NJ 08837
(732)738-9585

www.sknfoundation.org

To improve the well being of the community through education

www.sanatanvidyalay.org

A Sunday school program to learn the Sanatan Dharm

One Stop Shop for All Your Needs of Natural Stones

ELEGANT

Granite & Marble Inc.

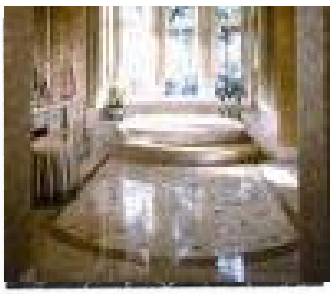

GRANITE
MARBLE
LIMESTONE
SLATE
ONYX

Custom Counter Tops ◆ Vanity Tops ◆ Tiles ◆ Slabs

IN HOUSE FABRICATION & INSTALLATION & CUSTOM SIZES

Residential & Commercial

Shishir K. Agrawal B. Tech (Min), FCC

832 Ridgewood Avenue Bldg. # 3
North Brunswick, NJ 08902

Tel.: 732.247.2488
Fax: 732.247.2499

हिन्दी पाठशालाओं की सूची

पाठशाला	सम्पर्क
वूरहीज हिन्दी पाठशाला, साउथ जर्सी	रचिता सिंह, 856-582-5035
प्लेंसबोरो/वेस्टविंडसर हिन्दी पाठशाला,सेंट्रल जर्सी	संजय भयाना, 732-447-3935 रॉबिन दाश, 609-275-7121 गुलशन मिर्ग, 917-597-5443
एडीसन हिन्दी पाठशाला, नार्थ-सेंट्रल जर्सी	राज/सुमन मित्तल, 732-382-8635 मानक काबरा, 732-662-1179 गोपाल चतुर्वेदी, 908-720-7596
लावरेंसविल हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	रत्ना पाराशर, 609-481-7003 मीना राठी, 609-273-8737
फ्रैन्कलिन (सोमरसेट) हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	मंजू मौर्य, 732-422-3986
ईस्ट ब्रुंसविक हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	मैनो मुर्मो, 732-763-2337 सविता नायक, 732-543-6364
वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	अर्चना कुमार, 732-623-9918
साउथ ब्रुंसविक हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	उमेश महाजन, 732-274-2733
मोनरो टाउनशिप हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	सुनीता गुलाटी, 732-762-2692
पिस्कैटवे हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	दीपक लाल, 732-763-4252
ब्रिजवाटर हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	मंजू भाटिया, 908-218-9724 कृष्णा महाकाली, 908-552-8664
जर्सी सिटी हिन्दी पाठशाला, नार्थ जर्सी	मुरलीधर तुल्सियान, 201-892-7898
मॉन्टगोमरी हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	शिव/सुधा अग्रवाल, 908-359-8352
होल्मडेल हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	सुषमा कुमार, 732-264-3304
ट्रम्बल हिन्दी पाठशाला, क्लेक्टिकट	संजीव वाधवा, 203-645-4338
दुर्गा मन्दिर हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	पायल कपूर, 609-716-1999
इजलिन हिन्दी पाठशाला, सेंट्रल जर्सी	वन्दना गुलियानी, 732-777-2027
ब्रुकलिन हिन्दू मंदिर, न्यू यार्क	सुमन गुप्ता, 718-539-5053
डेलावेयर मन्दिर हिन्दी पाठशाला	जयश्री माथुर, 732-690-6463
जैक्सनविल हिन्दी पाठशाला, फ्लोरिडा	ज्योति चतुर्वेदी, 904-363-3609
ओरलेंडो हिन्दी पाठशाला, फ्लोरिडा	गौरी अग्रवाल, 407-352-2939
केनेसाव हिन्दी पाठशाला, जार्जिया	राधा अग्रवाल, 770-420-4124
न्यू हेवन हिन्दी पाठशाला, कनेक्टिकट	निखिल अग्रवाल, 203-404-0247
रोचेस्टर हिन्दी पाठशाला, मिनेसोटा	सविता कटारिया, 507-289-2580
विस्कोंसिन हिन्दी पाठशाला, ग्रीन बे	निधि गुप्ता, 920-662-1828
इरवाइन हिन्दी पाठशाला, कैलिफोरनिया	सरला झावेरी, 949-654-9450
टोरोन्टो हिन्दी पाठशाला, कैनेडा	राजीव अग्रवाल, 514-296-6879

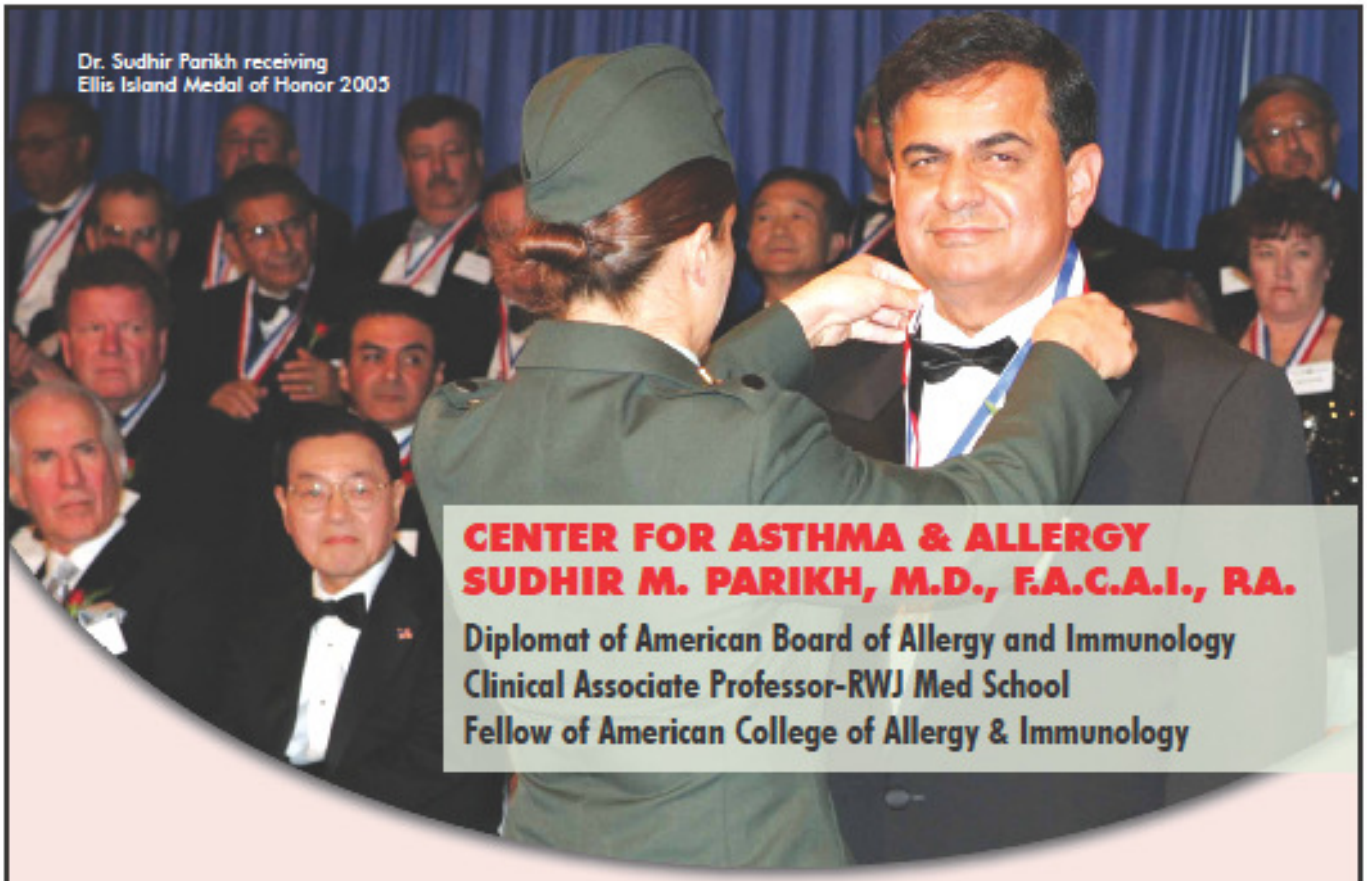

Dr. Sudhir Parikh receiving
Ellis Island Medal of Honor 2005

CENTER FOR ASTHMA & ALLERGY
SUDHIR M. PARIKH, M.D., F.A.C.A.I., RA.

Diplomat of American Board of Allergy and Immunology
Clinical Associate Professor-RWJ Med School
Fellow of American College of Allergy & Immunology

Richard J. Bukosky, M.D.
Salvatore Dangelo, M.D.
Emerald Thaw, M.D.
Thomas Golbert, M.D.
Savithri B. Bonala, M.D.

Deborah V. Fishman, M.D.
Frederic Schulaner, M.D.
Harvey Weisslitz, M.D.
Joseph D'Amore, M.D.
Eun Sheen, M.D.

Sylvia Lee, M.D.
Smruti Parikh, M.D.
Guli Khan, M.D.
Jun Yang, M.D.
Tevia Lipitz, M.D.

Punita Ponda, M.D.
Aliona Rudzinski, M.D.
Grant Greeley, M.D.
Lakshmi M. Puvvada, M.D.

24 North Third Ave.
Highland Park, NJ 08904
Tel 732.545.0094
Fax: 732.545.4087

706 Alexander Rd.
Princeton, NJ 08540
Tel: 609.243.0100
Fax: 609.243.0035

222 Schanck Rd. Suite 203
Freehold, NJ 07728
Tel: 732.431.8266
Fax: 732.294.9794

300 Hudson Street
Hoboken, NJ 07030
Tel: 201.792.5900
Fax: 201.792.5320

1777 Hamburg Tpk.
Wayne, NJ 07470
Tel: 973.835.0131
Fax: 973.835.6399

200 Perrine Rd. Suite 207
Old Bridge, NJ 08857
Tel: 732.566.4494
Fax: 732.441.0490

611-79th Street
No. Bergen, NJ 07047
Tel: 201.854.8119
Fax: 201.854.4875

2130 Millburn Ave.
Maplewood, NJ 07040
Tel: 973.763.5787
Fax: 973.763.8568

174 Union Street
Ridgewood, NJ 07450
Tel: 201.445.4557
Fax: 201.445.2365

279 3rd Ave. Ste 102
Long Branch, NJ 07740
Tel: 732.542.8149
Fax: 732.229.6366

2566 Nottingham Way
Trenton, NJ 08619
Tel: 609.587.3041
Fax: 609.587.9347

984 North Broadway #307
Yonkers, NY 10701
Tel: 914.476.8877
Fax: 914.476.4754

1804 Oak Tree Rd.
Edison, NJ 08816
Tel: 732.205.0343
Fax: 732.205.0348

346 Westfield Ave.
Westfield, NJ 07090
Tel: 908.232.1565

926 North Wood Ave.
Linden, NJ 07036
908.925.3318
908.925.8646

1018 Broad Street
Bloomfield, NJ 07003
973.893.0093
973.893.0090

One Sears Drive
Paramus, NJ 07652
201.338.5873
732.548.2272

One West Ridgewood Ave.
2nd Floor, Suite 207
Paramus, NJ 07134
201.445.7772
201.445.7779

Two Lincoln Highway
Edison, NJ 08820
800.535.5227

1198 Clifton Avenue
Clifton, NJ 07013
973.249.3944

116 Millburn Avenue
Suite 215
Millburn, NJ 07134
973.912.0010
973.912.7238

68 Nassau Road
Huntington, NY 11743
Tel: 631.423.5599
Fax: 631.423.9137

2004 Grand Avenue
Baldwin, NY 11510
Tel: 516.223.7636
Fax: 516.223.0583

110-45 Queens Blvd.
Forest Hills, NY 11375
Tel: 718.544.2066
Fax: 718.544.6664

319 Route 111
Hauppauge, NY 11788
Tel: 631.724.3335
Fax: 631.724.9751

Dr. Sudhir Parikh receiving
Pravasi Bharatiya Sanman Award 2006

Ask about our **FLY AND BUY** program

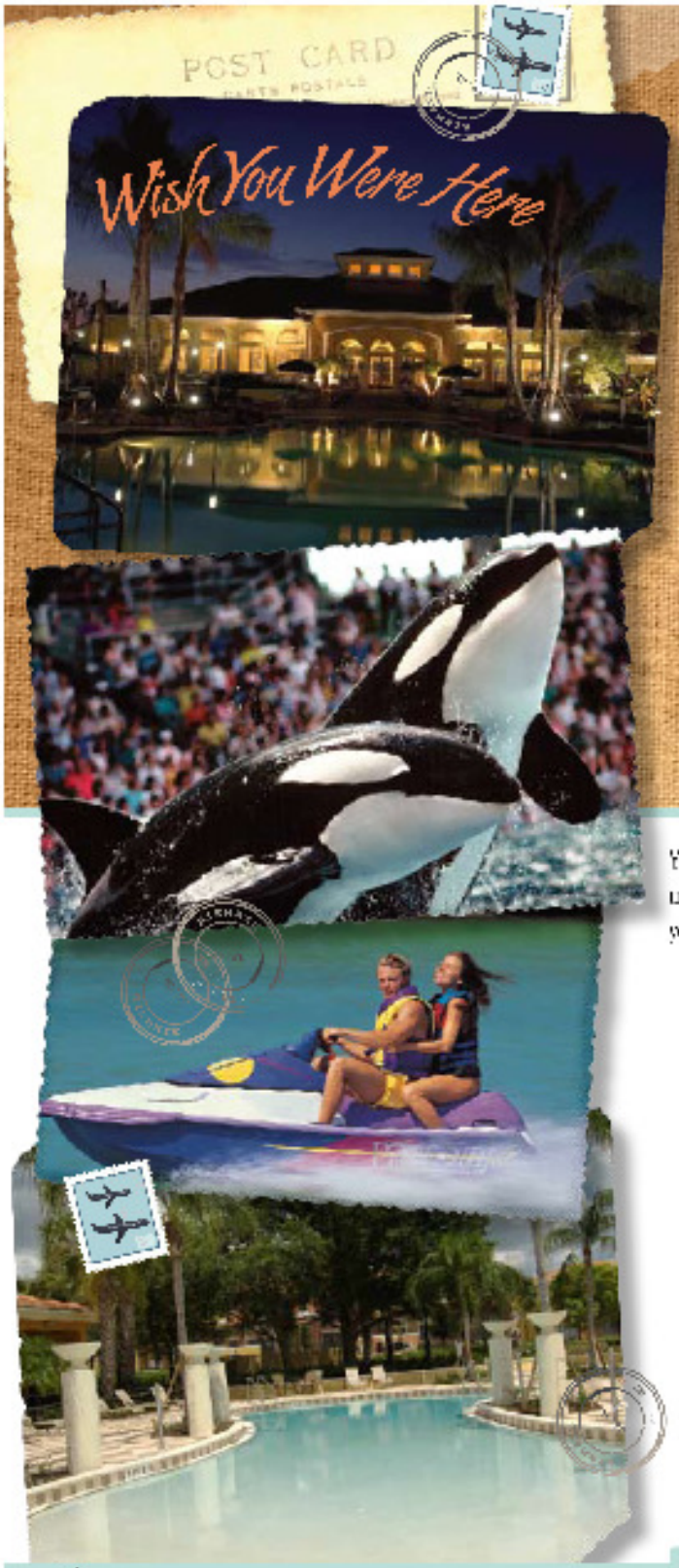

Turn the vacation of a lifetime into a lifetime of vacations

You're sold on all there is to do in Central Florida. Now is the perfect time to make it your home away from home! Our luxurious homes come with a resort in your backyard and famous neighbors at your doorstep.

BellaVida Resort
Single-family homes & townhomes
407.397.0211
Townhomes from the $180s
Single Family from the $290s

Encantada Resort
Townhomes
407.396.8880
From the $180s

Watersong Resort
Single-family homes
863.420.2156
From the mid $200s

- Floorplans range from 3 - 5 bedrooms
- Resort-style pools and spacious clubhouses at each community
- 3 spectacular communities near all your favorite Orlando attractions
- Private owner lock-up storage
- Easy access from airport and major roadways
- Zoned for short-term rental

Park Square HOMES

Check out our NEWEST community,
VERANDA PALMS
Single family homes from the low $340s

www.ParkSquareHomes.com

Orlando Vacation Home Rentals!

Make yourself at home in Orlando The next time you visit Central Florida, make plans to stay in a spacious single-family home or townhome. You'll enjoy all the space and privacy not found in a hotel room, with private or community pools, clubhouses and other resort-style amenities! Just minutes from the Walt Disney World® Resort area, Sea World®, Universal Studios® and all the attractions.

800-520-8070
www.NowRentMe.com
e management
your investment means everything to us!